



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 166]

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 23, 2012/श्रावण 1, 1934

No. 166]

NEW DELHI, MONDAY, JULY 23, 2012/SHRAVANA 1, 1934

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 जुलाई, 2012

प्रारंभिक जांच परिणाम

विषय : चीन जन.गण., इंडोनेशिया, मलेशिया और श्रीलंका के मूल के या वहां से निर्यातित "इन्सुलेशन बोर्डों लेमिनेटेड फाइबर बोर्डों और ऐसे बोर्डों को छोड़कर जो रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा बांडेड नहीं हैं, 6 मिमि. से कम की मोटाई के रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों से बांडेड लकड़ी या लिंगनस फाइबर बोर्डों" के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच ।

सं. 14/29/2010-डीजीएडी.--समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) का ध्यान में रखते हुए;

2. पाटनरोधी नियमानुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) को चीन जन.गण., इंडोनेशिया, मलेशिया और श्रीलंका जिन्हें आगे संबद्ध देश भी कहा गया है, के मूल के या वहां से निर्यातित "इन्सुलेशन बोर्डों, लेमिनेटेड फाइबर बोर्डों और ऐसे बोर्डों को छोड़कर जो रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा बांडेड नहीं हैं, 6 मिमि. से कम की मोटाई के रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों से बांडेड लकड़ी या लिंगनस फाइबर बोर्डों" (जिसे आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए अधिनियम एवं पाटनरोधी नियमावली के अनुसार मै. बालाजी एक्सल बिल्डवेल् (जिसे आगे आवेदक कहा गया है) से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ और पाटनरोधी जांच शुरू करने तथा पाटनरोधी उपाय लागू करने का अनुरोध किया गया ।

3. आवेदन की प्रारंभिक जांच से कुछेक कमियों का पता चला जिसे आवेदक ने बाद में सुधार दिया था । अतः आवेदन समुचित ढंग से प्रलेखित माना गया । जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करने का निर्णय लिया ।

4. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्यवाई शुरू करने से पूर्व अन्य बातों के साथ-साथ पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई परिणामी क्षति के आरोपों वाले आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत स्थित उच्चायोगों/संबद्ध देशों के दूतावासों को सूचित किया ।

5. तदनुसार प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अनुसार आरोपित पाटन और घरेलू उद्योग को हुई परिणामी "क्षति" की जांच शुरू की ताकि आरोपित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी उपाय की उस राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि वसूल किया जाएगा तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी ।

क. प्रक्रिया

6. निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :-

- i. प्राधिकारी ने आरोपित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण करने और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश करने जिसे यदि लागू किया जाएगा तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी हेतु पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (1) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए 11 नवंबर, 2011 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया ।
- ii. प्राधिकारी ने 11 नवंबर, 2011 की जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रति भारत स्थित संबद्ध देशों के उच्चायोगों/दूतावासों, आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पत्रों के अनुसार संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों, ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं और घरेलू उद्योग को भेजी और उनसे जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के 40 दिन के भीतर लिखित में अपने विचार से अवगत कराने का अनुरोध किया ।
- iii. प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6(3) के अनुसार आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों और भारत स्थित संबद्ध देशों के उच्चायोगों/दूतावासों को उपलब्ध कराई ।
- iv. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार भारत स्थित संबद्ध देशों के उच्चायोगों/दूतावासों को जांच की शुरूआत के बारे में इस अनुरोध के साथ सूचित किया गया था कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें । निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की प्रति ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों के नाम और पत्रों के साथ उनके पास भी भेजी गई थी ।
- v. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों से संगत सूचना मांगने के लिए उनके पास प्रश्नावलियां भेजी :

क.सं.	उत्पादक/निर्यातक का नाम
1	मै. ट्रोमरिच इंटरनेशनल ट्रेडिंग लिमिटेड, पुडोंगए शंघाई, चीन जन. गण.
2	मै. नॉनजिंग ई टी ए आई ट्रेडिंग कं. लि., जिनशाजिंग नॉनजिंग, चीन जन. गण.
3	मै. लिनयी हॉगफू टिम्बर कं. लि., यीटांग टाउन; लिनयी शांगडोंग चीन जन.गण
4	शोऊगुआंग गुइहे इकोनामिक एंड ट्रेड कं. लि., शांगडोंग, चीन जन. गण.
5	मै. लिनयी बेइदेली इंटरनेशनल ट्रेड कं. लि., नॉन लोऊ जोन, यिटांग टाऊन, लॉनशान डिस्ट्रिक्ट, लिनयी सिटी शानडोंग चीन जन. गण.
6	मै. झानजियांग किंगस्टार बिल्डिंग मेटिरियल कं. लि., झेजियांग, चीन जन. गण.
7	मै. वेनझोऊ टिम्बर ग्रुप कं. लि., झेजियांग, चीन जन. गण.
8	मै. डाइकेन मिरी एसडीएन, बीएचडी, मिरी सारावॉक, मलेशिया
9	मै. मेरबॉक एमडीएफ लंका प्रा. लि., होरना, श्रीलंका
10	मै. रोबिन रिसोर्सेज (मलेशिया) एसडीएन बीएचडी, पहांग, मलेशिया
11	मै. एवरग्रीन फाइबर बरहाड (जेबी) एसडीएन,, बीएचडी, जोहर, मलेशिया
12	मै0 प्री टी अंडालन कारया बरझाना, ककरातो राया, इंडोनेशिया
13	मै. ला मोबिला पन्नेली पी टी, रूकान एन्क्लेव बुकीट गोल्फ, पन्टाई इंडाह कपुक इंडोनेशिया

vi. उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में निर्यातकों/उत्पादकों/एसोसिएशन आदि सहित निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने उत्तर दिया है ।

क.सं.	उत्पादक/निर्यातक का नाम
1	मै. मेगना फोरमोस्ट एसडीएन, बीएचडी, मलेशिया
2	मै. मसोनाइट कम्पोनेंट्स ,आयरलैंड
3	मै. मरबोस एमडीएफ लंका (प्राइवेट) लि., श्रीलंका
4	मै. सेगामेट पेनल बोर्ड्स एसडीएन, बीएचडी, मलेशिया
5	मै. पी.टी. मसारी डवाइसेपकट इंडोनेशिया
6	मै. पी.टी. सुमाटेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड, इंडोनेशिया
7	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बेरहाड (ईएफबी), मलेशिया
8	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एसडीएन बीएचडी, मलेशिया
9	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (नैनी), एस डी एन, बीएचडी (ईएफएन), मलेशिया
10	मै. डाइकेन मिरी एसडीएन. बीएचडी, मिरी सारावक, मलेशिया
11	मै. पी. टी. हिजाऊ लेसटेरी राया फाइबर बोर्ड, इंडोनेशिया

12.	मिनिस्ट्र ऑफ इंटरनेशनल ट्रेड एंड इंडस्ट्री, मलेशिया
13.	एम्बेसी ऑफ रिपब्लिक ऑफ इंडोनेशिया, नई दिल्ली
14.	डायरेक्टर जनरल, केजरा, सामा इंडस्ट्री इंटरनेशनल, जकार्ता, इंडोनेशिया
15.	मै. डॉगवहा फाइबर बोर्ड एस डीएन. बी एच डी, मलेशिया

vii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगने के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं/एसोसिएशन को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं ।

क. सं.	कंपनी का नाम
1	मै. सी. एल. गुप्ता एक्सपोर्ट्स लि., विपेज जिवाल, जे. पी. नगर, उ. प्र.
2	मै. वेनुगोपाल स्टेट इंडस्ट्रीज, मार्कपुर, आंध्र प्रदेश
3	मै. मुरादाबाद हैंडीक्राफ्ट्स एक्सपोर्ट्स एसोसिएशन, मुरादाबाद, उ. प्र.
4	मै. थमारापल्ली ब्रदर्स, एम जी रोड, एर्णाकुलम, कोचीन
5	मै. स्पेशलुड फर्नीचर्स प्रा. लि. टी-48, एम आई डी सी रोड, नागपुर-440 016
6	मै. फेरोक बोर्डर्स लि., ककराड, फेरोक कॉलेज, वाया-मालापुरम, केरल
7	मै. आर.जे. मेटल्स, एक्स एल/4039 फाबा कॉम्प्लैक्स, जेवास स्ट्रीट, एर्णाकुलम, केरल
8	मै. कलिंगा इंपोर्ट्स एंड एक्सपोर्ट्स प्रा. लि. 18/777 कल्लाई रोड, कालीकट, केरल
9	मै. विक्टरी प्लाइवुड डिस्ट्रीब्यूटर्स, स्टेडियम कॉम्प्लैक्स, कन्नूर, केरल
10	मै. मैथ्यूस एक्सपोर्ट्स एंड इम्पोर्ट्स प्रा. लि., कोलोर, कोचीन, केरल
11	मै. प्लाई प्वाइंट, कोडमपुझा रोड, पेट्टा फेरोंक, कोझीकोड, केरल
12	मै. लेबल सेल्स कॉर्पो., इन्द्रधनुष अपार्टमेंट, शॉप नं. 7,8 तथा 9, टी. डी. रोड, कोचीन, केरल
13	मै. श्रीवारी ट्रेडर्स, ओडनथुआई मेटुपल्लयम, तमिलनाडु
14	मै. कृष्णा प्लाइवुड, कामराज रोड, करूर, तमिलनाडु
15	मै. थमारापल्ली ब्रदर्स, एर्णाकुलम, कोच्ची, केरल
16	मै. जेक्सन्स वीनर्स एंड पेनल्स प्रा. लि., एर्णाकुलम, कोच्ची, केरल
17	मै. कुट्टी फ्ल्सडोर्स एंड फर्नीचर्स कं. प्रा. लि., कोयम्बेडूर, चेन्नई
18	एसोसिएशन ऑफ फर्नीचर मैनुफैक्चरर्स ऑफ इंडिया (ए एफ एम आई), मुंबई

viii. उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं, एसोसिएशन ने उत्तर दिया है :

क्र. सं.	आयातक का नाम
1.	मै. वेनुगोपाला स्टेट इंडस्ट्रीज, मरकापुर, आंध्र प्रदेश
2.	इंडिया मोल्डेड पेनल शटर्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन
3.	मेरादाबाद हैंडीक्राफ्ट्स एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन, मोरादाबाद उ.प्र.
4.	मै. सी एल गुप्ता एक्सपोर्टर्स लि., उत्तर प्रदेश (उ.प्र.), भारत
5.	इंडियन मोल्डेड पेनल शटर्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन
6.	ऑल इंडिया फाइबरबोर्ड मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, हरियाणा

ix. बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार (एम ई टी) संबंधी प्रश्नावली समस्त ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों तथा नई दिल्ली स्थित चीन जन.गण. के दूतावास को भेजी गई थी। जांच की शुरुआत के प्रयोजनार्थ चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य पर चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु की परिकल्पित उत्पाद न लागत के आधार पर विचार किया गया था क्योंकि आवेदक ने यह तर्क दिया था कि बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के लिए सूचना उनके पास उपलब्ध नहीं है। प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों को यह सूचित किया कि उसका उद्देश्य पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 को ध्यान में रखते हुए आगे के दावे की जांच करने का है। अतः चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों से अनुरोध किया गया कि वे पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध के पैरा 8 के उप पैरा (3) में किए गए उल्लेखानुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सकें कि क्या चीन जन.गण. के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किया जा सकता है।

x. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।

xi. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से अनुरोध किया गया था कि वह जांच अवधि सहित पिछले 3 वर्षों के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करें।

xii. आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की ईष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने तथा बेचने की लागत निकाली गई थी ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।

xiii. यह जांच 1 अप्रैल, 2010 से 30 जून, 2011 की अवधि (जांच अवधि) के लिए की गई थी। तथापि, क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 2007-मार्च, 2008, अप्रैल, 2008-मार्च, 2009, अप्रैल, 2009-मार्च, 2010 की अवधि और जांच अवधि अर्थात् 1 अप्रैल, 2010 से 30 जून, 2011 तक की अवधि शामिल थी।

xiv. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के बारे में की गई थी। संतुष्ट होने के उपरांत प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां संभव हुआ है गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को यह निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं।

xv. जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने जांच की कार्यवाही के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है वहां प्राधिकारी ने "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर ये जांच परिणाम दर्ज किए हैं।

xvi. *** यह चिन्ह इस अधिसूचना में किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

ख. विविध मुद्दे :

7. अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

मै. वेणु गोपाल स्लेट इंडस्ट्रीज के अनुरोध

- जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए आवेदक द्वारा दायर आवेदन अत्यंत त्रुटिपूर्ण, अपर्याप्त है और उसने अत्यधिक गोपनीयता भी बरती है।

मै. सेगामेट पैनल बोर्ड्स, एस डी एन. बी एच डी और मै. मर्बोक एम डी एफ जंका (प्रा.) लि., श्रीलंका की ओर से किए गए अनुरोध

- कि याचिका अगोपनीय रूपांतरण नितांत त्रुटिपूर्ण तथा अपर्याप्त है जिससे अन्य पक्षकार अपनी टिप्पणियां नहीं दे सकते।
- कि जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के अनुसार जांच अवधि 1 अप्रैल, 2010 से जून, 2011 तक की है परंतु घरेलू उद्योग को प्रदत्त आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रति में ऐसा प्रतीत होता है कि जांच अवधि अप्रैल, 2010-मार्च, 2011 ली गई है।

मै. मैगना फॉरमोस्ट एस डी एन और मै. मैसोनाइट कम्पोनेंट्स, आयरलैंड की ओर से किए गए अनुरोध

- जांच की शुरुआत हेतु अपर्याप्त साक्ष्य के बावजूद प्राधिकारी ने ऐसा कर अनुच्छेद 5.3 का उल्लंघन किया है। प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा दायर जांच अवधि और क्षति जांच अवधि को स्वतः अपने विवेक से बदल दिया है।
- प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा मूल रूप में प्रस्तावित जांच अवधि अर्थात् अप्रैल, 2010-मार्च, 2011 (12 माह) में तीन माह की वृद्धि की है। इसके अलावा, प्राधिकारी ने इस तथ्य के बावजूद कि एम डी एफ हेतु कोई घरेलू उद्योग कम से कम फरवरी, 2010 तक अस्तित्व में नहीं था, क्षति अवधि वर्ष 2007 और 2010 के बीच निर्धारित कर दी। जैसा कि याचिका में उल्लेख किया गया है आवेदक ने फरवरी, 2010 तक एम डी एफ का वाणिज्यिक उत्पादन शुरू नहीं किया जबकि समर्थक ने काफी देर से दिसंबर, 2010 में उत्पादन शुरू किया। उक्त अवधियों में संशोधन करने के बारे में प्राधिकारी ने कोई तर्क नहीं दिया है। तथापि, खास बात यह है कि इस जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए परिवर्तित अवधियों के कारण आवेदक द्वारा प्रदत्त साक्ष्य अत्यंत अपर्याप्त बन जाता है।

एवर ग्रीन फाइबर बरहाड (ई एफ बी), मलेशिया, एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन. बी एच डी (ई जे बी), मलेशिया तथा एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलाई) एस डी एन. बी एच डी (ई एफ एन) मलेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

- कि याचिका का अगोपनीय रूपांतरण त्रुटिपूर्ण है क्योंकि इसमें समूची जांच अवधि अर्थात् अप्रैल, 10 से जून, 11 (15 माह) की सूचना निहित नहीं है। इसमें जांच अवधि के केवल एक भाग अर्थात् अप्रैल, 10-मार्च, 11 (12 माह) की सूचना निहित है। इसके अलावा, आवेदक ने याचिका के साथ आई बी आई एस से प्राप्त आयात के आनुमानिक आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए हैं और न ही यह बताया है कि इन्हें प्राधिकारी को उपलब्ध करा दिया गया है।
- कि घरेलू उद्योग ने अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है और आवेदक ने याचिका के अगोपनीय रूपांतरण के साथ दावा की गई गोपनीयता का कोई विवरण संलग्न नहीं किया गया है।

मै. पी टी मसारी ड्वाइज पाकट फाइबर, इंडोनेशिया और मै. पी टी सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड (एस पी एफ) इंडोनेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

- कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर और हमें प्रदत्त आवेदन का अगोपनीय रूपांतरण निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा हाल के सभी मामलों में अपनाए जा रहे नए दिशा निर्देशों के अनुसार नहीं है। आवेदन के साथ ऐसी कोई सूची नहीं है जिससे हम यह समझ सकें कि अगोपनीय रूपांतरण में कौन से दस्तावेज दायर

किए गए हैं, पृष्ठ संख्या कमबद्ध नहीं है, गोपनीयता के कारणों को तालिका के रूप में दर्शाने का कोई कारण नहीं है आदि ।

- कि विधिसम्मत और पूर्णतः प्रलेखित आवेदन बनाने के लिए घरेलू उद्योग ने अपेक्षानुसार आवेदन प्रपत्र नहीं दिया गया है । अत्यधिक गोपनीय की आड़ में प्रपत्र में यथा निर्धारित आवश्यक साक्ष्य भी अपेक्षानुसार प्रदान नहीं किया गया है । आवेदन प्रपत्र में प्रश्नों को अपनी जरूरतों के अनुकूल बदल दिया गया है । स्वयं के आयातों और संबंध के बारे में आवेदक या समर्थक द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण जांच अवधि के लिए नहीं है ।

- गोपनीयता : घरेलू उद्योग द्वारा दायर और हमें प्रदत्त आवेदन का अगोपनीय रूपांतरण निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा हाल के सभी मामलों में अपनाए जा रहे नए दिशा निर्देशों के अनुसार नहीं है । आवेदन के साथ ऐसी कोई सूची नहीं है । उचित कारणों के बिना निम्नलिखित सूचना गोपनीय रखी गई है :

क. कि आवेदक की वेबसाइट पर संपूर्ण कार्यात्मक उत्पादन स्थिति का चार्ट उपलब्ध है । अतः इस बारे में गोपनीयता का दावा करने का कोई कारण नहीं है ।

ख. गणना हेतु आयात आंकड़ों से अपवर्जित उत्पादों को अलग रखने के लिए अपनायी गई कार्य प्रणाली उचित नहीं है क्योंकि चौड़ाई और मोटाई के आधार पर संबद्ध वस्तु की सभी विशेषताएं शामिल नहीं होती हैं ।

ग. क्या बालाजी द्वारा किए गए आयातों को आयात आंकड़ों में शामिल किया गया है या नहीं और उनके द्वारा वास्तव में आयात की गई मात्रा कितनी है ।

घ. अगोपनीय सारांश और परियोजना रिपोर्ट की सूचीबद्ध संख्या जिस पर आवेदक ने भरोसा किया है ।

ड. सामान्य मूल्य के परिकलन का आधार यह भी स्पष्ट नहीं है कि क्या उन्होंने विद्युत दर तथा अन्य सूचना का उपयोग किया है जो संबद्ध देशों के सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध है अथवा उन्होंने अपनी खुद की दरों का इस्तेमाल किया है । इसके अलावा, अगोपनीय रूपांतरण के साथ संलग्न विद्युत संबंधी सूचना किसी काम की नहीं है क्योंकि यह जांच अवधि के लिए नहीं है और अलग-अलग उपयोग के लिए अलग-अलग दरें हैं ।

च. आवेदक ने परिकलित सामान्य मूल्य के संबंध में और निर्यात कीमत की गणना हेतु आवेदन में प्रदत्त सूचना का कोई स्रोत उपलब्ध नहीं कराया है । कुछ स्थानों पर स्रोत के बारे में दी गई सूचना पुरानी है जो प्रचलन में नहीं है । क्षति जांच अवधि के लिए लेखा परीक्षित तुलन पत्र उपलब्ध नहीं कराए गए हैं ।

छ. गोपनीयता के निर्यात या आयात विवरण के संबंध में आवेदक से उचित विवरण नहीं मिला है ।

● जांच एवं क्षति की त्रुटिपूर्ण अवधि : प्राधिकारी द्वारा निर्धारित जांच अवधि और क्षति जांच अवधि त्रुटिपूर्ण एवं अनुचित है । वर्तमान मामले में जांच अवधि अप्रैल, 2010—जून, 2011 तक 15 माह की है। आवेदक ने बाजार में नया प्रवेश किया है और उसने अप्रैल, 2010 में केवल दो माह पूरे किए हैं । अतः पाटन एवं क्षति का निर्धारण दोषपूर्ण होने की संभावना है क्योंकि आवेदन के लिए परिवर्ती लागत तथा नियत लागत काफी अधिक हो जाएगी और कोई उचित तथा व्यापक विश्लेषण नहीं किया जा सकता । प्राधिकारी ने वित्त वर्ष 2010—11 पर विचार नहीं किया है जो विश्लेषण कर सकने योग्य एक मात्र वित्त वर्ष था । अनुरोध है कि यद्यपि हाल में समाप्त वित्त वर्ष को जांच अवधि में शामिल किया गया है तथापि उसके आंकड़ों को विशेष रूप से एक क्षति अवधि के रूप में लिए जाने चाहिए थे।

● पर्याप्तता एवं यथातथ्यता: यह जांच पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 का अनुपालन किए बिना शुरू की गई है जो विशेष रूप से जांच की शुरुआत से संबंधित है । वर्तमान जांच की शुरुआत का निर्धारण करने से पूर्व अनिवार्य मापदंडों की जांच नहीं की गई थी । निम्नलिखित के अभाव में हम आवेदन में प्रदत्त सूचना की पर्याप्तता तथा यथातथ्यता के बारे में अपनी टिप्पणियां देने में असमर्थ हैं :

क. आवेदन की तारीख और जांच की शुरुआत से पूर्व आवेदकों के साथ हुआ पत्र व्यवहार ।

ख. भारत में संबंधित मंत्रालय या अन्य उत्पादकों को भेजे गए पत्र ।

ग. आवेदक और समर्थकर्ता उत्पादक की पिछले तीन वर्षों की वार्षिक रिपोर्टें ।

घ. गणनाओं का अगोपनीय रूपांतरण तथा सामान्य मूल्य/निर्यात कीमत हेतु कार्य प्रणाली । आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण से यह देखा जा सकता है कि आवेदक ने परिकलित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की गणना का कोई ब्यौरा नहीं दिया है । इसके अलावा, पूर्व में उल्लिखित माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार ऐसी सूचना विरोधी हितबद्ध पक्षकारों को प्रदान करनी होगी ताकि वे अपनी टिप्पणियां दे सकें ।

ड. आवेदक उद्योग ने यह तर्क दिया है कि संबद्ध देशों के निर्यातकों द्वारा अपनाई गई विनिर्माण प्रक्रिया की तुलना में घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया में कोई खास अंतर नहीं है । इसी स्थिति में हम यह समझने में असमर्थ हैं कि आवेदक द्वारा विनिर्माण प्रक्रिया के बारे में गोपनीयता का दावा क्यों किया गया है ।

● वर्तमान मामले की शुरुआत के आधार के रूप में आवेदन उपलब्ध कराए जाने में पर्याप्त विलंब किया गया है । आयात के आनुमानिक आंकड़े आई बी आई एस से प्राप्त रूप में उपलब्ध कराए जाएं तथा ऐसे अपवर्जनों के लिए स्पष्टीकरण के साथ अपवर्जित प्रविष्टियों वाली सूची भी दी जाए ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

8. घरेलू उद्योग के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि याचिका का अगोपनीय रूपांतरण पूर्णतः त्रुटिपूर्ण और अपर्याप्त है जिससे अन्य पक्षकार अपनी टिप्पणियां देने में असमर्थ हैं; संगत नियमों और विनियमों का हवाला देते हुए आवेदक ने यह बताया है कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका में वस्तुतः उस बात से अधिक निहित है जो घरेलू उद्योग के दायित्व में आती है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के अनुसार जांच अवधि अप्रैल, 2010 से जून, 2011 तक की है परंतु अगोपनीय रूपांतरण में केवल मार्च, 2011 तक के आंकड़े दिए गए हैं और इसलिए प्राधिकारी द्वारा भरोसा की गई सूचना अपूर्ण है; आवेदक ने यह बताया है कि ऐसी कोई विधिक अपेक्षा नहीं है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को जांच की शुरुआत के समय जांच अवधि के लिए रिकॉर्ड में सूचना रखनी चाहिए । "याचिका में अवधि" जिसके लिए याचिका दायर की गई है और विस्तृत जांच हेतु निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा चुनी गई "जांच अवधि" कुल मिलाकर दो अलग-अलग कारक हैं । हालांकि याचिका में कोई अवधि अभिज्ञात की जानी चाहिए और उसमें उक्त अवधि हेतु संगत अवधि निहित होनी चाहिए । तथापि, निर्दिष्ट प्राधिकारी किसी अन्य अवधि पर विचार करने के लिए स्वतंत्र हैं जिसमें विस्तृत जांच हेतु आवेदक द्वारा सुझाई गई अवधि भी शामिल है । वस्तुतः हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिया गया तर्क नितान्त अवांछनीय है और यह जनहित में नहीं है तथा यह सुझाव देना खतरनाक है कि आवेदक अत्यंत उचित अवधि तय कर सकता है और इस प्रकार वह प्राधिकारी को इसे अपनाने के लिए बाध्य कर सकता है ।
- यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि एक हितबद्ध पक्षकार वर्ष 2010-11 को वर्तमान मामले में जांच अवधि मानने का सुझाव दे रहा है । प्रथमतः यह मामला नवंबर, 2011 में शुरू किया गया था और इसलिए 2010-11 की जांच अवधि वर्तमान प्रयोजनार्थ पुरानी अवधि होगी । द्वितीयतः इससे अधिक अवधि पर विचार किए जाने से किसी पक्षकार के हितों पर निश्चित तौर पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ सकता है । यदि वर्ष 2010-11 की अवधि वर्तमान प्रयोजन के लिए उचित होती तो निश्चित तौर पर परवर्ती तिमाही को जोड़ना कम अनुचित होता है ।
- जहां तक जांच की त्रुटिपूर्ण अवधि और निर्धारित क्षति अवधि त्रुटिपूर्ण और अनुचित होने के बारे में दिए गए तर्क का संबंध है, अनुरोध है कि पूर्ववर्ती पैरा में हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि आवेदक एक मौजूदा कंपनी है । इस पैरा में हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि आवेदक बाजार में नया आया है । यदि आवेदक बाजार में नया आया है तो जाहिर है कि यह मामला किसी उद्योग की स्थापना की वास्तविक विकृति के अधीन आता है जब तक कि विरोधी पक्षकार यह सिद्ध नहीं करते हैं कि देश में विचाराधीन उत्पाद का पहले से ही उत्पादन और बिक्री हो रही थी । इस संबंध में यह उल्लेख करना संगत होगा कि मध्यम घनत्व वाले फाइबर बोर्ड के संबंध में पूर्व में दायर याचिका में फाइबर बोर्ड की सभी मोटाइयां शामिल थीं । तथापि, हितबद्ध पक्षकारों ने इस आधार पर पतले बोर्ड को अलग रखने का तर्क दिया है कि भारत में पतले बोर्ड का उत्पादन करने वाली कोई कंपनी नहीं है । विधिवत विचार करने के बाद प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि 6 मिमी. से कम के फाइबर बोर्ड का उत्पादन देश में नहीं हो रहा है तदनुसार उन्होंने विचाराधीन उत्पाद के दायरे को 6 मिमी. और उससे अधिक के फाइबर बोर्ड तक सीमित किया है ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि वर्तमान जांच की शुरुआत हेतु निर्धारण करने से पूर्व अनिवार्य मापदंडों की जांच नहीं की गई थी, ऐसी कोई अनिवार्य अपेक्षा नहीं है। इसके अलावा चूंकि आवेदक ने अद्यतित याचिका दायर की है और चूंकि यह अद्यतित याचिका जांच की शुरुआत का आधार है, इसलिए जांच की शुरुआत से पूर्व आवेदक के साथ किया गया पत्र व्यवहार निरर्थक बन जाता है। जहां तक भारत में संबंधित मंत्रालय अथवा अन्य उत्पादकों को भेजे गए पत्रों का संबंध है, कानून में ऐसी कोई अनिवार्य अपेक्षा नहीं है। जहां तक आवेदक और समर्थकर्ता उत्पादक की पिछले तीन वर्षों की वार्षिक रिपोर्टों का संबंध है, समर्थनकर्ता उत्पादक की वार्षिक रिपोर्ट की कोई अनिवार्य अपेक्षा नहीं है। जहां तक आवेदक की वार्षिक रिपोर्ट का संबंध है, यह मामला पूर्व में डी जी ए डी द्वारा उठाया गया था और आवेदक ने इसका समाधान किया था। आवेदक द्वारा लिखे गए पत्रों की प्रतियां इन अनुरोधों के साथ संलग्न हैं। जहां तक की गई गणनाओं के अगोपनीय रूपांतरण तथा सामान्य मूल्य/निर्यात कीमत हेतु कार्य प्रणाली का संबंध है, याचिका में उस बात पर भरोसा किया गया है जो संगत सूचना पर आधारित है।
- जहां तक उत्पादन की स्थिति से संबंधित चार्ट का प्रश्न है, आवेदक ने उत्पादन प्रक्रिया के बारे में पर्याप्त सूचना प्रदान की है। इसमें स्थिति संबंधी चार्ट के बारे में भी पर्याप्त सूचना है। याचिका के साथ संलग्न स्थिति चार्ट आवेदक का वास्तविक उत्पादन संयंत्र संबंधी स्थिति का चार्ट है और इसे संलग्न नहीं किया गया है।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि हितबद्ध पक्षकारों को सूचना उपलब्ध कराने में अत्यधिक विलंब किया गया है, हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त समय दिया गया है। यह ऐसा मामला नहीं है जिसमें हितबद्ध पक्षकारों को जांच की शुरुआत की तारीख से 40 दिन का समय दिया गया हो। प्राधिकारी ने वस्तुतः उस तारीख से 40 दिन का समय हितबद्ध पक्षकारों को दिया है जिस तारीख को हितबद्ध पक्षकारों को पत्र भेजे गए थे। इस प्रकार विरोधी पक्षकारों के हितों के बारे में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं हुआ है। वास्तव में इससे घरेलू उद्योग को ही नुकसान हुआ है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

9. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि याचिका का अगोपनीय रूपांतरण त्रुटिपूर्ण था और उसमें जांच की समूची अवधि अर्थात् अप्रैल, 10 से जून, 11 (15 माह) के लिए सूचना नहीं थी, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में आवेदक से जांच अवधि के लिए संशोधित सूचना/आंकड़े विधिवत रूप से मांगे गए थे जिन्हें सार्वजनिक फाइल में रखा गया था जो सभी हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुली रखी गई थी।

10. प्राधिकारी ने गोपनीयता से संबंधित उपर्युक्त अनुरोधों को नोट किया है और यह नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के बारे में की गई थी। संतुष्ट होने के उपरान्त प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को यह निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं। जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने जांच की कार्यवाही के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा

जांच में अत्यधिक बाधा डाली है वहां प्राधिकारी ने "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर ये जांच परिणाम दर्ज किए हैं ।

11. जहां तक जांच अवधि से संबंधित तर्क का प्रश्न है, इसका चयन वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर विचार करते हुए किया गया है और इसे इस विषय पर न्यूनतम उपलब्ध आंकड़ों को शामिल करने हेतु सही ढंग से चुना गया है । इसके अलावा, यह कहना सही नहीं है कि जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के अनुसार जहां जांच अवधि अप्रैल, 2010 से जून, 2011 तक की है परंतु अगोपनीय रूपांतरण में केवल मार्च, 2011 के आंकड़े हैं क्योंकि जांच अवधि हेतु सूचना घरेलू उद्योग से विधिवत प्राप्त की गई थी जिसे पाटनरोधी नियमानुसार सार्वजनिक फाइल में रखा गया था । इसके अलावा, यह दोहराया जाता है कि वर्तमान मामले में पाटनरोधी जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए आवेदन में पर्याप्त साक्ष्य निहित है ।

12. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि अनिवार्य मापदंडों की विधिवत जांच की गई थी और वर्तमान मामले में जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए रिकॉर्ड में पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध था ।

13. जहां तक हितबद्ध पक्षकारों को सूचना उपलब्ध कराने में किए गए विलंब से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों को वास्तव में लाभ हुआ है क्योंकि समस्त ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को उस तारीख से 40 दिन का समय विधिवत प्रदान किया गया था जिस तारीख को हितबद्ध पक्षकारों को पत्र भेजे गए थे । इस प्रकार उनके हितों पर स्पष्ट तौर पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद तथा घरेलू समान वस्तु

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

14. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

इंडियन मोल्डेड पेनल शटर्स मैन्यु. एसो. के अनुरोध

15. इंडियन मोल्डेड पेनल शटर्स मैन्यु. एसो. के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

- यह स्पष्ट नहीं है कि क्या डोर स्किन विचाराधीन उत्पाद में आते हैं क्योंकि विचाराधीन उत्पाद को जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में अत्यधिक व्यापक और स्पष्ट रूप में परिभाषित किया गया है । मात्रा और कीमत के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग ने अपनी याचिका में एच डी एफ तथा डोर स्किन को संबद्ध देशों से हुए आयातों से अलग रखा है परंतु कुछ परवर्ती अनुरोधों से यह पता चलता है कि यह मुद्दा प्राधिकारी के निर्णय हेतु खुला हुआ है । डोर स्किन और विचाराधीन उत्पाद की आयात कीमत में भारी अंतर से ही यह पता चलता है कि डोर स्किन को विचाराधीन उत्पाद से अलग रखा जाना चाहिए । एम डी एफ या एच डी एफ की तुलना में डोर स्किन की कीमतें अधिक हैं और डोर स्किन एक अलग उत्पाद है । एच डी एफ डोर स्किन के लिए कच्ची सामग्री एम डी एफ तथा एच डी एफ बोर्ड हैं जबकि एम डी एफ तथा एच डी एफ की कच्ची सामग्री लकड़ी, रेजिन और ऐसी अन्य वस्तुएं हैं जिससे यह पता चलता है कि डोर स्किन मूल्यवर्धित तथा अलग उत्पाद है । डोर स्किन को

दरवाजों को छोड़कर अन्य अनुप्रयोगों में अदल-बदल कर इस्तेमाल नहीं किया जा सकता । इस प्रकार एच डी एफ तथा एम डी एफ वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं क्योंकि डोर स्किन की कीमत एम डी एफ की तुलना में 200 प्रतिशत अधिक है । फाइबर बोर्ड मोल्डेड डोर स्किन का उत्पादन केवल 3 मिमी. की मोटाई और 800 किग्रा./एम³ के घनत्व वाले फाइबर बोर्ड से ही किया जा सकता है । आवेदक उद्योग द्वारा केवल एम डी एफ बोर्ड से मोल्डेड डोर स्किन का बेहतर उत्पादन किया जा सकता है । इस प्रकार मोल्डेड डोर स्किन साधारण फाइबर बोर्ड एम डी एफ/एच डी एफ की तुलना में आवेदक के लिए एक मूल्यवर्धित उत्पाद है । दूसरे शब्दों में एम डी एफ/एच डी एफ संबंधित घरेलू उद्योग के लिए डोर स्किन तैयार करने की प्रक्रिया में एक निविष्टि सामग्री है । मोल्डेड डोर स्किन की औसत कीमत पतली एम डी एफ की तुलना में अधिक (150-200 प्रतिशत औसतन) है । इसके अलावा, पतले एच डी एफ की कीमत भी पतले एम डी एफ की कीमत से काफी अधिक है । इस प्रकार, एम डी एफ, एच डी एफ तथा मोल्डेड डोर स्किन के बीच कीमतें तुलनीय नहीं हैं ।

- आवेदक ने विचाराधीन उत्पाद के दायरे को परिभाषित करते समय घनत्व और मोटाई के मापदंडों की जानबूझकर अनदेखी की है । इसका प्रभाव पड़ता है क्योंकि प्रति सी बी एम कच्ची सामग्री की खपत बोर्ड के घनत्व से शासित होती है । एच डी एफ द्वारा अधिक कच्ची सामग्री की खपत की जाती है और उसका घनत्व एम डी एफ की तुलना में अधिक होता है । यहां तक कि आवेदक घरेलू उद्योग की सूची से ही डोर स्किन एम डी एफ या एच डी एफ से अलग प्रतीत होती है । यह दावा कि उच्च घनत्व वाले बोर्ड की आयात कीमत भी औसत आयात कीमत की तुलना में कम होती है, निराधार है । सही गणनाओं से एच डी एफ विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग हो जाएगा ।

मै. वेणु गोपाल स्लेट इंडस्ट्रीज के अनुरोध

16. मै. वेणु गोपाल स्लेट इंडस्ट्रीज के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

- आवेदक द्वारा भरोसेमंद संपूर्ण आनुमानिक आयात आंकड़ों को प्रदान करने की जरूरत है ताकि इस बात का निर्धारण किया जा सके कि क्या विचाराधीन उत्पाद के आयात आंकड़ों का संकलन करने के लिए आवेदक द्वारा अपनाई गई कार्यप्रणाली सही है अथवा नहीं क्योंकि बदले गए आयात के आंकड़े ऐसा करने में अपर्याप्त हैं ।

मै. मैगना - फार्मोस्ट एस डी एम तथा मै. मैसोनाइट कंपोनेंट्स, आयरलैंड की ओर से किए गए अनुरोध

17. जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में प्रदत्त परिभाषा से यह स्पष्ट हो जाता है कि मोल्डेड डोर फेंसिंग जिन्हें डोर स्किन के नाम से भी जाना जाता है, को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखा गया है जिसकी पुष्टि आवेदक द्वारा अपने उत्पाद शीर्षों तथा आयात आंकड़ों से डोर स्किन से संबंधित आंकड़ों को स्पष्ट रूप से अलग रखकर की गई है । उत्पादन प्रक्रिया तथा अनुप्रयोगों में अंतर के रूप में भेद है । डोर

स्किन का उपयोग अनन्य रूप से डोर स्किन के तौर पर किया जाता है अर्थात् इसका उपयोग किसी दरवाजे के बाहरी पैनेलों को तैयार करने के लिए दरवाजों के विनिर्माण में किया जाता है। उसकी रासायनिक विशेषताओं और प्रमुख सतही कन्दूरो के कारण उसे अन्य फाइबर बोर्ड के उत्पादों में आकार नहीं दिया जा सकता या उनके आकार को बदला नहीं जा सकता और इसलिए वह आवेदक के अधिकांश एम डी एफ उत्पादों से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकती या उसका स्थान नहीं ले सकती है।

मै0 सेगामैट पैनेल बोर्डर्स एस डी एन बी एच डी तथा मै0 मर्बोक एम डी एफ लंका (प्रा.) लि., श्रीलंका की ओर से किए गए अनुरोध

18. मै0 सेगामैट पैनेल बोर्डर्स एस डी एन बी एच डी तथा मै0 मर्बोक एम डी एफ लंका (प्रा.) लि., श्रीलंका की ओर से किए गए अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

- कि घरेलू उद्योग ने यह बताया है कि उसने आई बी आई एस द्वारा प्रदत्त सौदेवार आयात आंकड़ों को अपनाया है क्योंकि विचाराधीन उत्पाद का कोई अनन्य सीमाशुल्क वर्गीकरण कोड नहीं है। आई बी एस द्वारा प्रदत्त अध्याय उपशीर्ष 4411 के अंतर्गत आयात के ऐसे आनुमानिक आंकड़े अलग-अलग वर्णनों तथा इकाइयों में सूचित आयात हो सकते हैं। तथापि, घरेलू उद्योग ने आवेदन में संबद्ध उत्पाद के आयात आंकड़ों का संकलन करने के लिए प्रयुक्त कार्य प्रणाली के साथ आयात आंकड़ों को ही बदल दिया है। अतः हम यह समझने में असमर्थ हैं कि क्या घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु के लिए आयात आंकड़ों का संकलन सही है या गलत है क्योंकि आवेदन में आयात के संपूर्ण आनुमानिक आंकड़े नहीं दिए गए हैं।

एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बेरहाड (ई एफ बी), मलेशिया; एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन. बी एच डी (ई जे बी), मलेशिया तथा एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलाई) एस डी एन. बी एच डी (ई एफ एन), मलेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

19. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बेरहाड (ई एफ बी), मलेशिया; एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन. बी एच डी (ई जे बी), मलेशिया तथा एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलाई) एस डी एन. बी एच डी (ई एफ एन), मलेशिया की ओर से किए गए अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

- वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद को अत्यधिक व्यापक रखा गया है। घरेलू उद्योग ने इस प्रकार के उत्पादन को शामिल किया है जिनका विनिर्माण भी आवेदक नहीं करता है। ये आयातित उत्पादों के साथ तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय भी नहीं हैं। घरेलू उद्योग ने 6 मिमी. से कम सभी प्रकार के बोर्डों को शामिल किया है भले ही ये मध्यम घनत्व वाले बोर्ड हों या उच्च घनत्व वाले बोर्ड। घरेलू उद्योग 2.5 मिमी से कम की चौड़ाई के बोर्डों का उत्पादन करने में सक्षम नहीं है और इन्हें जांच के दायरे से अलग रखना अपेक्षित है।

मै. पी टी मेसारी ड्यूज पाकट फाइबर, इंडोनेशिया और मै. पी टी सुमेतेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड (एस पी एफ), इंडोनेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

20. मै. पी टी मेसारी ड्यूज पाकट फाइबर, इंडोनेशिया और मै. पी टी सुमेतेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड (एस पी एफ), इंडोनेशिया की ओर से किए गए अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

- आयात आंकड़ों में अविचाराधीन उत्पाद को गलत ढंग से शामिल करना: सौदेवार जांच से यह पता चलता है कि सौदों में शामिल आंकड़े उच्च घनत्व वाले बोर्डों से संबंधित हैं। सौदेवार विवरण से यह स्पष्ट नहीं होता है कि इंसुलेटिड बोर्डों तथा अन्य अविचाराधीन उत्पाद को किस प्रकार बाहर रखा गया था। वे यह समझने की स्थिति में नहीं हैं कि क्या खासकर उस स्थिति में जब प्रत्येक सौदे में लेमिनेटिड फाइबर बोर्ड आदि जैसी विशेषताओं का कोई विवरण नहीं है तो अपवर्जित श्रेणियों के लिए आनुमानिक आंकड़ों की पुष्टि की गई थी। बहरहाल टैरिफ शीर्ष 4411 में न केवल वे बोर्ड शामिल हैं जो रेजिनों या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा बाउंड हैं अपितु उसके दायरे में वे बोर्ड भी आते हैं जो रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा बाउंड नहीं हैं। प्राधिकारी आयात आंकड़ों की समीक्षा भी करें और उन सभी प्रविष्टियों को अलग करें जो अविचाराधीन उत्पाद से संबंधित हैं। इस प्रकार की कार्रवाई करते समय आवेदकों को उनके द्वारा अपनाई गई कार्य प्रणाली का प्रकटन करने के लिए बुलाया जाए। जब उन्होंने आनुमानिक आंकड़ों और ऐसे सभी अपवर्जनों की सूची बनाते समय इन उत्पादों को अलग रखा था।
- विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र: वर्तमान जांच से विचाराधीन उत्पाद के दायरे में से 3 मिमी. से कम की मोटाई के पतले फाइबर बोर्ड को अलग रखा जाना चाहिए क्योंकि इनका न तो उत्पादन होता है और न ही घरेलू उद्योग बिक्री करता है। किसी बोर्ड की मोटाई किसी अनुप्रयोग विशेष के लिए एक महत्वपूर्ण मापदंड होता है और अलग-अलग मोटाई दूसरे के स्थान पर तकनीकी या वाणिज्यिक रूप से प्रयोग में नहीं लाई जा सकती। उदाहरणार्थ यदि डिजाइनगत अपेक्षा 3 मिमी. मोटाई के बोर्ड का प्रयोग करने की है तो इसके स्थान पर अलग-अलग मोटाई का कोई अन्य बोर्ड प्रयोग करना तकनीकी रूप से संभव नहीं होगा। पतले फाइबर बोर्डों का अंतिम प्रयोग मोटे आकार के प्रयोग से सर्वथा भिन्न है। आवेदक द्वारा चुना गया उत्पाद का दायरा अस्पष्ट है और उसे समुचित रूप से परिभाषित नहीं किया गया है। विवरण एक प्रमुख कारक अर्थात् घनत्व से संबंधित नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके घनत्व के जरिए विचाराधीन उत्पाद को परिभाषित न करने के लिए अपनाई गई नीति का उद्देश्य उस घनत्व के उत्पाद के दायरे को रणनीतिक रूप से शामिल नहीं करना है जिनका उत्पादन आवेदकों द्वारा नहीं किया जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि आवेदक उद्योग विचाराधीन उत्पाद की आबद्ध खपत से संबंधित सूचना रोक ली है। आवेदक मुख्यतः उच्च कीमत वाली संबद्ध वस्तु का व्यापार करता है जिसके लिए कच्ची सामग्री के रूप में सादे फाइबर बोर्डों की जरूरत होती है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से निम्नलिखित को अलग रखना चाहिए :

- घरेलू उद्योग द्वारा जांचाधीन अवधि के दौरान उत्पादित और "वास्तव में" आपूर्त मोटाई पर निर्भर रहते हुए 2.5/3 मिमी. से कम की मोटाई के फाइबर बोर्ड।

- ई2, ई3 के उत्सर्जन मानक या ऐसे किसी अन्य मानक वाली समस्त मध्यम घनत्व वाले बोर्ड जो ई1 उत्सर्जन मानक के समतुल्य नहीं है ।
- अग्निरोधी पार्टीकल बोर्ड ।
- वेनियर्ड एम डी एफ तथा पार्टीकल बोर्ड

उपर्युक्त अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी आयात आंकड़ों की भी समीक्षा करें और उन सभी प्रविष्टियों को अलग कर दें जो अविचाराधीन उत्पाद से संबंधित हैं । इस प्रकार की कार्रवाई करते समय आवेदकों को उनके द्वारा अपनाई गई कार्य प्रणाली का प्रकटन करने के लिए बुलाया जाए । जब उन्होंने आनुमानिक आंकड़ों और ऐसे सभी अपवर्जनों की सूची बनाते समय इन उत्पादों को अलग रखा था । इस समय हम वे यह समझने की स्थिति में नहीं हैं कि क्या खासकर उस स्थिति में जब प्रत्येक सौदे में लेमिनेटिड फाइबर बोर्ड आदि जैसी विशेषताओं का कोई विवरण नहीं है तो अपवर्जित श्रेणियों के लिए आनुमानिक आंकड़ों की पुष्टि की गई थी । बहरहाल टैरिफ शीर्ष 4411 में न केवल वे बोर्ड शामिल हैं जो रेजिनो या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा बाउंड हैं अपितु उसके दायरे में वे बोर्ड भी आते हैं जो रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा बाउंड नहीं हैं ।

- प्रतिस्थापनीयता के बारे में झूठी घोषणा : आवेदक ने आवेदन में यह उल्लेख किया है कि संबद्ध वस्तु का कोई ज्ञात व्यवहार्य तकनीकी तथा वाणिज्यिक स्थानापन्न नहीं है । इस संदर्भ में निर्यातकों ने गंभीर आपत्तियां उठाई हैं क्योंकि बाजार में कई व्यवहार्य स्थानापन्न उपलब्ध हैं । यह भी अनुरोध है कि स्वयं आवेदक ने अपनी वेबसाइट पर संबद्ध वस्तु तथा अन्य स्थानापन्नो के बीच भेद उपलब्ध कराए हैं । अतः आवेदक का अनुरोध गलत है जिसे अस्वीकार किये जाने की जरूरत है ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

21. घरेलू उद्योग की ओर से संक्षेप में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :

- जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि आवेदक ने कानून के अनुसार विभिन्न मापदंडों की जांच करते समय बड़ी चालाकी से अविचाराधीन उत्पाद को शामिल किया है; टी/टी आंकड़ों से यह पता चलता है कि उच्च घनत्व वाले बोर्डों से संबंधित आंकड़ों को शामिल किया गया है; आवेदक ने "चालाकी से" जैसे शब्दों के अवांछित, अनपेक्षित और अनावश्यक प्रयोग पर कड़ी आपत्ति दर्ज की है जिसका एकमात्र उद्देश्य पक्षपात करना और जांच में बाधा डालना है । आवेदक का प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे सर्वप्रथम ऐसे अनपेक्षित शब्दों के आधार की पुष्टि करने के लिए पक्षकारों को बुलाएं । यह मानते हुए कि आवेदक ने अविचाराधीन उत्पाद के कुछ आयात आंकड़े शामिल कर लिए हैं; तो सर्वप्रथम यह कैसे चालाकीपूर्ण हो गया है और द्वितीयतः ऐसा समावेशन वर्तमान निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण किस प्रकार है ? आवेदक ने समूचे आयात आंकड़ों के लिए पुनः समीक्षा की है और यह पाया है कि अविचाराधीन उत्पाद के आयात की ऐसी कोई प्रवृष्टि नहीं हुई है जिसे विचाराधीन उत्पाद के आयात की मात्रा और मूल्य में शामिल किया गया हो ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि विचाराधीन उत्पाद की परिभाषा अस्पष्ट है जिसे उचित ढंग से परिभाषित नहीं किया गया है और यह कि विवरण घनत्व से संबंधित नहीं है जो एक महत्वपूर्ण कारक है; यह बताया जाता है कि विवरण में कोई अस्पष्टता या अशुद्धता नहीं है। इस आरोप के आधार को नहीं समझा जा सकता क्योंकि हितबद्ध पक्षकार ने यह प्रदर्शित नहीं किया है कि एक मापदंड के रूप में घनत्व से किस प्रकार कीमत शासित होती है/प्रभावित होती है। आवेदक ने आयात सूची की समीक्षा की है और उसने घनत्व तथा कीमत के बारे में कोई सुसंगत पद्धति नहीं पायी है। कम घनत्व वाले उत्पाद की कीमत यदाकदा उच्च घनत्व वाले उत्पाद से अधिक होती है और यदाकदा कम। जब तक किसी मापदंड के आधार पर उत्पाद की कीमत की सुसंगत पद्धति नहीं है तब तक यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि संबंधित पक्षकारों ने वस्तुतः मापदंड का पालन नहीं किया है। इसके अलावा, हितबद्ध पक्षकारों ने इस संबंध में कोई सुसंगत पद्धति प्रदर्शित नहीं की है।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आवेदक केवल 2.5 से 5 मिमी. तक की मोटाई का ही उत्पादन करता है; यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान आवेदन घरेलू उद्योग की स्थापना में वास्तविक विकृति से संबंधित है। अतः वर्तमान मामले में क्षति अवधि के दौरान उत्पादन न होने का तथ्य अप्रासंगिक बन जाता है। घरेलू उद्योग अभी पूर्णतः स्थापित नहीं हुआ है। यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग ने उत्पाद का उत्पादन और उसके सभी परिवर्तकों की बिक्री नहीं की होगी। यह उल्लेखनीय है कि घरेलू उद्योग ने केवल यह प्रदर्शित करने के लिए कि घरेलू उद्योग 2.1 मिमी. से कम के फाइबर बोर्ड का उत्पादन कर सकता है और हितबद्ध पक्षकारों ने मात्र आरोप लगाए हैं, मौके पर सत्यापन के समय अधिकारियों की उपस्थिति में 201 मिमी. के फाइबर बोर्ड का उत्पादन किया। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित 2.1 मिमी. के फाइबर बोर्ड की प्रयोगशाला जांच रिपोर्टें अलग से दायर की गई हैं। आवेदक ने ई 1 मानक के पार्टीकल बोर्ड का उत्पादन किया है। यदि आवेदक ई 1 मानक के पार्टीकल बोर्ड का उत्पादन कर सकता है तो आवेदक ई 1 मानक के विचाराधीन उत्पाद का निश्चित तौर पर उत्पादन कर सकता है। वर्तमान याचिका घरेलू उद्योग की स्थापना में वास्तविक बाधा पहुंचाने वाले पाटन के बारे में है। जहां तक अग्निरोधी पार्टीकल बोर्ड का संबंध है, दावे का कोई तथ्यात्मक आधार नहीं है। आवेदक ने अब तक उत्पाद की कुछेक चुनिंदा श्रेणियों का भी उत्पादन किया है और याचिका घरेलू उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान के बारे में है। स्पष्ट तौर पर आवेदक उत्पादन की शुरुआत में सभी रेंजों और प्रकारों की आपूर्ति नहीं कर सकता। जिस समय उत्पादन वाणिज्यिकृत होगा तो आवेदक उन सभी उत्पादों की पेशकश करेगा जिनकी बाजार को जरूरत होगी। तथापि, आवेदक द्वारा उत्पादित सर्वाधिक लोकप्रिय उत्पाद प्रकार की बिक्री उत्पादन की सीमा तक की जा सकती है और आवेदक को माल जमा होने की स्थिति का सामना करना पड़ा था। इसके अलावा, आवेदक उत्पाद के पाटन के मद्देनजर अत्यधिक कम कीमत पर उत्पाद की बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ था।
- जहां तक टैरिफ शीर्ष 1411 में उन बोर्डों के शामिल न होने का संबंध है, जो रेजिन द्वारा बांड नहीं हैं, अपितु उसमें वे बोर्ड भी शामिल हैं, जो रेजिन द्वारा बांड नहीं हो सकते हैं, आवेदक को इस बात की जानकारी है और यह आवेदन उन बोर्डों के बारे में है जो रेजिन द्वारा बांड हैं और इसमें वे बोर्ड भी शामिल हैं जो रेजिन द्वारा बांड नहीं हो सकते हैं। यह तथ्य कि बोर्ड अन्य कार्बनिक पदार्थ द्वारा

बाउंड हो सकते हैं, स्थिति को बदल नहीं देता है। आवेदक का अनुरोध है कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद "6 मिमी से कम की मोटाई के रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों से बांडेड लकड़ी या लिगनस फाइबर बोर्ड" हैं जिन्हें याचिका में "फाइबर बोर्ड" कहा गया है। फाइबर बोर्ड कस्टम वुड या काफ्ट वुड कंपोजिट इंजीनियर्ड उत्पाद है जिसका निर्माण ताप संपीडित रेजिन बांडेड वुड फाइबर से किया जाता है। फाइबर बोर्ड का आगे यांत्रिक प्रसंस्करण यथा लेमिनेटिड, सरफेस कोटिड, कार्ड, मोल्डेड आदि के रूप में किया जा सकता है। वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में (क) 6 मिमी या अधिक की मोटाई के फाइबर बोर्ड, (ख) इंसुलेसन बोर्ड, (ग) लेमिनेटिड फाइबर बोर्ड और (घ) रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा अबांडेड बोर्डों को छोड़कर सीमाशुल्क शीर्ष 4411 के अंतर्गत वर्गीकरणीय सभी उत्पाद शामिल हैं। इसके अलावा, विनिर्माता सी ए आर बी (केलिफोर्निया एयर रिसोर्सेज बोर्ड) जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार उत्सर्जन मानकों के आधार पर उत्पाद का वर्गीकरण कर सकते हैं। उत्सर्जन मानकों की प्राप्ति उचित रेजिन के प्रयोग से की जा सकती है। संबद्ध देशों में फाइबर बोर्ड के सभी उत्पादक और भारतीय उत्पादन अलग-अलग उत्सर्जन मानकों वाले विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन और आपूर्ति करने की स्थिति में है। पी 1 फाइबर बोर्ड बनाने के लिए विश्व भर में प्रयुक्त होने वाली प्रौद्योगिकी के अंतर्गत पी 2 के ग्लू में कुछ अभिवर्धक जोड़े जाते हैं जिससे फार्मेलडीहाइड का उत्सर्जन कम हो जाता है। आवेदक ने पी 1 मानक के बोर्डों का उत्पादन किया है।

- जहां तक सैंडिंग का संबंध है, इसका प्रयोग विचाराधीन उत्पाद पर किया जा सकता है। सैंडिंग ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत सामग्री को हटाकर बोर्ड की सतह को अत्यधिक चिकना बना दिया जाता है। आयात सामान्यतः अनसैंडेड रूप में किए जा रहे हैं। इसका कारण यह है कि 2 मिमी से 5.5 मिमी तक के एम डी एफ के अनुप्रयोग क्षेत्रों में किसी सैंडिंग की जरूरत नहीं होती है। किसी फाइबर बोर्ड पर सैंडिंग 2 कारकों (i) खुरदरी सतह (ii) मोटाई में अंतर के कारण की जाती है। 2 मिमी से 4 मिमी की मोटाई के बोर्डों के उत्पादन के मामले में ताप का प्रवेश बेहतर होता है, बोर्ड की क्यूरिंग कम समय में हो जाती है, बोर्ड की सतह चिकनी हो जाती है और बोर्ड की मोटाई भी लंबाई और चौड़ाई की दृष्टि से फाइबर बोर्ड में समान हो जाती है तथा मोटाई का अंतर ± 0.1 होता है और इसलिए उसकी गुणवत्ता प्रभावित नहीं होती है। इसलिए विनिर्माता आम तौर पर 2 मिमी से 4 मिमी की मोटाई के फाइबर बोर्डों पर सैंडिंग नहीं करते हैं।
- जहां तक घनत्व और मोटाई का संबंध है, घनत्व और मोटाई एक दूसरे से सह संबंधित हैं। सामान्यतः पतले एम डी एफ का घनत्व 750 से 850 किग्रा./सीबीएम के बीच होता है। बी आई एस मानकों में घनत्व में 10 प्रतिशत के अंतर की अनुमति है। वास्तव में यदि कोई विनिर्माता घनत्व को बढ़ाता है तो कच्ची सामग्री की लागत बढ़ जाएगी जिसकी वजह कच्ची सामग्री, विद्युत की अधिक खपत है और उत्पादकता भी कम हो जाएगी क्योंकि घनत्व जितना अधिक होगा क्यूरिंग समय भी उतना ही अधिक होगा। यह भी देखा जाएगा कि कम मोटाई के साथ उत्पादन कम होता जाता है तथापि यह देखा जाता है कि अलग-अलग मोटाइयों के बीच घनत्व अभिभावी होता है लेकिन यह अंतर कोई खास नहीं होता है इसलिए उत्पाद की कीमतों पर घनत्व तथा मोटाई के कारण कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। प्राधिकारी द्वारा कीमत तुलना के लिए किसी मापदंड पर विचार करने से पूर्व

हितबद्ध पक्षकारों को सर्वप्रथम यह सिद्ध करना चाहिए कि कीमतों में मापदंड के अनुरूप भारी अंतर आया है । यदि कीमत में कोई सुसंगत अंतर नहीं आता है तो उस मापदंड की हर हालत में अनदेखी की जानी अपेक्षित है । हितबद्ध पक्षकारों ने मोटाई तथा घनत्व के आधार पर कीमत में कोई सुसंगत अंतर नहीं रखा है । ऐसा मामला होने के कारण प्राधिकारी अंतर की अनदेखी कर सकते हैं । अंतर करने वाले किसी कारक की मात्रा मौजूदगी अपर्याप्त है । ऐसे कारक को वाणिज्य में ऐसे कारक के रूप में स्वीकार किया गया है जो कीमत को प्रभावित करता है । ऐसे कारक को उत्पादकों द्वारा निरंतर लागू किया जा रहा है ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि आवेदक के कथन के विरुद्ध बाजार में कई व्यवहार्य स्थानापन्न उपलब्ध हैं, याचिका में उत्पाद के "व्यवहार्य स्थानापन्न" के बारे में सूचना प्रतीक्षित है । व्यवहार्य स्थानापन्न पर उत्पाद की तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता के आधार पर विचार करना होगा । यह स्पष्ट स्थिति है कि विचाराधीन उत्पाद का कोई तकनीकी या वाणिज्यिक स्थानापन्न नहीं है । किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने उत्पाद के लिए ऐसे किसी तकनीकी तथा वाणिज्यिक स्थानापन्न की पहचान नहीं की है । इसके अलावा, जरूरत पड़ने पर उत्पाद का ऐसा कोई तकनीकी या वाणिज्यिक स्थानापन्न है, हितबद्ध पक्षकारों को वर्तमान जांच के बारे में परेशान नहीं होना चाहिए । वे ऐसे व्यवहार्य स्थानापन्न का उत्पादन कर सकते हैं ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि घरेलू उद्योग द्वारा अपनाए गए टी/टी आंकड़ों में अलग-अलग विवरणों तथा इकाइयों में सूचित आयात शामिल किए गए हैं और केवल अपनाई गई कार्य प्रणाली के साथ परिवर्तित आयात आंकड़े उपलब्ध कराए गए हैं और यह कि संपूर्ण आनुमानिक आंकड़े प्रस्तुत किए जाने चाहिए ताकि आयात आंकड़ों के संकलन में सुधार का निर्धारण किया जा सके, आनुमानिक आंकड़े उपलब्ध कराने की ऐसी कोई विधिक अपेक्षा नहीं है । निर्धारित आवेदन प्रपत्र के अनुसार याचिका में उसके संगत भाग में उसके संगत भाग में (क) देशवार आयातों की मात्रा और मूल्य, और (ख) सूचना के स्रोत का उल्लेख होना चाहिए । स्पष्ट तौर पर टी / टी सूचना को याचिका के साथ संलग्न करने की जरूरत नहीं है । आवेदक का दायित्व केवल यह है कि वह स्रोत को अभिज्ञात करे तथा आयातों की मात्रा और मूल्य का पता लगाए । इसके बावजूद घरेलू उद्योग ने सौदेवार आयात दर्शाते हुए सूचना प्रदान की है ।
- समान वस्तु : आवेदक कंपनी द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से निर्यातित उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है । दोनों उत्पादों में भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण आदि जैसे मापदंडों के संबंध में तुलनीय विशेषताएं हैं । घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के संबंध में उत्पाद के अनिवार्य गुणधर्मों की तुलना से यह पता चलेगा कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु उत्पाद के अनिवार्य गुणधर्मों के संबंध में आयातित वस्तु से तुलनीय है । संबद्ध वस्तु का उत्पादन और बिक्री कई परिवर्तकों में की जाती है ताकि विशिष्ट अंतिम अनुप्रयोगों की पूर्ति की जा सके । समान या उसी कच्ची सामग्री का प्रयोग करते हुए समान या उसी उत्पादन प्रक्रिया, प्रौद्योगिकी, कर्मचारियों का उपयोग करते हुए अलग-अलग उत्पाद प्रकारों का उत्पादन किया जाता है । आवेदक के मामले में किसी विशेष प्रकार के उत्पाद प्रकार का उत्पादन करने या न करने का तथ्य बाजारी जरूरतों पर

निर्भर करता है। इसके अलावा, चूंकि आवेदक स्वयं को भारतीय बाजार में स्थापित करने के दौर से गुजर रहा है, इसलिए आवेदक धीरे-धीरे अलग-अलग प्रवर्तकों की पेशकश कर रहा है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

22. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद "इंसुलेशन बोर्डों, लेमिनेटिड फाइबर बोर्डों तथा रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा बांडेड न किए गए बोर्डों को छोड़कर 6 मिमी से कम की मोटाई के रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों से बांडेड कास्ट या लिगनस फाइबर बोर्ड हैं जिन्हें आगे "फाइबर बोर्ड" कहा गया है"।

23. उत्पाद विवरण से यह अत्यंत स्पष्ट हो जाएगा कि इसमें 6 मिमी से कम की मोटाई के ऐसे कास्ट या लिगनस फाइबर बोर्ड शामिल हैं जो रेजिन द्वारा बाउंड हैं लेकिन इसमें ऐसे बोर्ड भी शामिल हैं जो इंसुलेशन बोर्डों, लेमिनेटिड फाइबर बोर्डों तथा रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा बांडेड न किए गए बोर्डों को छोड़कर रेजिन द्वारा बाउंड हो सकते हैं।

24. फाइबर बोर्ड कस्टम वुड या काफ्ट वुड कंपोजिट इंजीनियर्ड उत्पाद है जिसका निर्माण ताप संपीडित रेजिन बांडेड वुड फाइबर से किया जाता है। फाइबर बोर्ड का आगे यांत्रिक प्रसंस्करण यथा लेमिनेटिड, सरफेस कोटिड, कार्ब, मोल्डेड आदि के रूप में किया जा सकता है। वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में (क) 6 मिमी या अधिक की मोटाई के फाइबर बोर्ड, (ख) इंसुलेशन बोर्ड, (ग) लेमिनेटिड फाइबर बोर्ड और (घ) रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा अबांडेड बोर्डों को छोड़कर सीमाशुल्क शीर्ष 4411 के अंतर्गत वर्गीकरणीय सभी उत्पाद शामिल हैं।

25. फाइबर बोर्ड कास्ट आधारित बोर्ड हैं जो अलग-अलग आकारों और मोटाई में उपलब्ध हैं। तथापि, एकल टुकड़े से निर्मित ठोस काष्ट के विपरीत ये फाइबरों में परिशोधित काष्ट या लिगोसेल्युलोजिक सामग्री से निर्मित और तत्पश्चात बोर्ड तैयार करने के लिए उच्च तापमान पर रेजिन बाइंडर से पुनः संशोधित उच्च क्षमता वाला इंजीनियर्ड उत्पाद है।

26. एक इंजीनियर्ड उत्पाद होने के कारण फाइबर बोर्डों के ठोस काष्ट (काष्ट के एकल ठोस टुकड़े से निर्मित) की तुलना में कुछ लाभ होते हैं। फाइबर बोर्ड में ठोस काष्ट की तुलना में आद्रता परिवर्तन की स्थिति में अधिक सहन क्षमता होती है क्योंकि इसका निर्माण अभिभावी पद्धति में व्यवस्थित काष्ट फाइबर से किया जाता है। इसमें पर्यावरणिक परिवर्तनों के अनुरूप ढलने की बेहतर क्षमता होती है और यह अत्यंत मजबूत होता है। फाइबर बोर्ड के फर्नीचर, हस्तशिल्प, उपभोक्ता वस्तुओं आदि जैसे विभिन्न अनुप्रयोग होते हैं।

27. विचाराधीन उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 44 के अंतर्गत वर्गीकृत हैं। विचाराधीन उत्पाद का कोई अन्य सीमाशुल्क वर्गीकरण कोड नहीं है। तथापि, सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और इस जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।

28. प्राधिकारी इस विचार से सहमत हैं कि डोर स्किन मूल्यवर्धित तथा पृथक उत्पाद है। इसके अलावा, सामान्य फाइबर बोर्ड की तुलना में डोर स्किन की कीमतें काफी अधिक होती हैं। आगे यह नोट किया जाता है कि फाइबर बोर्ड मोल्डेड डोर स्किन का उत्पादन केवल 800 किग्रा./एम² से अधिक के घनत्व

वाले 3 मिमी. की मोटाई के फाइबर बोर्ड से भी किया जा सकता है । चूंकि मोल्डेड डोर स्किन एक मूल्यवर्धित उत्पाद है इसलिए वह इस जांच के दायरे में शामिल नहीं है ।

29. यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद को समुचित ढंग से परिभाषित किया गया है । विवरण में कोई अस्पष्टता नहीं है । आगे यह नोट किया जाता है कि हितबद्ध पक्षकारों ने उचित तर्क दिए बिना विचाराधीन उत्पाद से अलग-अलग प्रकारों के अपवर्जन की मांग करते हुए मात्र अपने अनुरोध दायर किए हैं । यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने उसके उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान के आधार पर ही क्षति का दावा किया है । ऐसे मामले में निश्चित तौर पर यह आशा नहीं की जाती है कि उसने दावा करने के लिए सभी रूपों में संबद्ध वस्तु का उत्पादन और बिक्री अनिवार्य रूप से की हो क्योंकि भारतीय बाजार में पाटित आयातों की मौजूदगी से जहां तक विचाराधीन उत्पाद का संबंध है, उसके व्यापारिक निर्णयों पर अत्यधिक प्रभाव डाला है ।

30. जहां तक घनत्व और कीमतों की तुलना का संबंध है, कोई सुसंगत पद्धति नोट नहीं की गई है । वस्तुतः सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों ने इस संबंध में परिशिष्ट 8 के आंकड़ों में कोई भेद नहीं किया है ।

31. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आवेदक केवल 2.5 से 5 मिमी. तक की मोटाई का ही उत्पादन करता है, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग 2 मिमी से कम की मोटाई का उत्पादन करने में सक्षम है और इसलिए इसे अलग रखा जाना अपेक्षित नहीं है । इसके अलावा, वर्तमान मामले में क्षति मुख्यतः घरेलू उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान के बारे में हुई है । इसलिए संबद्ध वस्तु के किसी विशेष प्रकार का उत्पादन वर्तमान मामले में संगत नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग अभी पूरी तौर पर स्थापित नहीं हुआ है, उसे पाटित आयातों के कारण ऐसा करने से वंचित किया गया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक घरेलू उद्योग के पास संबद्ध वस्तु के अलग-अलग प्रकारों का उत्पादन करने की क्षमता है और इसलिए हितबद्ध पक्षकारों द्वारा इस संबंध में किए गए दावों में कोई दम नहीं है ।

32. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि बाजार में कई व्यवहार्य स्थानापन्न उपलब्ध हैं, इस दावे की पुष्टि नहीं की गई है । यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग ने इस दावे का खंडन किया है । प्राधिकारी का प्रस्ताव खासकर मौके पर सत्यापन के समय जांच के दौरान इस मुद्दे की आगे पड़ताल करने का है ।

33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान विश्लेषण में प्रयुक्त आयात आंकड़े विचाराधीन उत्पाद से संबंधित हैं । आंकड़ों का निर्धारण जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में परिभाषित विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र विस्तार के आधार पर किया गया है ।

34. आवेदक ने यह दावा किया है कि आवेदक कंपनी द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से निर्यातित उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है । दोनों उत्पादों में भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण आदि जैसे मापदंडों के संबंध में तुलनीय विशेषताएं हैं । घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के संबंध में उत्पाद के अनिवार्य गुणधर्मों की तुलना से यह पता चलेगा कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु उत्पाद के अनिवार्य गुणधर्मों के संबंध में आयातित वस्तु से तुलनीय है । संबद्ध वस्तु का उत्पादन और बिक्री कई परिवर्तकों में की जाती है ताकि विशिष्ट अंतिम अनुप्रयोगों की पूर्ति की जा सके । समान या उसी कच्ची

सामग्री का प्रयोग करते हुए समान या उसी उत्पादन प्रक्रिया, प्रौद्योगिकी, कर्मचारियों आदि का उपयोग करते हुए अलग-अलग उत्पाद प्रकारों का उत्पादन किया जाता है ।

35. इस प्रकार आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु को इस जांच के प्रयोजनार्थ पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर संबद्ध देशों से आयातित विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु माना जा रहा है ।

घ. "घरेलू उद्योग" का क्षेत्र और "आधार"

36. इस जांच की शुरुआत के समय पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) में घरेलू उद्योग निम्नानुसार परिभाषित था :-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा ।

37. तथापि, बाद में इस नियम में संशोधन किया गया है जो निम्नानुसार है :-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" पद का अर्थ केवल शेष उत्पादकों के उल्लेख के रूप में निकाला जाएगा "।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

38. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार है:-

मै. वेणुगोपाल स्लेट इंडस्ट्रीज के अनुरोध

- "घरेलू उद्योग" के रूप में विचार किए जाने के लिए आवेदक के पास कोई आधार नहीं है और जांच को तुरंत समाप्त किया जाना चाहिए क्योंकि आवेदक पहले ही यह स्वीकार कर चुका है कि उसने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का आयात किया था और उसकी बिक्री लाभ पर बाजार में की थी ।

मै. सेगामेट पैनल बोर्ड्स एस डी एन. बी एच डी तथा मै. मरबोक एम डी एफ लंका (प्रा.) लि., श्रीलंका

- आवेदक ने यह स्वीकार किया है कि उसने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का आयात कर बाजार में लाभ पर उसकी बिक्री की है। अतः संबद्ध वस्तु का एक आयातक होने के कारण आवेदक कानून में दी गई परिभाषा के अनुसार : "घरेलू उद्योग" के दायरे में नहीं आता है।

एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी), मलेशिया; एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन. बी एच डी (ई जे बी), मलेशिया और एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलाई) स डी एन. बी एच डी, मलेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

- घरेलू उद्योग के रूप में आवेदक के आधार का निर्धारण कानून के अनुसार नहीं है क्योंकि आवेदक ने जांच अवधि में आयात करने की सच्चाई को स्वीकार किया है और इसलिए उपर्युक्त के मददेनजर घरेलू उद्योग के रूप में आवेदक पर विचार करने का कोई कारण नहीं है। घरेलू उद्योग ने आयातों के बारे में विरोधाभासी विवरण दिए हैं। पृष्ठ 10 और जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में यह घोषित किया गया है कि आयात इसलिए किए गए थे ताकि अनुसंधान एवं विकास की दृष्टि से कंपनी द्वारा उत्पादित उत्पाद को बेंच मार्क किया जा सके और न कि व्यापार के लिए और यह कि आवेदक के उत्पादन की तुलना में आयात की मात्रा नगण्य है। इसके विपरीत याचिका के पृष्ठ 12 पर उन्होंने यह उल्लेख किया है कि उन्होंने घरेलू बाजार में आयातित सामग्री की बिक्री की है और अत्यधिक लाभ कमाया है।

मै. मैग्ना-फॉर्मोस्ट एस डी एन तथा मै. मैसोनाइट कंपोनेंट्स, आयर्लैंड की ओर से किए गए अनुरोध

- पाटनरोधी कारार के अनुच्छेद 4.1 और 5.4 तथा पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अंतर्गत आवेदक के पास "घरेलू उद्योग" के रूप में पात्रता का आधार नहीं है क्योंकि आवेदक स्वयं संबद्ध उत्पाद का आयातक है।

मै. पी टी मेसारी डिबसपाकट फाइबर, इंडोनेशिया तथा मै. पी टी सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड (एस पी एफ), इंडोनेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

- बेंचमार्क हेतु संबद्ध वस्तु का स्वतः आयात नियम 2 (ख) की जरूरत को पूरा करने के लिए घरेलू उद्योग ने बड़ी चालाकी से यह कहते हुए बचाव किया है कि स्वतः आयात बेंचमार्क के प्रयोजनार्थ किए गए थे। ऐसे किसी उद्देश्य की बेहतर प्राप्ति स्थानीय बाजार से आयातित वस्तु खरीद कर की जा सकती है न कि संबद्ध वस्तु के पूरे कंटेनरों का आयात कर। रोचकपूर्ण यह है कि याचिका के पृष्ठ सं. 10, पैरा 37 में आवेदक ने यह उल्लेख किया है कि उसने अनुसंधान एवं विकास हेतु संबद्ध वस्तु का आयात किया है न कि व्यापार हेतु। इसके विपरीत उन्होंने भारी लाभ पर आयातित सामग्री की बिक्री की है जिसका तात्पर्य यह है कि उन्होंने संबद्ध वस्तु का व्यापार किया और लाभ भी कमाया। जांच अवधि से पूर्व और जांच अवधि के दौरान आवेदकों के स्वतः आयातों के कारण आयातों की प्रवृत्ति का विश्लेषण दोषपूर्ण हो गया है। आवेदक

की वेबसाइट में यह स्वीकार किया गया है कि जांच अवधि से पूर्व केवल आयात कर रहे थे । यह मामला एक अन्य कारण से रद्द किया जा सकता है कि आधार और नियम 5 की पूर्व शर्तों का निर्धारण नियम 12 या नियम 17 के अंतर्गत नहीं किया जा सकता ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

- वाणिज्यिक उत्पादन शुरू होने के बाद अल्प मात्रा में किए गए आयातों को छोड़कर आवेदक कंपनी ने संबद्ध वस्तु का आयात नहीं किया है । कारखाने में उत्पादित उत्पाद के साथ तुलना करने के लिए अलग-अलग कंपनियों से अलग-अलग मोटाई के उत्पाद का अल्प मात्रा में आयात किया गया था । उत्पाद की तुलना तभी कारगर होती है जब उत्पाद के समूचे बैच का आयात किया जाए ताकि आर्द्रता तत्व, ग्लू तत्व तथा विभिन्न अन्य उत्पाद विनिर्देशनों की तुलना आवेदक द्वारा उत्पादित उसी उत्पाद रेंज के साथ की जा सके । ये आयात कंपनी द्वारा अनुसंधान एवं विकास हेतु उत्पादित किए जा रहे उत्पाद की बेंचमार्क हेतु किए गए थे न कि व्यापार के लिए । वस्तुतः आवेदक के उत्पादन की तुलना में आयात मात्रा नगण्य है । ऐसे आयातों के संबंध में प्रवेश बिल प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए हैं । आवेदक संबद्ध देशों में विचाराधीन उत्पाद के किसी निर्यातक या आयातक से संबंधित (प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष) नहीं है ।

- जहां तक आवेदक द्वारा किए गए आयातकों का संबंध है, आयातों के कारण ऊपर बता दिए गए हैं । यह ऐसा मामला नहीं है जहां आवेदक ने भारी मुनाफे पर आयातित सामग्री की बिक्री की है । यह स्पष्ट किया जाता है कि आवेदन में विवरण का अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि आवेदक ने उत्पादन की बिक्री की है । वस्तुतः आवेदक ने उत्पाद की बिक्री नहीं की है । इसने उत्पाद की खपत अनुषंगी उत्पाद में की है । (अनुषंगी उत्पादों में भी आवेदक वित्तीय घाटा उठा रहा है) । पाटन से लाभ उठाने के लिए आवेदक आयात नहीं कर रहा है । आवेदक का जोर आयातों पर नहीं रहा है अपितु उसका जोर उसके खुद के उत्पादन पर रहा है । अतः आवेदक को नियमों के अर्थ के भीतर पात्र घरेलू उद्योग माना जाना चाहिए ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि जांच अवधि के दौरान वस्तु का आयात किए जाने के कारण आवेदक के पास सुने जाने का अधिकार नहीं है, यह तर्क किसी विधिक और तथ्यात्मक आधार से रहित है । किए गए दावे के विपरीत घरेलू उद्योग की परिभाषा में यह उपबंध है कि प्राधिकारी सामान्यतः "समग्र घरेलू उत्पादकों" पर विचार करेंगे । इसके अलावा, यदि किसी घरेलू उत्पादक ने संबद्ध देशों से उत्पाद का आयात किया है तो नियमों में यह उपबंध है कि प्राधिकारी ऐसे घरेलू उत्पादक को अपात्र घरेलू उद्योग "मान सकते" हैं । यह नोट किया जाए कि प्रथमतः नियम में यह उल्लेख नहीं है कि प्राधिकारी ऐसी किसी कंपनी को अपात्र घरेलू उत्पादक मानेंगे । द्वितीयतः "सकते हैं" शब्द के प्रयोग के कारण किसी हितबद्ध पक्षकार को प्राधिकारी के समक्ष यह सिद्ध करना चाहिए कि ऐसा कोई उत्पादक अपात्र घरेलू उत्पादक है । ऐसा घरेलू उद्योग शब्द के साधारण अर्थ के कारण अधिक है । दूसरे शब्दों में शामिल किए जाने का विचार करते समय अपवर्जन की जरूरत की पुष्टि की जानी चाहिए ।

- बेंचमार्क के प्रयोजनार्थ किए गए आयातों और दिए गए विरोधाभासी विवरणों के संबंध में अनुरोध है कि घरेलू उद्योग ने स्वतः आयात हेतु वास्तविक बचाव किया है और यह कि यह आरोप बेबुनियाद है । आवेदक द्वारा उत्पादन शुरू किए जाने से पूर्व भारत में पतले बोर्ड का उत्पादन नहीं किया जा रहा था । अतः

बैंचमार्किंग के प्रयोजनार्थ स्थानीय बाजार से उसकी खरीद करने का प्रश्न नहीं उठता है। इसके अलावा, बैंचमार्क के प्रयोजनार्थ आयातित उत्पाद का अनिश्चित काल तक भंडारण करने की जरूरत नहीं है। व्यापारिक समझदारी यही है कि इसका निपटान प्रयोजन सिद्ध होने के बाद कर दिया जाए। आवेदक ने आयातित उत्पाद की बिक्री बाजार में नहीं की है और उसने आयातित उत्पाद की खपत अनुषंगी उत्पाद में की है और उसके बाद उत्पाद की बिक्री की है। वस्तुतः सूचना से यह देखा जाएगा कि आवेदक को अनुषंगी उत्पादों में भी घाटा हुआ है।

● विभिन्न उत्पादकों के उत्पादन और समर्थकर्ता कंपनी के हिस्से सहित आवेदक के हिस्से को दर्शाने वाला विवरण आवेदन में निहित है। उल्लिखित आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि भारत में दो कंपनियां अर्थात् बाला जी एक्शन बिल्डवैल (आवेदक) और ग्रीन प्लाई इंडस्ट्रीज हैं जिन्होंने विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन हाल ही में शुरू किया है। ग्रीन प्लाई इंडस्ट्रीज ने हाल ही में दिसंबर, 2010 में विचाराधीन उत्पाद का वाणिज्यिक उत्पाद शुरू किया है। ग्रीन प्लाई इंडस्ट्रीज लि. ने वर्तमान आवेदन का समर्थन किया है। इस प्रकार आवेदक का उत्पादन कुल भारतीय उत्पाद का "एक बड़ा भाग" बनता है। आवेदक का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक (लगभग 87 प्रतिशत) बनता है और इसलिए उसे विचाराधीन उत्पाद का एक बड़ा उत्पादक माना जाना चाहिए। आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से किया गया है और इसलिए वह पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(1) के अंतर्गत आधार संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करता है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

39. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों को नोट किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमों में प्राधिकारी को अन्य बातों के साथ-साथ प्रत्येक मामले के गुण-दोष के आधार पर संबद्ध वस्तु का आयात करने वाले किसी घरेलू उत्पादक घरेलू उद्योग के दायरे में लाने या उसे बाहर रखने का विवेकाधिकार है। पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में 1 दिसंबर, 2011 के संशोधन से स्थिति में परिवर्तन नहीं हुआ है अपितु इसे स्पष्ट किया गया है। पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में यह निर्धारित है कि ऐसे घरेलू उत्पादकों, जो या तो निर्यातकों या आयातकों से संबंधित हैं या जिन्होंने स्वयं आरोपित पाटित वस्तुओं का आयात किया है, को कुछ स्थितियों में घरेलू उद्योग का निर्धारण करते समय अलग रखा जा सकता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादक को जांच, अनुसंधान एवं विकास, सीड मार्केटिंग के प्रयोजनार्थ (गुणवत्ता आदि की जांच हेतु उत्पाद का आयात) सहित एक या अधिक सदाशयपूर्ण कारणों से विचाराधीन उत्पाद का आयात करना चाहिए।

40. यह नोट किया जाता है कि आवेदक कंपनी ने वर्ष 2010-11 में कारखाने में उत्पादित उत्पाद की तुलना करने के लिए अलग-अलग मोटाई की संबद्ध वस्तु का अल्प मात्रा में *** सी बी एम का आयात किया है जो कुल आयातों की लगभग ***% बनती है। यह नोट किया जाता है कि आवेदक द्वारा ये आयात अपने उत्पादों के अनुसंधान एवं विकास हेतु कंपनी द्वारा उत्पादित उत्पाद की बैंच मार्किंग के लिए किए गए थे न कि व्यापार करने के लिए आवेदक के उत्पादन की तुलना में आयात की मात्रा नगण्य है। यह भी नोट किया

जाता है कि आयात कंपनी के मूल कार्यकलाप नहीं हैं और इसने घरेलू उत्पादक की अपनी भूमिका का त्वाग नहीं किया है ।

41. आवेदन के अनुसार भारत में उत्पाद के दो उत्पादक अर्थात् मै. बालाजी एक्शन बिल्डिंग (आवेदक) और मै. ग्रीन प्लाई इंडस्ट्रीज लि. है । मै. ग्रीन प्लाई इंडस्ट्रीज लि. ने वर्तमान आवेदन का समर्थन किया है । इस प्रकार समर्थनकर्ता के साथ आवेदक का उत्पादन भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन का 100 प्रतिशत बनता है ।

42. आवेदक ने दावा किया है कि आवेदक का जोर आयातों के बजाय अपने खुद के उत्पादन पर है और इसलिए आवेदक को पाटनरोधी नियमों के अर्थ के भीतर पात्र घरेलू उद्योग माना जाना चाहिए ।

43. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए ऐसे किसी उत्पादक पर घरेलू उद्योग के रूप में विचार न किया जाना अनुचित होगा । प्राधिकारी आवेदक के इस दावे को कारगर मानते हैं कि उसे भारत में संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादक के रूप में अलग नहीं रखा जाना चाहिए और उसे इस आवेदन के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग माना जाए ।

44. आवेदक का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक (लगभग 87 प्रतिशत) बनता है और इसलिए वह संबद्ध वस्तु का एक प्रमुख उत्पादक है । अतः यह आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से किया गया है और वह पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अंतर्गत "आधार संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करता है । इसके अलावा आवेदक पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अनुसार "घरेलू उद्योग" है ।

ड. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

45. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार है :

एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी), मलेशिया, (जे बी) एस डी एन.बी एच डी (ई जे बी) मलेशिया तथा एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलाई) एस डी एन.बी एच डी (ई एफ एन), मलेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

- कच्ची सामग्री और उपयोगिताओं के लिए घरेलू उद्योग के उच्च खपत मानकों के आधार पर सामान्य मूल्य का गलत निर्धारण किया गया है जबकि निर्यातकों के लिए कच्ची सामग्री एवं उपयोगिता हेतु खपत मानक काफी कम है ।

मै. पी टी मसारी डिबसपाकट फाइबर, इंडोनेशिया और मै. पी टी सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड (एस पी एफ), इंडोनेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

- प्रतिनिधिक देश का चयन : बाजार अर्थव्यवस्था वाले उचित तीसरे देश का चयन करने के लिए प्राधिकारी अनुबंध-1 के पैरा 7 में निर्धारित उचित प्रक्रिया का पालन करने में विफल रहे हैं । प्रक्रिया के अंतर्गत घरेलू उद्योग के लिए जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना ऐसे चयन का प्रस्ताव करने हेतु प्राधिकारी के समक्ष पर्याप्त साक्ष्य और उत्पादकों के नाम उपलब्ध कराना अपेक्षित था । प्रस्तावित तीनों देशों में से बाजार अर्थव्यवस्था वाले उचित तीसरे देश का चयन करने के लिए न तो घरेलू उद्योग ने कोई सामग्री या साक्ष्य

उपलब्ध कराया और न ही प्राधिकारी ने कोई प्रयास किया । उचित सूचना मांगने के लिए प्राधिकारी ने कोई प्रयास नहीं किया । इसके अलावा प्राधिकारी यह समझने में विफल रहे कि पैरा 7 के अंतर्गत विधिक दायित्व के बावजूद वह बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश या प्रतिनिधिक देश के चयन के बारे में अनुचित विलंब के बिना जांच के पक्षकारों को सूचना देने में विफल रहे । आवेदक ने यह भी निर्दिष्ट नहीं किया कि संबद्ध वस्तु का उत्पादन करने वाले ऐसे कई देशों की पूरी जानकारी होने और वर्तमान जांच में उनकी भागीदारी के बावजूद किस देश के लिए प्रतिनिधि देश के रूप में लिए जाने का प्रस्ताव है ।

- निर्यात कीमत में समायोजन : जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में प्राधिकारी ने केवल निर्यातों की कारखाना कीमत की गणना करने हेतु समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, प्रलेखन प्रभारों, निकासी प्रभारों तथा प्रदर्शन प्रभारों पर विचार किया है परंतु याचिका में आवेदक ने कमीशन पर भी विचार किया है । इस संबंध में प्राधिकारी को जांच शुरुआत के प्रयोजनार्थ प्रयुक्त अंतिम निर्यात कीमत उपलब्ध करानी चाहिए । इसके अलावा आवेदक द्वारा प्रभारित कमीशन काफी अधिक है । अधिकांश मामलों में कमीशन एफ ओ बी कीमत का 1 प्रतिशत माना जाता है ।

घरेलू उद्योग की ओर से किए गए अनुरोध

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि बाजार अर्थव्यवस्था वाले उचित तीसरे देश आदि का चयन करने के लिए प्राधिकारी अनुबंध-1 के पैरा 7 के अंतर्गत उचित प्रक्रिया का पालन करने में विफल रहे हैं, यह बताया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा पैरा 7 को लागू करने का चरण अभी आया ही नहीं है । आवेदक का अनुरोध है कि चीन जन गण के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत या परिकलित मूल्य के आधार पर इसलिए किया जा सकता है क्योंकि आवेदक के पास संगत सूचना उपलब्ध नहीं है । यह नोट किया जाता है कि ऐसा सामान्य मूल्य "समान वस्तु के लिए व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में तुलनीय कीमत होनी चाहिए वह ऐसे बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में खपत के लिए नियत हो ।" इस आधार पर सामान्य मूल्य निकालने के लिए प्राधिकारी के लिए उत्पादन लागत तथा अन्य सभी संबंधित सूचना एवं साक्ष्य (व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समस्त सूचना सहित) के साथ ऐसे तीसरे देश में किसी सहयोगी उत्पादन द्वारा की गई समस्त घरेलू बिक्रियों के बारे में पूर्ण एवं व्यापक सत्यापनीय सूचना की जरूरत होगी । इस संबंध में करार के अनुच्छेद 2.4 में निर्धारित उचित तुलना के सिद्धांत भी प्रासंगिक नहीं है । आवेदक बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में किसी उत्पादक से ऐसी सूचना भी प्राप्त नहीं की कर सका ।

आवेदक का अनुरोध है कि चीन जन.गण. के लिए भारत एक उचित प्रतिनिधिक देश है । भारत को प्रतिनिधिक देश माने जाने से न केवल सही और पर्याप्त सूचना प्राप्त होगी अपितु यह मानने का कोई तथ्यात्मक आधार नहीं है कि भारत एक उचित प्रतिनिधिक देश नहीं होगा । अन्य जांच एजेंसियों ने भी भारत को एक उचित प्रतिनिधिक देश माना है । चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण उपर्युक्त में से किसी एक आधार पर किया जा सकता है । इस प्रकार चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा लाभ सहित भारत में विधिवत समायोजित (क) भारत में कीमत, और (ख) भारत में उत्पादन लागत के आधार पर किया जा सकता है । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि बिक्री कीमत घाटा देने वाली कीमत है । सामान्य मूल्य का तदनुसार निर्धारण विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के आधार पर किया गया है ।

इसके अलावा, आवेदक ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 का हवाला दिया है जिसमें यह उपबंध है कि प्राधिकारी इस बात की जांच करेंगे कि क्या चीन में उत्पाद या उत्पादक बाजार अर्थव्यवस्था के वातावरण में प्रचालन कर रहे हैं। इस संबंध में प्राधिकारी के लिए संबंधित पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान करना अपेक्षित है। तभी प्राधिकारी पैरा 7 को लागू करने पर विचार कर सकते हैं और तभी प्रतिनिधिक देश का प्रश्न उठेगा। इस चरण पर ऐसे प्रतिनिधिक देश की सूचना का तात्पर्य प्राधिकारी की ओर से यह माने से होगा कि चीन के निर्यातक किसी भी हालत में उत्पाद या कंपनियों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का दावा नहीं करेंगे।

• जहां तक इस तर्क का संबंध है कि जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में निर्यात कीमत में समायोजन संबंधी अधिसूचना में निर्यात कीमत में समायोजन में कमीशन शामिल नहीं होता है जबकि आवेदक ने आवेदन में कमीशन के लिए समायोजन का दावा किया है; प्राधिकारी के लिए आवेदक के सभी दावों को स्वीकार करने की जरूरत नहीं है; न तो कमीशन के बारे में दावे को अस्वीकार किए जाने से पाटन मार्जिन में काफी अंतर आ जाएगा। आवेदन में पाटन का पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य होना चाहिए। हितबद्ध पक्षकार का यह तर्क नहीं है कि कमीशन को स्वीकार या अस्वीकार किए जाने से स्थिति में अत्यधिक अंतर आ जाएगा।

• आवेदक को ज्ञात सूचना के अनुसार संबद्ध देशों में कई उत्पादक विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन कर रहे हैं। कोई उत्तर स्वीकार करने से पूर्व आवेदक का प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे कृपया भारतीय सीमाशुल्क के आंकड़ों के साथ इन हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए दावों की प्रति जांच करें। कच्ची सामग्री की बढ़ती हुई कीमत के बावजूद आयात की स्थिर कीमत पाटन का एक स्पष्ट साक्ष्य है। यह देखा जाएगा कि निविष्टि की लागत में भारी वृद्धि हुई है। यदि आयात कीमत का समायोजन निविष्टि लागत में वृद्धि के लिए किया जाता है तो यह देखा जाएगा कि आयात कीमत में वस्तुतः कमी आई है। अर्थात् लागत समायोजित आयात कीमत में इस अवधि के दौरान भारी गिरावट प्रदर्शित होगी। अतः यह स्पष्ट है कि इस अवधि में पाटन में वृद्धि हुई है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

46. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक घरेलू उद्योग के लिए उसके पास उचित रूप से उपलब्ध सूचना प्रदान करना अपेक्षित होता है और वर्तमान मामले में जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए पर्याप्त सूचना उपलब्ध कराई गई थी।

47. जहां तक इस मुद्दे का संबंध है कि कच्ची सामग्री और उपयोगिता के लिए घरेलू उद्योग के उच्च खपत मानकों के आधार पर सामान्य मूल्य का गलत निर्धारण किया गया है जबकि निर्यातकों के लिए कच्ची सामग्री और उपयोगिता का खपत मानक काफी कम है, यह गलत है। जैसा कि जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में दर्ज किया गया है, आवेदक ने परिकलित सामान्य मूल्य की नीति पर विचार करते हुए संबद्ध देशों में सामान्य मूल्य का अनुमान लगाया था। इस प्रयोजनार्थ ऐसी सूचना को अपनाकर उसने विदेशी उत्पादकों की उत्पादन लागत का अनुमान लगाया है जो उचित है और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है। प्राधिकारी ने इस जांच की शुरुआत के प्रयोजनार्थ परिकलित मूल्य के आधार पर संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य पर प्रथम दृष्टया विचार किया था। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने पाटन मार्जिन के उचित निर्धारण को सुविधाजनक बनाने के लिए निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर कर जांच की प्रक्रिया में

सहयोग करने के बारे में संबद्ध देशों के संबंधित निर्यातकों/उत्पादकों से आशा की थी ताकि सामान्य मूल्य का निर्धारण संबंधित प्रश्नावली के उत्तरों के आधार पर किया जा सके। यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों (चीन जन.गण. को छोड़कर) के कुछ निर्यातकों/उत्पादकों ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है। प्राधिकारी द्वारा मांगी गई अतिरिक्त सूचना/आंकड़ों के साथ निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर की जांच से यह पता चलता है कि पाटन मार्जिन अत्यधिक सकारात्मक है।

48. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि बाजार अर्थव्यवस्था वाले उचित तीसरे देश आदि का चयन करने के लिए प्राधिकारी अनुबंध-1 के पैरा 7 के अंतर्गत उचित प्रक्रिया का पालन करने में विफल रहे हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह मुद्दा इंडोनेशियाई निर्यातक ने उठाया है। जिसे इस मुद्दे से नहीं जोड़ा जाना चाहिए क्योंकि पैरा 7 उन सब पर लागू नहीं होती है। चीन के किसी निर्यातक/उत्पादक ने इस पर सवाल नहीं उठाया है। इसके होते हुए भी प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह अनुरोध किया था कि चीन जन गण के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत या परिकलित मूल्य के आधार पर नहीं किया जा सकता क्योंकि उनके पास संगत सूचना नहीं थी। यह नोट करना जरूरी है कि उचित बाजार अर्थव्यवस्था वाला तीसरा देश संबंधित देश के विकास के स्तर और संदर्भाधीन उत्पाद को ध्यान में रखते हुए तुलनीय होना चाहिए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसके पास ऐसी कोई विश्वसनीय सूचना नहीं है जो उसे इस जांच की शुरुआत के समय उपलब्ध कराई गई हो। इसके अलावा, आवेदक ने यह अनुरोध किया है कि चीन जन.गण. के लिए भारत एक उचित प्रतिनिधिक देश है क्योंकि न केवल भारत को डब्ल्यू टी ओ सदस्यों द्वारा विगत में चीन जन गण के लिए प्रतिनिधि देश माना गया है अपितु इससे सही और पर्याप्त सूचना भी प्राप्त होगी। इस प्रकार सामान्य मूल्य का निर्धारण विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के आधार पर किया गया है। ऐसा करते समय प्राधिकारी ने आवेदक के दावों का सामान्यीकरण किया है और इस प्रकार यह निर्धारित किया है कि जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के संबंध में रिकॉर्ड में पर्याप्त साक्ष्य है।

49. जहां तक जांच की शुरुआत के समय निर्यात कीमत में समायोजनों का संबंध है, यह स्पष्ट किया जाता है कि प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की कारखाना कीमत का अनुमान लगाने के प्रयोजनार्थ समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, प्रलेखन प्रभार, निकासी प्रभार और प्रदर्शन प्रभार पर विचार किया था और कमीशन के संबंध में दावे पर ध्यान नहीं दिया था। इस प्रकार हितबद्ध पक्षकार के सुझाव के अनुसार एफ ओ बी कीमत के 1 प्रतिशत की दर से कमीशन पर विचार करने के बजाए प्राधिकारी ने इसके लिए निर्यात कीमत में कोई समायोजन नहीं किया था।

50. प्राधिकारी ने निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रदान करने की सलाह देते हुए संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भेजी। प्रश्नावलियों का उत्तर निम्नलिखित से प्राप्त हुआ था :

क्र.सं.	उत्पादक/निर्यातक का नाम
1	मै. मंगा-फॉरमोस्ट एस डी एन, बी एच डी, मलेशिया
2	मै. मेसोनाइट कम्पोनेंट्स, आयरलैंड
3	मै. मरबोक एम डी एफ लंका (प्रा.) लि., श्रीलंका

4.	मै. सेगामेट पेनल बोर्डर्स एस डी एन, बी एच डी, मलेशिया
5.	मै. पी.टी. मसारी इवाइसपकाट, इंडोनेशिया
6.	मै. पी.टी. सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड, इंडोनेशिया
7.	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी), मलेशिया
8.	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन बी एच डी, मलेशिया
9.	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलई), एस डी एन. बी एच डी (ई एफ एन), मलेशिया
10.	मै. डाइकेन मिरी एस डी एन. बी एच डी, मिरी सरावक, मलेशिया

51. मै. डेकन मिरी एस डी एन. बी एच डी, मिरी सरावक, मलेशिया ने यह बताया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है ।

प्राधिकारी द्वारा चीन जन गण के संबंध में बाजार अर्थव्यवस्था के दावों की जांच

52. प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत और डब्ल्यू टी ओ के अन्य सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांचों में पिछले तीन वर्षों में चीन जन गण को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है । चीन जन गण को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है जो पाटनरोधी नियमों के अनुसार निर्यातक देश या अलग-अलग निर्यातकों द्वारा इस अनुमान के खंडन के अधीन है ।

53. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 के अनुसार गैर बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन तभी किया जा सकता है यदि चीन जन गण के निर्यातक/उत्पादक पैरा 8 के उप पैरा (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य प्रदान करें और इसके विपरीत तथ्यों की पुष्टि करें । चीन जन गण के संबद्ध वस्तु के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के उत्तर में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 के उप पैरा (3) में यथाउल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंड पर विचार कर सकें कि क्या:-

- ऐसे देश में संबंधित फर्मों के कीमतों, लागत और निविष्टियों, कच्ची सामग्रियों, प्रौद्योगिकी और श्रम की लागत, उत्पादन बिक्रियों और निवेश से संबंधित निर्णय बाजार संकेतों के प्रतिक्रियास्वरूप लिए जाते हैं जिनमें पूर्ति और मांग प्रदर्शित होता है और इस संबंध में राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागतें पर्याप्त रूप से बाजार मूल्यों को प्रदर्शित करती हैं ।
- ऐसी फर्मों की उत्पादन लागतें और वित्तीय स्थिति विशेष रूप से परिसंपत्तियों के हास, अन्य बड़े-खातों, वस्तु विनिमय व्यापार और ऋणों की क्षतिपूर्ति के जरिए भुगतान की दृष्टि से पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से प्राप्त पर्याप्त विकृतियों के अधीन हैं ।

- ऐसी फर्मों दिवालियापन और संपत्ति संबंधी उन कानूनों के अधीन हैं जो इन फर्मों की कानूनी निश्चितता और प्रचालन के स्थायित्व की गारंटी देते हैं, और
- विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर पर किए जाते हैं ।

54. प्राधिकारी ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में यह संकेत दिया था कि आवेदक ने यह दावा किया है कि चीन जन गण को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना जाना चाहिए और इसलिए चीन जन.गण. के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 के अनुसार किया जाना चाहिए । आवेदक ने यह अनुरोध किया है कि चीन जन गण के संबंध में सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ वह बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश से सूचना प्राप्त नहीं कर सके हैं और उन्होंने यह दलील दी है कि चीन जन गण में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु भारत पर उचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के रूप में विचार किया जा सकता है । प्राधिकारी ने चीन जन गण के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को सूचना दी कि उनका प्रस्ताव पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 के मददेनजर आवेदक के दावे की जांच करने का है । अतः चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों से अन्य बातों के साथ-साथ पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 के उप पैरा (3) में किए गए उल्लेख के अनुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सकें कि क्या चीन जन गण के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किया जा सकता है ।

55. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा जारी जांच शुरुआत की सूचना के बाद चीन के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था की प्रश्नावली के उत्तर सहित प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है और इस प्रकार गैर बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान के खंडन की मांग नहीं की गई है ।

चीन जन गण के निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण

56. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 में यह उपबंध है कि :

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा, जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहां उचित हो उचित

समयसीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा । जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी अनुचित विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी ।

57. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसे किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत या परिकलित मूल्य के बारे में रिकॉर्ड में कोई पर्याप्त सूचना और साक्ष्य उपलब्ध नहीं है जिसका खासकर संबद्ध वस्तु पर विचार करते हुए चीन जन गण की तुलना में विकास का तुलनीय स्तर हो । अतः उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के द्वितीय परंतुक के अनुसार उपलब्ध उचित आधार पर चीन जन गण के निर्यातकों/उत्पादकों के बारे में सामान्य मूल्य के अनंतिम निर्धारण की कार्यवाही की है । तदनुसार, विचाराधीन उत्पाद के कारखाना सामान्य मूल्य का अनंतिम निर्धारण विधिवत समायोजित उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर किया गया है । सामान्य मूल्य का परिकलन निम्नलिखित कार्य प्रणाली के अनुसार किया गया है ।

चीन जन गण के मामले में सामान्य मूल्य के परिकलन हेतु अपनाई गई कार्य प्रणाली

58. तदनुसार, प्राधिकारी ने चीन जन गण में उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन निम्नलिखित आधार पर किया है :

- घरेलू उद्योग द्वारा खरीदी गई निविष्टि की कीमत,
- क्षति रहित कीमत में विचारित घरेलू उद्योग की कच्ची सामग्री का यथोचित खपत मानक
- क्षति रहित कीमत में विचारित घरेलू उद्योग की उपयोगिता लागत और परिवर्तन लागत
- उपर्युक्तानुसार, सी एन वी हेतु उत्पादन की कुल लागत निकालने के बाद लाभ की अनुमति दी गई है ।

59. प्रारंभिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य *** अम डा./सी वी एम बनता है ।

इंडोनेशिया, मलेशिया और श्रीलंका के संबंध में सामान्य मूल्य-प्रतिवादी निर्यातक

60. प्रश्नावली का उत्तर निम्नलिखित कंपनियों ने दायर किया था :

क्र.सं.	उत्पादक/निर्यातक का नाम
1	मै. मंगा-फॉर्मोस्ट एस डी एन, बी एच डी, मलेशिया
2	मै. मेसोनाइट कम्पोनेंट्स, आयरलैंड
3	मै. मरबोक एम डी एफ लंका (प्रा.) लि., श्रीलंका
4	मै. सेगामेट पेनल बोर्डर्स एस डी एन, बी एच डी, मलेशिया

5.	मै. पी.टी. मसारी ड्वाइसपकाट, इंडोनेशिया
6.	मै. पी.टी. सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड, इंडोनेशिया
7.	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी), मलेशिया
8.	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन बी एच डी, मलेशिया
9.	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलई), एस डी एन. बी एच डी (ई एफ एन), मलेशिया
10.	मै. डाइकेन मिरी एस डी एन. बी एच डी, मिरी सरावक, मलेशिया

61. मै. मैगना-फार्मोस्ट एस डी एन तथा मै. मैसोनाइट कंपोनेंट्स, आयरलैंड ने यह उल्लेख किया है कि उन्होंने भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है और केवल डोर स्किन का निर्यात किया है। चूंकि यह पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि डोर स्किन विचाराधीन उत्पाद का भाग नहीं है, इसलिए उचित समझे गए आगे सत्यापन के अधीन उनके मामले में अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु उनके आंकड़ों की आगे जांच नहीं की गई है।

सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु प्रतिवादी निर्यातकों के लिए अपनाई गई सामान्य कार्य प्रणाली

62. प्राधिकारी ने अपेक्षित सूचना प्रदान करने वाले सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के बारे में अलग-अलग पाटन मार्जिन निर्धारित किया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अपनाई गई सामान्य प्रणाली निम्नानुसार है :

63. सर्वप्रथम यह देखा गया था कि क्या उनकी घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण की अनुमति देते समय उनके घरेलू बाजारों में प्रतिवादी निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री प्रतिनिधिक है और क्या प्रतिवादियों द्वारा प्रदत्त और प्राधिकारी द्वारा मांगे गए आंकड़ों के अनुसार व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच पूरी होती है। जहां प्रतिवादियों ने अपने घरेलू बाजारों में समान वस्तु की बिक्री के सौदेवार ब्यौरे प्रदान किए हैं, वहां आगे जांच तथा सत्यापन के अधीन व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच और पर्याप्तता की जांच करने के बाद संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य के निर्धारण पर भरोसा किया गया है।

64. ओ सी टी जांच करने के लिए उत्पादन लागत की जांच दायर किए गए निर्यातक/उत्पादक प्रश्नावली के उत्तरों के संदर्भ में और प्राधिकारी द्वारा मांगी गई अतिरिक्त सूचना के संबंध में की गई है जो आगे जांच और सत्यापन के अधीन है। जहां दायर की गई सूचना/आंकड़ों में विसंगतियां पाई गई हैं, वहां प्राधिकारी ने आगे जांच और सत्यापन के अधीन रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत का अनंतिम परिकलन किया है।

65. जहां कोई घरेलू बिक्री या कोई पर्याप्त घरेलू बिक्री नहीं हुई है, वहां प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर की है।

66. प्रतिवादियों ने अपने उत्तरों में अपने घरेलू बाजारों में संबद्ध वस्तु की की गई बिक्री के सौदेवार ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं। आगे जांच और सत्यापन के अधीन संबद्ध वस्तु की पृथक भारित औसत घरेलू बिक्री कीमत निर्धारित करने के लिए इस प्रकार से प्रदत्त सूचना पर अनंतिम रूप से भरोसा किया गया है। इसके अलावा,

समस्त घरेलू बिक्रियों के सौदों की जांच संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत/परिकलित लागत के संदर्भ में की गई थी ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या घरेलू बिक्रियां व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में की गई थीं। यह भी देखा गया था कि क्या घाटे पर किए गए सौदे बिक्री के 20 प्रतिशत से अधिक बनते हैं या नहीं। जहां लाभ पर किए गए घरेलू बिक्री के सौदे कुल बिक्री के 80 प्रतिशत से अधिक पाए गए थे वहां समस्त घरेलू बिक्रियों की भारित औसत कीमत पर विचार किया गया है। तथापि, जहां लाभदायी बिक्री मात्रा 80 प्रतिशत से कम पायी गई है वहां लाभदायी घरेलू बिक्री की भारित औसत कीमत पर विचार किया गया है।

इंडोनेशिया, मलेशिया और श्रीलंका के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण

मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी)

67. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह देखा जाता है कि कंपनी उत्पाद कोडिंग प्रणाली का पालन नहीं करती है और उत्पाद के प्रकार की पहचान बीजक/बिक्री संविदा आदि में दिए गए विवरण के आधार पर की जाती है। तथापि, तुलना के प्रयोजनार्थ निर्यातक ने कंपनी द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित गुणधर्मों/विशेषताओं के आधार पर कंपनी द्वारा बेचे गए उत्पाद के प्रत्येक प्रकार के लिए एक उत्पाद नियंत्रण संख्या (पी सी एन) ईजाद की है :

- क. कम उत्सर्जनकारी बोर्ड
- ख. मानक/सामान्य बोर्ड
- ग. सेंडिंग प्रक्रिया
- घ. मोटाई
- ड. चौड़ाई
- च. लंबाई

68. यह बताया गया है कि घरेलू बाजार और निर्यात बाजारों में बेची गई समान पी सी एन वाली वस्तु सामान्य रूप है। इसके अलावा, कंपनी ने यह दावा किया है कि घरेलू बाजार में बेची गई या उत्पादित अथवा भारत से इतर देशों को बेची गई वस्तु में भारत को निर्यातित वस्तु की तुलना में भौतिक/तकनीकी/रासायनिक विशेषताओं में कोई अंतर नहीं है।

69. कंपनी द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली के उत्तर का अवलोकन किया गया था। यह पाया गया था कि प्रतिवादी ने अपने उत्तर की संगत परिशिष्टों में संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत तथा अन्य ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं। यह नोट किया जाता है कि मै. एवर ग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी) की मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन. बरहाड (ई जे बी) नामक एक सहायक कंपनी है जिसने भी प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है। इसके अलावा, यह भी नोट किया गया है कि एक अन्य गुप कंपनी मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलाई) एस डी एन. बी एच डी है जो घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु का उत्पादन और बिक्री कर रही है परंतु उसने इस कंपनी की ओर से कोई उत्तर दायर नहीं किया है। प्राधिकारी के प्रश्न के उत्तर में यह स्पष्ट

किया गया था कि उत्तर इसलिए दायर नहीं किया गया है क्योंकि कंपनी ने भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है।

70. कंपनी की वैबसाइट पर उपलब्ध प्रकाशित आंकड़ों से यह नोट किया जाता है कि इस कंपनी की ऐसी कई संबद्ध कंपनियां हैं जो बागान, विद्युत उत्पादन, संबद्ध वस्तु के विनिर्माण हेतु अपेक्षित ग्लू सहित संबद्ध वस्तु के उत्पादन से जुड़े कार्यकलाप कर रही हैं। इसे अलावा, कंपनी द्वारा परिशिष्ट 7 और 8 में प्रस्तुत सूचना में अननुमत्य प्राप्तियों के लिए ऋण शामिल हैं। यह भी नोट किया जाता है कि यद्यपि कंपनी ने यह बताया है कि विश्लेषण पी सी एन वार आधार पर किया जाए परंतु यह नोट किया जाता है कि कंपनी पी सी एन वार आधार पर परिशिष्ट 8 ख के अनुसार आंकड़े नहीं रखती है। अतः प्रारंभिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ समूचे विचाराधीन उत्पाद के लिए विश्लेषण किया गया है। उपरोक्तानुसार अननुमत्य ऋणों के लिए समायोजनों के बाद यह नोट किया जाता है कि कंपनी ने घरेलू बिक्रियों पर लाभ कमाया है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने आगे जांच और सत्यापन के अधीन घरेलू बिक्री के आधार पर सामान्य मूल्य का अनंतिम निर्धारण किया है जो *** अम डा./सी वी एम बनता है।

मै. एवरग्रीन फाइबरबोर्ड (जे बी) एस डी एन. बरहाड (ई जे बी)

71. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह देखा जाता है कि कंपनी उत्पाद कोडिंग प्रणाली का पालन नहीं करती है और उत्पाद के प्रकार की पहचान बीजक/बिक्री संविदा आदि में दिए गए विवरण के आधार पर की जाती है। तथापि, तुलना के प्रयोजनार्थ निर्यातक ने कंपनी द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित गुणधर्मों/विशेषताओं के आधार पर कंपनी द्वारा बेचे गए उत्पाद के प्रत्येक प्रकार के लिए एक उत्पाद नियंत्रण संख्या (पी सी एन) ईजाद की है :

- क. कम उत्सर्जनकारी बोर्ड
- ख. मानक/सामान्य बोर्ड
- ग. सैंडिंग प्रक्रिया
- घ. मोटाई
- ड. चौड़ाई
- च. लंबाई

72. घरेलू बाजार और निर्यात बाजारों में बेची गई समान पी सी एन वाली वस्तु सामान्य रूप है। इसके अलावा, कंपनी ने यह दावा किया है कि घरेलू बाजार में बेची गई या उत्पादित अथवा भारत से इतर देशों को बेची गई वस्तु में भारत को निर्यातित वस्तु की तुलना में भौतिक/तकनीकी/रासायनिक विशेषताओं में कोई अंतर नहीं है।

73. कंपनी द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली के उत्तर का अवलोकन किया गया था। यह नोट किया जाता है कि मै. एवर ग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन. बरहाड (ई जे बी) मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई जे बी)

की एक सहायक कंपनी है। इसके अलावा, यह भी नोट किया गया है कि एक अन्य ग्रुप कंपनी मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलाई) एस डी एन. बी एच डी है जो घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु का उत्पादन और बिक्री कर रही है परंतु उसने इस कंपनी की ओर से कोई उत्तर दायर नहीं किया है। प्राधिकारी के प्रश्न के उत्तर में यह स्पष्ट किया गया था कि उत्तर इसलिए दायर नहीं किया गया है क्योंकि कंपनी ने भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है।

74. कंपनी के उत्तर का अवलोकन करने पर उत्तर की परिशिष्ट 3,4,7 और 8 के बारे में कुछ विसंगतियां पाई गई थीं। कंपनी को इन्हें स्पष्ट करने का एक अवसर दिया गया था। यद्यपि, कंपनी ने उठाए गए मुद्दों को स्पष्ट करने की मांग की थी परंतु इसे संतोषजनक नहीं पाया गया था क्योंकि दायर की गई सूचना विरोधाभासी थी। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी आगे जांच और सत्यापन के अधीन सामान्य मूल्य का अनंतिम परिकलन करने के लिए कार्रवाई करने हेतु बाध्य हुए हैं जो *** अम डा./सी वी एम बनता है।

75. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि यह कंपनी दूसरी, कंपनी की सहायक कंपनी होने के कारण प्राधिकारी ने दोनों प्रतिवादियों अर्थात् मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड, बरहाड और मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन. बरहाड के लिए एकल पाटन मार्जिन निर्धारित करने का अनंतिम निर्णय लिया है।

मै. सेगामेट पैनल बोर्ड्स एस डी एन. बी एच डी

76. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह देखा जाता है कि कंपनी ने यह दावा किया है कि भारत और घरेलू बाजार में बेचे गए उत्पाद समनुरूप हैं लेकिन प्रत्येक मोटाई की बाजार में अपनी कीमत होती है। एस पी बी केवल 2.2 मिमी से 6.00 मिमी तक की मोटाई के पतले एम डी एफ का ही उत्पादन करती है।

77. कंपनी द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली के उत्तर का अवलोकन किया गया था। यह पाया गया था कि उत्तर में संगत परिशिष्टों में संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत और अन्य ब्यौरे प्रदान किए गए हैं। प्राधिकारी द्वारा मांगी गई अतिरिक्त सूचना/आंकड़ों के साथ कंपनी द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तर की जांच से यह पता चलता है कि लागतेतर मदों से प्राप्त वसूलियों को छोड़ने के बाद संबद्ध वस्तु की समग्र बिक्री पर कंपनी को वित्तीय घाटा हुआ है। प्राधिकारी के प्रश्न के उत्तर में कंपनी ने यह स्पष्ट किया कि संबद्ध वस्तु के घरेलू प्रचालनों में घाटा हो रहा है जबकि यह घाटा केवल तीसरे देश को हुए निर्यातों (भारत को छोड़कर) हो रहा है। आंकड़ों के आगे जांच और सत्यापन के अधीन रहते हुए प्राधिकारी ने कंपनी के तर्क को स्वीकार किया है। कंपनी द्वारा दावा किए गए समायोजनों को आगे जांच और सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। इस प्रकार कंपनी की घरेलू बिक्री के आधार पर सामान्य मूल्य *** अम डा./सी वी एम बनता है।

पी टी सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड

78. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह देखा जाता है कि कंपनी ने यह दावा किया है कि घरेलू बाजार में बेची गई वस्तु उसी विनिर्देशनों के समनुरूप है। अतः दोनों बाजारों में कीमत की तुलना प्रत्येक उत्पाद कोड के लिए करने की मांग की गई है।

79. कंपनी द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली के उत्तर का अवलोकन किया गया है यह पाया गया है कि प्रतिवादी ने अपने उत्तर की संगत परिशिष्टों में संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत और अन्य ब्यौरे प्रदान किए हैं। तथापि,

कंपनी ने कोड वार परिशिष्ट 8 ख में ब्यौरे नहीं दिए हैं। कंपनी के अनुरोधों की जांच करने के बाद कुछ विसंगतियां पाई गई थीं जिनमें सुधार करने के लिए कंपनी को सलाह दी गई थी। हालांकि आंकड़ों में अभी भी कुछ विसंगतियां हैं, तथापि आगे सत्यापन के अधीन कंपनी द्वारा दायर सूचना/आंकड़ों को अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। यह देखा जाता है कि घरेलू बिक्री सौदे काफी घाटे पर किए गए हैं और इस प्रकार सत्यापन के अधीन परिशिष्ट 8 ख के आंकड़ों के आधार पर सामान्य मूल्य का अनंतिम परिकलन किया गया है। तदनुसार निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया है जो *** अम डा./सी वी एम बनता है।

पी टी मसारी डिवसपाकट फाइबर

80. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह देखा जाता है कि कंपनी ने यह दावा किया है कि वह अधिकांशतः घरेलू बाजार में प्रीमियम क्वालिटी के उत्पाद की बिक्री करती है। उत्पाद की गुणवत्ता के बारे में भारतीय बाजार कोई खास ध्यान नहीं देता है इसलिए वे मुख्यतः भारत को ग्रेड ए-2 और बी उत्पादों की बिक्री करते हैं। तथापि, घरेलू बाजार में बेची गई वस्तु कुछ विनिर्देशनों के लिए निर्यातित वस्तु के समनुरूप है। अतः दोनों बाजारों में कीमत की तुलना प्रत्येक उत्पाद कोड के लिए की जानी चाहिए।

81. कंपनी द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली के उत्तर का अवलोकन किया गया है यह पाया गया है कि प्रतिवादी ने अपने उत्तर की संगत परिशिष्टों में संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत और अन्य ब्यौरे प्रदान किए हैं। तथापि, कंपनी ने कोड वार परिशिष्ट 8 ख में ब्यौरे नहीं दिए हैं। कंपनी द्वारा दायर सूचना/आंकड़ों को सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। तदनुसार, सामान्य मूल्य का निर्धारण पर्याप्तता और ओ सी टी जांच करने के बाद किया गया है। कंपनी द्वारा दावा किए गए समायोजनों को सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। तदनुसार निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया है जो *** अम डा./सी वी एम बनता है।

मै. मरबोक एफ डी एफ लंका (प्राइवेट) लिमिटेड

82. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह देखा जाता है कि कंपनी ने यह दावा किया है कि मोटाई और ब्रांड को छोड़कर भारत को निर्यातित वस्तु की तुलना में घरेलू देश में संबद्ध वस्तु के बीच कोई अंतर नहीं है और यह कि मोटाई और ब्रांड को छोड़कर भारत को निर्यातित वस्तु की भौतिक/तकनीकी/रासायनिक विशेषताओं में घरेलू बाजार में बेची गई या उत्पादित या भारत से इतर देशों को बेची गई वस्तु में कोई अंतर नहीं है।

83. कंपनी द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली के उत्तर का अवलोकन किया गया। यह पाया गया कि प्रतिवादी ने अपने उत्तर की संगत परिशिष्टों में संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत और अन्य ब्यौरे प्रदान किए हैं। कंपनी द्वारा दायर उत्तर की जांच से यह पता चलता है कि कंपनी ने ब्याज मुक्त ऋण के रूप में अपनी नियंत्रक कंपनी से भारी वित्तीय सहायता प्राप्त की है। कंपनी द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तर की परिशिष्ट 7 और 8 में वित्तीय लागत के लिए कोई व्यय नहीं दर्शाया गया है। यह नोट किया गया कि इस प्रकार से प्राप्त ऋण पर ब्याज लागत पर विचार करने के बाद कंपनी को अपने घरेलू प्रचालनों में घाटा हुआ है। अतः प्राधिकारी ने आगे जांच और सत्यापन के अधीन ब्याज लागत के लिए उचित समायोजन के बाद उनकी उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का अनंतिम परिकलन किया है जो *** अम डा./सी वी एम बनता है।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण

84. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ई यू और अमरीका के किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। अतः उनके मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर किया गया है।

च. निर्यात कीमत

प्रतिवादी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी)

85. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण प्रतिवादी द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर किया जा सकता है। प्रतिवादी के दावानुसार निर्यात कीमत की अनुमति दी गई है जो आगे जांच और सत्यापन के अधीन है। प्रतिवादी ने भारत को निर्यातों के बारे में परिशिष्ट 2 में सूचना प्रस्तुत की है। समुद्री भाड़े, अंतरदेशीय परिवहन, स्थानीय बीमा, पैकिंग, सीमाशुल्क हैंडलिंग तथा निकासी प्रभारों और बैंक प्रभारों के लिए समायोजनों का दावा किया गया है जिन्हें आगे जांच और सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया जा रहा है। इस प्रकार कारखाना निर्यात कीमत *** अम डा./सी वी एम बनती है।

मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) बरहाड (ई जे बी)

86. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण प्रतिवादी द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर किया जा सकता है। प्रतिवादी के दावानुसार निर्यात कीमत की अनुमति दी गई है जो आगे जांच और सत्यापन के अधीन है। प्रतिवादी ने भारत को निर्यातों के बारे में परिशिष्ट 2 में सूचना प्रस्तुत की है। समुद्री भाड़े, अंतरदेशीय परिवहन, पैकिंग, स्थानीय बीमा, सीमाशुल्क हैंडलिंग तथा निकासी प्रभारों और बैंक प्रभारों के लिए समायोजनों का दावा किया गया है जिन्हें आगे जांच और सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया जा रहा है। इस प्रकार कारखाना निर्यात कीमत *** अम डा./सी वी एम बनती है।

मै. सेगामैट पैनल बोर्डर्स एस डी एन

87. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण प्रतिवादी द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर किया जा सकता है। प्रतिवादी के दावानुसार निर्यात कीमत की अनुमति दी गई है जो आगे जांच और सत्यापन के अधीन है। प्रतिवादी ने भारत को निर्यातों के बारे में परिशिष्ट 2 में सूचना प्रस्तुत की है। अंतरदेशीय परिवहन, विदेशी परिवहन, पैकिंग, हैंडलिंग तथा अन्य प्रभारों के लिए समायोजनों का दावा किया गया है। जहां तक समायोजनों का संबंध है जिन्हें आगे जांच और सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया जा रहा है। इस प्रकार कारखाना निर्यात कीमत *** अम डा./सी वी एम बनती है।

पी.टी. सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड

88. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण प्रतिवादी द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तरों के आधार पर किया जा सकता है। प्रतिवादी ने भारत को निर्यातों से संबंधित परिशिष्ट 2 में सूचना प्रस्तुत की है। कंपनी के अनुरोधों की जांच करने के बाद कुछ विसंगतियां पाई गई थीं जिनके बारे में कंपनी को सुधारने की सलाह दी गई थी। हालांकि कुछ विसंगतियां आंकड़ों में अभी भी हैं, तथापि कंपनी द्वारा दायर सूचना तथा आंकड़ों को सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। प्रतिवादी के दावे के अनुसार निर्यात कीमत की अनुमति दी गई है जो आगे जांच और सत्यापन के अधीन हैं। कमीशन, रिबेट, अंतरदेशीय परिवहन, समुद्री भाड़े के लिए समायोजनों का दावा किया गया है जिन्हें आगे जांच और सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया जा रहा है जो *** अम डा./सी वी एम बनता है।

पी टी मसारी ड्यूज पाकट फाइबर

89. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण प्रतिवादी द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तरों के आधार पर किया जा सकता है। प्रतिवादी के दावे के अनुसार निर्यात कीमत की अनुमति दी गई है जो आगे जांच और सत्यापन के अधीन हैं। प्रतिवादी ने भारत को निर्यात के बारे में परिशिष्ट 2 में सूचना प्रस्तुत की है। विदेशी परिवहन, अंतरदेशीय परिवहन और बैंक प्रभारों के लिए समायोजनों का दावा किया गया है जिन्हें आगे जांच और सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया जा रहा है। इस पर कारखाना निर्यात कीमत *** अम डा./सी वी एम बनती है।

मै. मरबोक एम डी एफ लंका (प्रा.) लि.

90. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण प्रतिवादी द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तरों के आधार पर किया जा सकता है। प्रतिवादी के दावे के अनुसार निर्यात कीमत की अनुमति दी गई है जो आगे जांच और सत्यापन के अधीन हैं। प्रतिवादी ने भारत को निर्यात के बारे में परिशिष्ट 2 में सूचना प्रस्तुत की है। विदेशी परिवहन, विदेशी बीमा और ऋण लागत के लिए समायोजनों का दावा किया गया है जिन्हें आगे जांच और सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया जा रहा है। इस पर कारखाना निर्यात कीमत *** अम डा./सी वी एम बनती है।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण

91. चूंकि संबद्ध वस्तु के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक से कोई अन्य उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर निर्यात कीमत निर्धारित की है। आंकड़ों का मिलान आवेदक द्वारा प्रदत्त सूचना और सहयोगी निर्यातकों द्वारा प्रदत्त सूचना के अनुसार किया गया है।

छ. पाटन मार्जिन

92. उपर्युक्तानुसार निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

अम.डा./सी बी एम में

क्र.सं.	देश- उत्पादक/निर्यातक	सामान्य मूल्य	निवल निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन रेंज
चीन जन.गण.						
1.	सभी उत्पादक तथा निर्यातक	***	***	***	***	185-195
इंडोनेशिया						
2.	पी टी सुमाजेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड	***	***	***	***	60-70
3.	पी टी मसारी डवाइसेपकाट फाइबर	***	***	***	***	35-45
4.	सभी अन्य उत्पादक तथा निर्यातक	***	***	***	***	105-115
मलेशिया						
5.	मै. सेगामेट पेनल बोर्ड्स एस डी एन. बी एच डी	***	***	***	***	11-16
6.	मै. एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी)/ मै एवरग्रीन फाइबरबोर्ड (जे बी) एस डी एन. बरहाड (ई जे बी)	***	***	***	***	34-39
7.	सभी अन्य उत्पादक तथा निर्यातक	***	***	***	***	90-95
श्रीलंका						
8.	मै मरबोस एम डी एफ लंका (प्राइवेट) लिमिटेड	***	***	***	***	25-30
9.	अन्य सभी उत्पादक तथा निर्यातक	***	***	***	***	75-80

ज. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

93. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

मै. वेणुगोपाल स्लेट इंडस्ट्रीज के अनुरोध

- आवेदक के इस दावे में कोई दम नहीं है कि उनकी बिक्री कीमत परियोजना रिपोर्ट में प्रदर्शित कीमत से कम है। ऐसे अनुमान में औचित्य और प्रासंगिकता नहीं होती है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय कीमतें क्षति अवधि के दौरान भारतीय कीमत से काफी कम रही हैं। उनके निर्णय में किसी त्रुटि को पाटनरोधी तंत्र के जरिए सुधारा जाना चाहिए। प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय कीमत की अनदेखी करते हुए परियोजना रिपोर्ट में अनुमानित बिक्री कीमत के मुकाबले वास्तविक बिक्री कीमत की तुलना करना गलत है।
- आवेदक ने वास्तविक व्यवधान के उपबंधों की गलत व्याख्या की है क्योंकि नियम 11 (1) में पारस्परिक रूप से अनन्य प्रावधान दिए गए हैं, इसलिए इस दावे में कोई वास्तविकता विधिक आधार नहीं है। आवेदक वाणिज्यिक उत्पादन के लगभग 17 माह बाद आरंभिक चरण का दावा नहीं कर सकता और उन्हें उच्च कच्ची सामग्री की दर, उच्च नियत लागत आदि के संबंध में अपनी अंतरनिहित अक्षमता के कारण आई उच्च उत्पादन लागत की भरपाई करने के लिए पाटनरोधी तंत्र का दुरुपयोग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। याचिका में निहित आंकड़ों के अनुसार घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है। आयात स्तर के बारे में तर्क बढ़ा-चढ़ा कर दिए गए हैं जबकि संबद्ध देशों से हुए वास्तविक आयातों में लगभग 1 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई है जो नगण्य है और इसे उत्पादन में जाहिर तौर पर हुई मामूली वृद्धि तथा मांग में वृद्धि के साथ देखा जाना चाहिए। मांग में वृद्धि के बावजूद आरोपित पाटित आयात के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है। विभिन्न अन्य क्षति मापदंडों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और क्षति का कोई संकेत नहीं देखा जा सकता। सहयोगी निर्यातकों की तुलना में अन्य पूर्वी एशियाई देशों के मुकाबले आवेदक की उत्पादन लागत असामान्य रूप से अधिक है। घरेलू उद्योग की नियत परिवर्तन लागत काफी अधिक प्रतीत होती है। अतः नियत लागत की उच्च राशि को उचित विश्लेषण सुनिश्चित करने के लिए क्षति जांच से अलग रखा जाना चाहिए। विचाराधीन उत्पाद की कच्ची सामग्री की लागत 2 परिवर्तकों अर्थात् कच्ची सामग्री की दर और उत्पादन की प्रति इकाई कच्ची सामग्री की वास्तविक खपत द्वारा प्रभावित होती है। कच्ची सामग्री की दरें और खपत मानक अंतर्राष्ट्रीय दरों से दोगुने के आस-पास प्रतीत होते हैं। ऐसी अक्षमताओं और अन्य कारणों से हुए घाटे की जांच की जानी चाहिए और इसकी वजह पाटन के कारण हुई क्षति नहीं मानी जा सकती। आवेदक को घाटा यदि कोई हो, केवल उत्पादन की उच्च लागत के कारण हो सकता है। वर्तमान मामले में पाटनरोधी शुल्क लगाना सार्वजनिक हित के विरुद्ध होगा क्योंकि किसी शुल्क की परिणति अक्षमताओं के कारण उच्च लागत का बोझ आयातकों पर डालने के रूप में होगी जिससे प्रयोक्ता उद्योग का हित गंभीर रूप से प्रभावित होगा।
- संबद्ध देशों से पहुंच कीमत में वृद्धि हुई है जबकि आवेदक की बिक्री कीमत में इसी अवधि के दौरान गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है। इससे प्रतिकूल संबंध का पता चलता है और घरेलू बिक्री कीमत के मुकाबले पहुंच कीमत के बीच को सह संबंध दिखाई नहीं देता है।
- आवेदक ने हाल ही में अपना उत्पादन शुरू किया है। अतः शुरुआती लागत, अस्थापित बिक्री तथा वितरण माध्यमों, उच्चतर छूट के साथ संवर्धित विपणन व्यय, उच्च उत्पादन लागत आदि जैसे कारकों के कारण हुई किसी क्षति का कारण आरोपित पाटन को नहीं माना जा सकता।

मै. सेगामैट पैनल बोर्डर्स एस डी एम. बी एच डी तथा मै. मरबोक एम डी एफ लंका (प्रा.) लि., श्रीलंका

- क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, काष्ठ की कीमत और खपत मानकों के कारण हुई थी ।
- परियोजना रिपोर्ट में लगाए गए अनुमानों की उपयुक्तता : क्षति के अपने दावे के समर्थन में आवेदक ने यह दावा किया है कि कंपनी को जिस कीमत पर बाजार में उत्पाद को बेचने के लिए बाध्य किया गया है वह परियोजना रिपोर्ट में अनुमानित कीमत से कम है । इस संबंध में अनुरोध है कि वर्ष 2009-10 के दौरान आवेदक की न्यूनतम बिक्री कीमत लगभग 16935 रूपए प्रति सी वी एम थी जो जांच अवधि में घटकर 15164 रूपए प्रति सी वी एम हो गई । हमने ऐसी बिक्री कीमत का अनुमान कीमत कटौती की प्रवृत्ति से लगाया है । प्रसंगवश अंतर्राष्ट्रीय बाजार में संबद्ध वस्तु की कीमतें क्षति अवधि के दौरान भारतीय कीमत से काफी कम रही हैं । हालांकि यह कार्य वित्तीय संस्थान का है कि वह अंतर्राष्ट्रीय बाजार में वर्तमान में प्रचलित कीमत के बारे में वित्त पोषण हेतु परियोजना का मूल्यांकन करते समय वास्तविक लाभकारी अनुमान लगाएं । उनके निर्णय में आई किसी त्रुटि में सुधार पाटनरोधी तंत्र के जरिए किया जाए जिसका उद्देश्य अनुचित व्यापार व्यवहारों के प्रभाव को दूर करना है । पाटनरोधी कानूनों में मुक्त व्यापार प्रणाली में उचित तुलना में लिए निर्धारित प्रक्रिया दी गई है । प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय कीमत की अनदेखी करते हुए परियोजना रिपोर्ट में अनुमानित बिक्री कीमत के मुकाबले वास्तविक बिक्री कीमत की तुलना करना गलत है । यह नोट करना भी प्रासंगिक है कि देश में संबद्ध वस्तु के भारतीय उत्पादकों ने हाल में अपना उत्पादन शुरू किया है और वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर से अधिक कीमत वसूल कर सकते हैं ।
- “भारत में किसी उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान” शब्द के शाब्दिक अर्थ में ऐसी स्थिति प्रदर्शित होती है जहां पाटन के कारण भारत में किसी उद्योग की शुरुआत पर रोक लगती हो । यद्यपि, संयंत्र अपना वाणिज्यिक उत्पादन घोषित करने के लिए तैयार है । शुरुआत शब्द की गलत व्याख्या घरेलू उद्योग द्वारा वृद्धि तथा विस्तार को नकारने के लिए नहीं की जानी चाहिए और नहीं की जा सकती जैसा कि आवेदक ने प्रयास किया है । नियम 11 (1) में “भारत में ऐसे वस्तु के आयात से भारत में स्थापित किसी उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है या उसका खतरा उत्पन्न हो गया है अथवा इससे भारत में किसी उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान उत्पन्न हुआ है” शब्दों के प्रयोग से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि वास्तविक क्षति, वास्तविक क्षति का खतरा और वास्तविक व्यवधान पारस्परिक रूप से अनन्य है । तथापि, जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में यह उल्लेख किया गया है कि घरेलू उद्योग के लिए स्पष्ट रूप से वास्तविक व्यवधान उत्पन्न हुआ है और उसे वास्तविक क्षति भी हुई है । अतः आवेदक द्वारा भरोसा किए गए वास्तविक व्यवधान की जांच आवेदक पर लागू नहीं होती है क्योंकि संयंत्र पहले से ही प्रचालन कर रहा है ।

- आवेदक ने 2 फरवरी, 2010 से वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया है। यह आश्चर्यजनक है कि वाणिज्यिक उत्पादन के 17 महीने बाद भी आवेदक उद्योग अपने आरंभिक चरण में होने का दावा करता है। इसके अलावा, यह अनुरोध किया गया है कि वास्तविक व्यवधान के बारे में आवेदक उद्योग का यह दावा बेबुनियाद और अस्वीकार्य है जब उसने अंतर्राष्ट्रीय कीमत से अधिक बिक्री कीमत वास्तव में वसूल की हो। इसके अलावा, यदि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत उसकी अक्षमताओं, कच्ची सामग्री की उच्च दर और उच्च नियत लागत आदि के कारण अधिक है तो ऐसा उद्योग किस प्रकार नवोदित उद्योग के रूप में वास्तविक व्यवधान का दावा कर सकता है और इसकी वजह पाटन को मान सकता है।
 - प्राधिकारी ने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में यह पाया है कि संबद्ध देशों से आयातों में भारी वृद्धि हुई है जिसमें गिरावट आनी चाहिए थी। यदि घरेलू उद्योग ने नई उत्पादन सुविधाएं स्थापित की होतीं और समर्थनकर्ता कंपनी ने भी विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन शुरू कर दिया होता। तथापि, वर्ष 2009-10 में संबद्ध देशों से आयात 44,009 मी.ट. के हुए थे जो प्रस्तावित जांच अवधि में मामूली बढ़कर 44,562 सी बी एम हो गए और ऐसी वृद्धि दर केवल लगभग 1 प्रतिशत थी जो अत्यंत नगण्य है।
 - घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है। याचिका में निहित आंकड़ों से आरोपित पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति की मौजूदगी का पता नहीं चलता है। वस्तुतः प्रपत्र iv क से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्से और बिक्री में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान सुधार हुआ है। यह एक विचित्र स्थिति है जब प्रचालनरत क्षति मापदंडों में सुधार प्रदर्शित हुआ है, उसके बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है और उसने प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय कीमत से अधिक बिक्री कीमत वसूल की है तब भी घरेलू उद्योग क्षति का दावा कर रहा है। आवेदक का क्षमता उपयोग जो 2009-10 के दौरान केवल 27 प्रतिशत था, जांच अवधि में बढ़कर 32 प्रतिशत हो गया और इस प्रकार कोई क्षति प्रदर्शित नहीं होती है।
 - कि घरेलू उद्योग कहीं भी प्रतिस्पर्धा में नहीं है जब उसकी उत्पादन लागत अंतर्राष्ट्रीय स्तर से 100 प्रतिशत अधिक है। हमने (अपने अनुमान के आधार पर) घरेलू उद्योग के मुकाबले हमारे निर्यातक की वास्तविक उत्पादन लागत और बिक्री कीमत की तुलना करने का प्रयास किया है। इससे यह पता चलता है कि निर्यातकों की तुलना में आवेदक की उत्पादन लागत असामान्य रूप से अधिक है और आवेदक की उच्च लागत के कारणों का विश्लेषण नीचे किया गया है।
- क. आवेदक की उच्च नियत परिवर्तन लागत : कि आवेदक की नियत परिवर्तन लागत 6,372 रुपए प्रति सी बी एम थी जबकि यह सामान्य उपयोगिता (90 प्रतिशत) पर 2,246 रुपए प्रति सी बी एम होनी चाहिए। इस प्रकार जांच अवधि के दौरान कम क्षमता उपयोग के कारण घरेलू उद्योग की नियत परिवर्तन लागत 4,126 प्रति सी बी एम अधिक थी। इसके अलावा, आवेदक उद्योग की वास्तविक नियत लागत निर्यातकों की लागत से दोगुनी है। अतः

नियत लागत की उच्च राशि को क्षति जांच से हटा दिया जाना चाहिए ताकि उचित विश्लेषण सुनिश्चित किया जा सके क्योंकि इस दावे के कारण आवेदक को हुई क्षति की वजह संबद्ध देशों से आरोपित पाटित आयातों को नहीं माना जा सकता ।

ख. कच्ची सामग्री की दर और आवेदक के खपत मानक : यह अनुरोध किया गया है कि विचाराधीन उत्पाद की कच्ची सामग्री की लागत 2 परिवर्तकों अर्थात् कच्ची सामग्री की दर और उत्पादन की प्रति इकाई कच्ची सामग्री की वास्तविक खपत द्वारा प्रभावित होती है । आवेदक उद्योग की कच्ची सामग्री की तुलना निर्यातकों की तदनुरूपी दरों के साथ करने पर यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग की कच्ची सामग्री की दरें सहयोगी निर्यातक की दरों से लगभग दोगुनी हों । दरों में यह परिवर्तन आंशिक तौर पर निर्यातकों के मुकाबले आवेदक घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में अंतर की वजह से आया है ।

इसमें आगे और वृद्धि हो जाती है जब हम आवेदक उद्योग के साथ निर्यातक के उत्पादन की प्रति इकाई कच्ची सामग्री की वास्तविक खपत की तुलना करते हैं जो लगभग 28% अधिक है । यह आवेदक उद्योग के प्रचालन की अक्षमता के सिवाय कुछ नहीं है । अधिक खपत वाली सामग्री प्रदर्शित कर लागत बढ़ाने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता जिस पर प्राधिकारी को गंभीरतापूर्वक गौर करना चाहिए । कच्ची सामग्री की लागत में अंतर हैं और कच्ची सामग्री की लागत में ऐसे अंतर की वजह आरोपित पाटन नहीं मानी जा सकती और न मानी जानी चाहिए ।

ग. इस प्रकार आवेदक की लागत कम क्षमता उपयोग तथा कच्ची सामग्री की अधिक खपत से संबंधित अक्षमताओं के कारण ही लगभग 9142 रु प्रति सी बी एम तक अधिक है ।

- कि आवेदक को तब घाटा हुआ है जब आवेदक की न्यूनतम निवल बिक्री कीमत 15,164 रु. प्रति सी बी एम थी और यह कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमत से अधिक थी जो 12,000 रु. प्रति सी बी एम थी । हमने ऐसी बिक्री कीमत का अनुमान कीमत कटौती में प्रवृत्ति से लगाया है । अतः आवेदक को हुए घाटे का कारण अक्षमताओं के कारण उच्च लागत था । संबद्ध देशों से पहुंच कीमत पूर्ववर्ती वर्ष में 12,024 रु. मी.ट. से बढ़कर जांच अवधि में 12730 रु. मी.ट. हो गई है जबकि आवेदक की बिक्री कीमत में उसी अवधि के दौरान गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई दे रही थी । इससे प्रतिकूल संबंध का पता चलता है और घरेलू बिक्री कीमत तथा पहुंच कीमत के बीच कोई सह संबंध प्रदर्शित नहीं होता है ।
- आवेदक ने हाल ही में अपना उत्पादन शुरू किया है । अतः इस बात की जानकारी है कि आवेदक को (i) शुरुआती लागत (ii) अनस्थापित बिक्री एवं वितरण माध्यम; (iii) उच्च छूट के साथ संवर्धित विपणन व्यय जैसे विभिन्न कारकों के कारण क्षति होगी ।

एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी), मलेशिया; एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन. बी एच डी (ई जे बी), मलेशिया और एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलाई) एस डी एन. बी एच डी (ई एफ एन), मलेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

- नियम में यह निर्धारित है कि क्षति तीन प्रकार की होती है जो घरेलू उद्योग को हो सकती है अर्थात् किसी स्थापित उद्योग को वास्तविक क्षति, किसी स्थापित घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का खतरा अथवा किसी उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान का खतरा। उपर्युक्त नियम में प्रयुक्त "अथवा" शब्द से यह स्पष्ट होता है कि एक ही समय तीनों प्रकार की क्षति अथवा किसी दो प्रकार की क्षति होने का परिणाम नहीं निकाला जा सकता। अतः वास्तविक व्यवधान और वास्तविक क्षति के रूप में क्षति साथ-साथ नहीं हो सकती। यह उल्लेख करना भी महत्वपूर्ण है कि आवेदक ने याचिका में कहीं भी यह नहीं बताया है कि यह वास्तविक क्षति का मामला है। उसने केवल वास्तविक व्यवधान का उल्लेख किया है और घरेलू उद्योग की स्थापना में कोई वास्तविक व्यवधान नहीं है।
- आयात विश्लेषण पूर्णतः गलत है। यह पूर्णतः स्पष्ट है कि वर्ष 2010-11 में कुल आयातों में भारी गिरावट आई है। इसके अलावा, उसी अवधि में संबद्ध देशों से आयातों में लगभग 1% की नगण्य वृद्धि को कल्पना में भी भारी वृद्धि नहीं माना जा सकता कि घरेलू उद्योग ने आयात आंकड़ों की गलत छंटाई की है।
- क्षति के बारे में जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में यह उल्लेख किया गया है कि घरेलू उद्योग के लिए उसकी स्थापना में वास्तविक व्यवधान उत्पन्न हुआ है। घरेलू उद्योग द्वारा जांच अवधि सहित 17 माह से संबद्ध वस्तु का सफल उत्पादन किया जा रहा है और यह जांच अवधि से आगे भी संबद्ध वस्तु का विनिर्माण कर रहा है।
- घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है जैसा कि निम्नलिखित से देखा जा सकता है
 - i. क्षमता: आवेदक की स्थापित क्षमता पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में वर्ष 2010-11 में 8333 से अत्यधिक बढ़कर 50,000 एम³ हो गई है।
 - ii. उत्पादन : आवेदक का उत्पादन वर्ष 2009-10 में 2262 एम³ से अत्यधिक बढ़कर 2010-11 में 15860 एम³ हो गया है।
 - iii. क्षमता उपयोग : आवेदक का क्षमता उपयोग 2009-10 में 27% से बढ़कर 2010-11 में 32% हो गया है।
 - iv. बिक्री : एक ही वर्ष में आवेदक की बिक्री भी 334 एम³ से अत्यधिक बढ़कर 15347 एम³ हो गई है जो 4600% से अधिक है।

- v. मालसूची : घरेलू उद्योग ने वर्ष 2010-11 15860 एम 3 का उत्पादन किया और 15347 एम3 की बिक्री की शेष 423 एम3 इस वर्ष के स्टॉक में है कि 2010-11 में उत्पादन के मात्र 2.67% के स्टॉक या 10 दिन से कम की मालसूची को माल जमा होना नहीं माना जा सकता ।
- vi. बाजार हिस्सा : आवेदक का बाजार हिस्सा 2009-10 में 0.63% से बढ़कर 2010-11 में 25.23% हो गया है ।
- vii. लाभप्रदता, लगाई गई पूंजी पर आय, नकद लाभ और कीमत कटौती : इनके संबंध में क्षति, यदि कोई हो, संबद्ध देशों से आरोपित पाटित आयातों के कारण नहीं हुई है बल्कि शुरूआती लागत के कारण प्रति इकाई उच्च लागत की वजह से अधिक लागत, कच्ची सामग्री की उच्च लागत, उच्च उपयोगिता लागत, उच्च नियत लागत, उच्च श्रम लागत, उच्च ब्याज लागत और उच्च मूल्यह्रास लागत लागत के कारण हुई है ।
- viii. मजदूरी : यह अनुरोध किया गया है कि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में वर्ष 2010-11 कर्मचारियों को प्रदत्त मजदूरी में भारी वृद्धि हुई है ।
- ix. कर्मचारियों की संख्या : आवेदक द्वारा नियोजित व्यक्तियों की संख्या में कोई कममी नहीं आई है ।
- x. उत्पादकता : आवेदक की उत्पादकता बढ़ी है ।

- घरेलू उद्योग को हुई क्षति, यदि कोई हो और आरोपित पाटित आयातों के बीच कोई कारणात्मक संबंध है । अनुरोध है कि आवेदक को क्षति यदि कोई हो, दोनों घरेलू उत्पादकों के बीच आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण हुई है ।

मै. पी टी मेसारी ड्यूजपाकट फाइबर, इंडोनेशिया और मै. पी टी सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड (एस पी एफ) मलेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

- आवेदक ने उद्योग के विचाराधीन उत्पाद की आबद्ध खपत से संबंधित सूचना रोक ली है । यह मुख्यतः उच्च कीमत वाली संबद्ध वस्तु का व्यापार करता है जिसके लिए कच्ची सामग्री के रूप में सादे फाइबर बोर्डों की जरूरत होती है ।
- वाणिज्यिक उत्पादन में 15 माह बाद कोई भी उद्योग आरंभिक चरण में होने और वास्तविक व्यवधान पड़ने का दावा नहीं कर सकता ।
- आवेदक ने इस बात की पुष्टि नहीं की है कि वर्तमान मामला वास्तविक व्यवधान के दायरे में किस प्रकार आता है । यह दावा करने का कोई आधार नहीं है कि उद्योग अभी भी आरंभिक चरण में है । आवेदक भारत में उद्योग स्थापित कर चुका है । वर्तमान मामला एक ऐसा

मामला है जिसमें आवेदक की उत्पादन लाइन अलग-अलग मोटाई की दूसरी उत्पादन लाइन के साथ कार्य करती है। इस बाजार में एक स्थापित उद्योग के रूप में आवेदक अपनी वर्तमान संरचना से लाभान्वित हुए हैं क्योंकि उनके पास 6 मि.मी. से कम के फाइबर बोर्ड का उत्पादन और वितरण करने के लिए जरूरी कुछेक सामान्य उपकरण, कर्मचारी, विशेषज्ञता, मौजूदा वितरण नेटवर्क और प्रणाली, मौजूदा ग्राहक आधार और/अथवा अन्य संघटक, कच्ची सामग्री के आपूर्तिकर्ता पहले से ही हैं और वे अतिरिक्त उत्पादन लाइन के प्रचालन के प्रयोजनार्थ इन कारकों का लाभ उठाने में सक्षम हैं। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए और जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की विशिष्ट भाषा को देखते हुए हमारा सुविचारित मत यह है कि वर्तमान मामला पाटित आयातों और परिणामी क्षति के कारण भारत में किसी उद्योग की स्थापना में व्यवधान हेतु सुरक्षा मांगने का मामला नहीं है। यह एक स्थापित कानून है कि वास्तविक व्यवधान का मामला केवल तभी बनाया जा सकता है जब उत्पादन शुरू नहीं हुआ हो और उद्योग ने अभी अपनी वाणिज्यिक मात्रा हासिल की हो।

- जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना एक कारण बताओ नोटिस जैसी है और किसी पक्षकार को यह सूचित नहीं किया है कि प्राधिकारी ने वास्तविक व्यवधान के बारे में आवेदकों के दावे को स्वीकार कर लिया है। वास्तविक व्यवधान की शुरुआत के अभाव में हम वास्तविक व्यवधान पर आगे कोई टिप्पणी नहीं दे रहे हैं।
- प्राधिकारी द्वारा निर्धारित जांच अवधि और क्षति अवधि त्रुटिपूर्ण और अनुचित है। वर्तमान मामले में जांच अवधि अप्रैल, 2010-जून 2011 अर्थात् 15 माह की है। आवेदक बाजार में केवल नया प्रवेशकर्ता है और उसने अप्रैल, 2006 में केवल दो माह पूरे किए हैं। अतः पाटन एवं क्षति की प्रवृत्तियों का निर्धारण त्रुटिपूर्ण हो सकता है क्योंकि आवेदक के लिए परिवर्ती लागत और नियत लागत काफी अधिक होगी और कोई उचित तथा व्यापक विश्लेषण नहीं किया जा सकता।
- आवेदक के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु का केवल एक और उत्पादक (ग्रीन प्लाई) है और ऐसे नए उत्पादक ने भी दिसंबर, 2010 में उत्पादन शुरू किया है। आवेदक ने आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण में केवल उत्पादन के आंकड़े दिए हैं तथा क्षति से संबंधित अन्य सभी सूचना गायब है। विनिर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा आवेदकों के ऐसे वास्तविक दावों की पुष्टि अन्य प्रामाणिक स्रोतों से भी की जाए।
- क्षति मापदंड : इस संबंध में हम निम्नलिखित का उल्लेख करना चाहते हैं :
 - क. मूल्यहास, ब्याज और मजदूरी के आंकड़े नकारात्मक हैं।
 - ख. प्रति कर्मचारी और प्रतिदिन उत्पादकता में भी वृद्धि हुई है।
 - ग. प्रपत्र- IV-क में दर्शाए गए ब्याज में आधार वर्ष से अचानक वृद्धि हुई है।
 - घ. आवेदक ने प्रपत्र IV-क में आबद्ध खपत नहीं दर्शायी है।

ड आधार वर्ष, जब उन्होंने उत्पादन शुरू किया था, की तुलना में औसत मालसूची में गिरावट आई है।

च. जब हम प्रति दिवस का गुण कर मालसूची की तुलना करते हैं तो यह देखा जाता है कि मालसूची में भारी कमी आई है।

छ. जी एफ, एन एफ ए, कार्यशील पूंजी और कम कीमत पर बिक्री से संबंधित सूचना नहीं दी गई है।

ज. संशोधित IV-क में के अनुसार आवेदक ने आधार वर्ष 2009-10 की तुलना में बेहतर निष्पादन किया है।

झ. आवेदक मुख्यतः मूल्यवर्धित उत्पादों की बिक्री कर रहा है जो सादे एम डी एफ की तुलना में महंगे हैं। वे इसलिए इनसे डोर स्किन, एम डी एफ कोटेड बोर्डों, मेलाइन बोर्डों और बाह्य ग्रेड एम डी एफ का निर्माण करते हैं। अतः प्राधिकारी से हमारा अनुरोध है कि आवेदक की लागत और क्षति रहित कीमत की तुलना करते समय कृपया आबद्ध खपत के मुद्दे पर विचार करें और हमारी प्रभावी टिप्पणियों के लिए गणना शीट का अगोपनीय रूपांतरण भी उपलब्ध कराएं।

समूची क्षति जांच अवधि के दौरान इंडोनेशिया से आयात कमोबेश समान रहे हैं। जैसा कि तालिका में दर्शाया गया है कि वर्ष 2010-11 के दौरान मूल्य में 21.70% की वृद्धि हुई है जबकि मात्रा में 20% की वृद्धि हुई है। वार्षिक आंकड़ों में इंडोनेशियायी आयातों के मूल्य में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 20% की वृद्धि हुई जबकि मात्रा में केवल 12% की वृद्धि।

मै. मेग्ना फॉरमोस्ट एम डी एन और मै. मेसोनाइट कंपोनेंट्स, आयरलैंड की ओर से किए गए अनुरोध

- वास्तविक व्यवधान और वास्तविक क्षति के दावे आपस में अलग-अलग हैं : जहां कोई घरेलू उद्योग वास्तव में पहले से स्थापित है वहां वह वास्तविक व्यवधान का दावा नहीं कर सकता। इस तथ्य से कि आवेदकों का उत्पादन संबद्ध उत्पाद के कुल भारतीय उत्पादन का लगभग 87% बनता है, इस बात का पुख्ता प्रमाण मिलता है कि इस मामले में घरेलू उद्योग पहले से ही स्थापित है। आवेदक जो यह स्वीकार करता है कि उसने जांच की शुरुआत से पूर्व 21 माह पूर्व फरवरी, 2010 में उत्पादन शुरू किया था, को इस मामले में बमुरिकल अभी स्थापित न हुआ माना जा सकता है जिससे वास्तविक व्यवधान का दावा अनुचित बन जाता है।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

घरेलू उद्योग के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग परियोजना रिपोर्ट में अनुमानित कीमत से कम कीमत पर बाजार में उत्पाद को बेचने के लिए बाध्य हुआ है, अनुरोध है कि मात्र इस तथ्य कि निर्यात कीमत कुछ अन्य "अंतर्राष्ट्रीय" कीमतों से तुलनीय थी, का तात्पर्य कुछ नहीं

है। वस्तुतः "अंतर्राष्ट्रीय कीमत" जैसी कोई चीज नहीं है। यहां तक कि दो सौदे कीमतें भी समान होनी जरूरी नहीं हैं।

दो ग्राहकों की कीमत अलग-अलग हो सकती है इस आर्थिक वास्तविकता में निर्यातक एक "अंतर्राष्ट्रीय कीमत" का अनुमान लगा रहा है। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की तुलना वास्तव में कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण करने के लिए लक्षित कीमत के साथ करनी अपेक्षित होती है। यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सिद्धांत है कि लक्षित कीमत और वास्तविक कीमत पर विचार करते हुए कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण किया जाए।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि वाणिज्यिक उत्पादन के 17 माह बाद भी घरेलू उद्योग शुरुआती चरण में होने का दावा कर रहा है और यह कि वास्तविक विकृति का दावा तब किया जा सकता है जब बिक्री कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमत से अधिक वसूल की गई हो, निराधार और अस्वीकार्य है, अनुरोध है कि प्राधिकारी को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन की तुलना पूर्ववर्ती वर्ष के साथ करनी अपेक्षित होती है। व्यावहारिक तौर पर प्राधिकारी द्वारा पूर्ववर्ती तीन वर्षों पर विचार किया जा रहा है और जांच अवधि में निष्पादन की तुलना पूर्ववर्ती तीन वर्षों के साथ की जाती है। इस प्रकार विशेष तौर पर प्राधिकारी क्षति निर्धारण के लिए जांच अवधि और पूर्ववर्ती तीन वर्षों पर विचार करते हैं लेकिन वर्तमान मामले में आवेदक का जांच अवधि और पूर्ववर्ती तीन वर्षों का कोई वास्तविक प्रचलनात्मक इतिहास नहीं है। इससे स्वतः यह सिद्ध होता है कि आवेदक का मामला नवोदित उद्योग का है। इसके बावजूद आवेदक ने दो रूपों में क्षति की पुष्टि की है -

➤ उसकी स्थापना की अवधि हेतु उसके वास्तविक निष्पादन पर विचार करते हुए;

➤ अनुमानित/लक्षित निष्पादन के साथ अपने निष्पादन की तुलना करते हुए;

दोनों से यह सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि जांच अवधि से पूर्व के वर्ष से आयातों में वृद्धि की दर केवल एक प्रतिशत थी जबकि मांग में वृद्धि 16 प्रतिशत हुई थी जबकि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन का स्तर मामूली था, अनुरोध है कि मात्र यह तथ्य कि घरेलू उद्योग का उत्पादन पर्याप्त क्षमताओं और बाजार में मांग होने के बावजूद नगण्य था, यह सिद्ध करता है कि घरेलू उद्योग अपनी क्षमताओं की सीमा तक उत्पादन करने में सक्षम नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति की पुष्टि होती है। वर्तमान जैसे उद्योग के तथ्यों और परिस्थितियों में जहां वाणिज्यिक उत्पादन फरवरी, 2010 में शुरू हुआ और जहां उत्पाद की मांग काफी अधिक है और घरेलू उद्योग के पास पर्याप्त क्षमता है, वहां घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता उपयोग के लक्षित स्तर पर तक पहुंचने में अक्षमता से यह सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग को लक्षित सीमा तक उत्पादन का वाणिज्यीकरण करने से वंचित किया गया है। किसी उद्योग की स्थापना को उसकी स्थापना के लिए अनुमानित तरीके से देखा जाना चाहिए। घरेलू उद्योग ने यह

अनुमानं लगाया कि उसके प्रचालन के प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष में उसका क्षमता उपयोग कमशः ***%, ***% और ***% रहेगा । अतः यह स्पष्ट होता है कि घरेलू उद्योग की तब तक स्थापना होती रहेगी जब तक कि वह क्षमता उपयोग का ***% प्रतिशत हासिल नहीं कर लेता है । इस लक्षित स्तर के विपरीत घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग नितांत कम रहा है । प्राधिकारी को निर्यातक के क्षमता उपयोग पर विचार करना चाहिए और उसकी तुलना घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग के साथ करनी चाहिए । निर्यातक के माह वार उत्पादन तथा बिक्री से संबंधित सूचना मांगी जाए और उसकी तुलना निर्यातक द्वारा प्राप्त क्षमता उपयोग के स्तर के साथ की जाए । यदि यह पाया जाता है कि कुछ निर्यातकों द्वारा प्राप्त क्षमता उपयोग घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त क्षमता उपयोग से काफी अधिक है तो निर्यातक को यह स्पष्ट करना चाहिए कि घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग इतना कम क्यों है । यदि इसकी वजह बाजार पाटित आयातों की मौजूदगी है तो यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि उत्पाद के पाटन से घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है ।

जहां तक इस तर्क का संबंध है कि प्रपत्र IV-क में यह दर्शाया गया है कि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्से और बिक्री में वृद्धि हुई है । अनुरोध है कि इस तर्क में घरेलू उद्योग की उस स्थिति को नहीं समझा गया है जिसने नई उत्पादन सुविधा के साथ किस प्रकार उत्पादन शुरू किया है । फरवरी, 2010 में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू करने के बाद यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग इस अवधि में अपना उत्पादन और बिक्री बढ़ाने के प्रयास करेगा । यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग एक दिन में 100 प्रतिशत क्षमता उपयोग हासिल नहीं करेगा । क्षमता उपयोग में धीरे-धीरे सुधार होगा । क्षति अवधि में उत्पादन और बिक्री में वृद्धि से बाजार में स्थापित होने के लिए घरेलू उद्योग के प्रयासों का स्पष्ट पता चलता है । तथापि, घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग उसके द्वारा अनुमानित स्तरों से काफी कम रहा था । यदि घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण पाटन नहीं है तो घरेलू उद्योग अनुमानित स्तर की तुलना में ऐसे प्रतिकूल क्षमता उपयोग का सामना क्यों कर रहा है । यदि हितबद्ध पक्षकारों का तर्क यह है कि आवेदक इस स्तर पर संयंत्र चलाने में समर्थ नहीं है तो यह अनुरोध है कि आवेदक ने वास्तव में उच्च स्तर पर संयंत्र चलाया है । तथापि, ऐसे स्तर लंबी अवधि तक बरकरार नहीं रखे जा सकते क्योंकि इससे मालसूची में भारी वृद्धि और उसके बाद आवेदक को उत्पादन में कटौती करनी पड़ेगी । क्षति संबंधी सूचना से यह भी देखा जाएगा कि आवेदक को यह पता चलने के बाद कि वह बाजार में उत्पाद का निपटान करने में अक्षम है, बाजार में बिक्री की शुरुआत के तुरंत बाद अपनी बिक्री कीमत कम करनी पड़ी थी । इसके अलावा कीमत में कमी करने के बाद आवेदक को बिक्री बढ़ाने हेतु छूट आदि में वृद्धि करनी पड़ी थी । उत्पादन और बिक्री की शुरुआत के तुरंत बाद घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई । इसके अलावा इस अवधि में घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति में गिरावट आई । निवल बिक्री प्राप्ति में गिरावट और बिक्री कीमत में कमी घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित कम कीमत के बावजूद आई थी । इसके अलावा, यह मानते हुए कि शुरुआती प्रचालन के कारण आवेदक ने कुछ उच्च नियत लागत रखी थी, आवेदक ने ईष्टतम क्षमता उपयोग का उच्चतर स्तर अपनाते हुए अपनी लागत संरचना निर्धारित की है जिससे आवेदक को प्रचालन की अपनी प्रथम तिमाही में लाभ मिला होगा परंतु जांच अवधि के अंत में उसे घाटा हुआ है । दूसरे शब्दों में यदि शुरुआती लागत को शामिल न किया जाए तो आवेदक ने लाभकारी कीमतों पर प्रचालन शुरू किया था परंतु वह देश में उत्पाद के पाटन के

कारण घाटे में चला गया। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना बिक्री मात्रा के साथ करने पर यह देखा जाएगा कि चूंकि घरेलू उद्योग ने अपनी प्राप्ति में कमी की है इसलिए उसकी बिक्री मात्रा में सुधार हुआ है। दूसरे शब्दों में घरेलू उद्योग को कुछ मात्रा हासिल करने के लिए बिक्री कीमत के साथ समझौता करना पड़ा था। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत तथा संबद्ध देशों से आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत की तुलना से यह देखा जाएगा कि —

- जब घरेलू उद्योग ने बाजार में अपना उत्पाद उतारा तो घरेलू उत्पाद और आयातित उत्पाद के बीच कीमत अंतर काफी अधिक था।
- घरेलू उद्योग ने कीमत में कमी की ताकि घरेलू और आयातित उत्पाद के बीच अंतर की कुछ भरपाई की जा सके। तथापि, घरेलू उत्पाद और आयातित उत्पाद के बीच कीमत में भारी अंतर को देखते हुए आयात की मात्रा काफी अधिक रही और इसमें गिरावट नहीं आयी।
- घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन शुरू करने के बाद आयात मात्रा में भारी गिरावट आई है। यह देखते हुए कि घरेलू उद्योग का उत्पाद “आयात प्रतिस्थापनीय उत्पाद” था, घरेलू उद्योग का यह विधिसम्मत अनुमान था कि ऐसे किसी उत्पाद के आयात में भारी गिरावट आएगी। जैसे-जैसे घरेलू उत्पादन बढ़ेगा और वह बाजार में मांग को पूरा करेगा।

● भारत में उत्पादन लागत से संबंधित तर्क के बारे में यह अनुरोध है कि आवेदक ने इस उद्योग में नवीनतम संयंत्र स्थापित किया है और उसके पास विदेशी उत्पादकों के पास उपलब्ध मशीनों से तुलनीय मशीनें हैं। तुलनीय प्रौद्योगिकी और संयंत्र एवं उपकरण होने के कारण यह असंभव है कि घरेलू उद्योग की परिवर्तन लागत विदेशी उत्पादकों की परिवर्तन लागत की तुलना में अत्यधिक भिन्न (और उच्चतर) होगी। ऐसे किसी दावे का तात्पर्य यह है कि विदेशी उत्पादकों ने अपने आंकड़ों के साथ हेराफेरी की है और सही परिवर्तन लागत को छिपाया है। इस व्यापार में सीमित मशीन आपूर्तिकर्ता हैं जहां न्यूनतम परिवर्तन एक से दूसरे देश में कीमत कारकों में अंतर को देखते हुए आ सकते हैं वहां परिवर्तन लागत में भारी अंतर असंभव है। इसका एकमात्र तात्पर्य यह है कि प्राधिकारी से तथ्यों को छिपाया गया है या उसे गलत बताया गया है। आवेदक द्वारा लगाई गई मशीन को कम से कम अधिक कुशल माना जा सकता है। तत्पश्चात संबद्ध देशों के अन्य उत्पादकों पर विचार किया जा सकता है। यह अनुमान लगाने का कोई आधार नहीं है कि घरेलू उद्योग की नियत लागत निर्यातकों की लागत से अधिक है। हालांकि प्रति सी बी एम आधार पर नियत लागत के कुछ घटक शुरुआती प्रचालनों के कारण उस स्थिति में अधिक हो सकते हैं और जब क्षमता उपयोग के उचित स्तर पर लागत पर विचार किया जाए तो यह काफी भिन्न पाई जाएगी। आवेदकों का अनुरोध है कि विदेशी उत्पादक कई उत्पादों का उत्पादन और बिक्री कर रहे हैं। इस बात की प्रबल संभावना है कि उन्होंने व्यय के अनुपात को इस ढंग से व्यवस्थित किया है कि विचाराधीन उत्पाद की लागत को कम बताया जा सके और व्यय अन्य उत्पाद में अंतरित किया जा सके। इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि अलग-अलग उत्पादों के लिए पृथक सूचना रखने हेतु लेखा सिद्धांतों में कोई अनिवार्य अपेक्षा नहीं है। अतः यह विदेशी उत्पादकों के लिए बहुत आसान है कि वे अपनी लागत के आंकड़ों के साथ छेड़छाड़ करें और कम उत्पादन लागत सूचित करें। इस प्रकार यह अक्षमता का प्रश्न नहीं है अपितु, प्राधिकारी को निर्यातकों द्वारा प्रदत्त छेड़छाड़ किए गए/मनगढ़त आंकड़ों का प्रश्न है।

- आयातों की पहुंच कीमत के मुकाबले घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से संबंधित तर्क के बारे में यह अनुरोध किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने अपनी यात्रा अपने उत्पाद की ऐसी कीमत निर्धारित करते हुए शुरू की थी जो उत्पादन की इष्टतम लागत से कुछ अधिक थी। जहां यह कुछ मामूली लाभ ला सके भले ही यह उचित स्तर से कम हो। घरेलू उद्योग द्वारा इतनी वास्तविक और उचित कीमत पेश करने के बावजूद घरेलू उद्योग की कीमत और आयात कीमत के बीच अंतर इतना अधिक था कि घरेलू उद्योग को तुरंत सुधारात्मक कार्रवाई करनी पड़ी और कीमत में कमी करनी पड़ी जिसके बावजूद भी बिक्री मात्रा घरेलू उद्योग की उत्पादन क्षमता के स्तर पर नहीं पहुंच सकी। अतः घरेलू उद्योग को पुनः छूट बढ़ाने की पेशकश करनी पड़ी ताकि कुछ ग्राहक घरेलू उत्पाद खरीदने के लिए आकर्षित हो सकें। तथापि, चूंकि कीमत अंतर अभी भी काफी अधिक था, इसलिए घरेलू उद्योग अंततः उत्पादन का इष्टतम स्तर प्राप्त नहीं कर सका।
- कारणात्मक संबंध के बारे में अनुरोध है कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है क्योंकि आयातित और घरेलू उत्पाद के बीच कीमत में भारी अंतर से घरेलू उद्योग उत्पादन क्षमताओं की सीमा तक अपने उत्पाद की बिक्री करने से वंचित हुआ है जिसके परिणामस्वरूप कीमत में कमी आई, बिक्री मात्रा का स्तर घटा, निवल बिक्री प्राप्ति में कमी आई, क्षति रहित कीमत और आयातों की पहुंच कीमत के बीच भारी अंतर हुआ और घरेलू उद्योग लक्षित स्तर की सीमा तक अपना उत्पादन बढ़ाने में असमर्थ रहा और दूसरी ओर मानव उत्पादन घंटों में भारी कमी आई, बढ़ते हुए उत्पादन के साथ मालसूचियों में वृद्धि हुई, बढ़ती हुई मालसूचियों के कारण उत्पादन लागत में गिरावट आई जिनसे सामूहिक और संचयी रूप से यह सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के परिणामस्वरूप क्षति हो रही है।
- सार्वजनिक हित के संबंध में अनुरोध है कि सार्वजनिक हित का वर्तमान दावा किसी निर्यातक या विदेशी उत्पादक ने किया है। यह कहना पर्याप्त होगा कि निर्यातक को भारत में सार्वजनिक हित से सरोकार नहीं रखना चाहिए। आवेदक देश में एक जिम्मेदार और अति प्रख्यात व्यापार घराने का एक भाग है जिनके प्रवर्तक आम जनता के सामान्य कल्याण के लिए दिल्ली में 500 बिस्तरे का सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल बनाने और चलाने में प्रासंगिक रहे हैं। इस ग्रुप की भारत में व्यापक मौजूदगी है और उसे भारत में सार्वजनिक हित की बेहतर जानकारी है। आवेदक वस्तुतः देश में उचित कीमत पर उत्पाद उपलब्ध कराने की स्थिति में है। निर्यातक ने कहीं भी यह सिद्ध नहीं किया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना किस प्रकार सार्वजनिक हित में नहीं होगा। चूंकि समूचा तर्क निर्यातक की ओर से मात्र अनुमान है, इसलिए प्राधिकारी कृपया इस तर्क को अस्वीकार करें। यह भी अनुरोध है कि सार्वजनिक हित शब्द का व्यापक अर्थ होता है जिसमें उत्पादकों, उपभोक्ताओं और आम जनता के हित निहित होते हैं। इसका अर्थ किसी भी हालत में आयातकों के हित से नहीं लगाया जाता है। शुल्क लगाया जाना सार्वजनिक हित में होगा क्योंकि इससे घरेलू उद्योग को देश में स्वयं की पूर्ण स्थापना में मदद मिलेगी जो उपभोक्ताओं के भी हित में होगा। उपभोक्ता विदेशी उत्पादकों की दया पर निर्भर नहीं होंगे।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आवेदक ने विचाराधीन उत्पाद की आबद्ध खपत से संबंधित सूचना रोक ली है, अनुरोध है कि पर्याप्त सूचना पहले से ही रिकॉर्ड में मौजूद है। यदि प्राधिकारी आगे कोई सूचना चाहते हैं तो आवेदक उसे उपलब्ध कराएगा।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि आवेदक और भारत में अन्य समर्थनकारी उत्पादक द्वारा पर्याप्त आयातों की सूचना दी गई है और समूचा विश्लेषण ऐसे प्रमुख तथ्यों पर ध्यान दिए बिना किया गया है, अनुरोध है कि इस तर्क में कोई वजूद नहीं है क्योंकि आवेदक द्वारा किए गए आयात अधिक नहीं हैं। आवेदक द्वारा किए गए आयात 68,273 सी बी एम के बाजार में और 50,000 सी बी एम की क्षमता के मुकाबले *** सी बी एम के किए गए थे।
- जहां तक "भारत में किसी उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान" से जुड़े तर्क का संबंध है, अनुरोध है कि वास्तविक व्यवधान के बारे में सदस्यों की समझ का तात्पर्य वास्तविक व्यवधान के अर्थ को सुस्पष्ट कर देती है। ऐसी किसी स्थिति में भी जहां उत्पाद का पहले उत्पादन हो रहा है, प्राधिकारी वास्तविक व्यवधान का जांच परिणाम दर्ज कर सकते हैं। इसके अलावा, वास्तविक व्यवधान का तात्पर्य यह नहीं है कि कंपनी को वाणिज्यिक उत्पादन शुरू नहीं करना चाहिए था। हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों के विपरीत इस विषय पर उभरते हुए न्यायशास्त्र में वस्तुतः स्पष्ट है अर्थात् प्राधिकारी विद्यमान सीमा तक घरेलू उद्योग की क्षति संबंधी सूचना की जांच कर सकते हैं। प्राधिकारी द्वारा दिए गए विश्लेषणों से वस्तुतः यह अर्थ निकलता है कि केवल एक कंपनी जो वाणिज्य उत्पादन नहीं करती है, आवेदन दे सकती है। वस्तुतः इसका तात्पर्य यह निकलेगा कि पाटनरोधी शुल्क कंपनी द्वारा वाणिज्यिक उत्पादन शुरू न किए जाने की स्थिति में भी लागू किया जा सकता है। उपर्युक्त के होते हुए भी आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा दायर सूचना से यह सर्वता सिद्ध होता है कि इस अवधि के दौरान उसका निष्पादन प्रतिकूल और खराब था। आवेदक ने आवेदन और प्राधिकारी के विगत निर्धारणों पर भरोसा किया है। इसने देश में विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन हेतु विनिर्माण सुविधाएं स्थापित की हैं। देश में उत्पाद का ऐसा कोई दूसरा उत्पादक नहीं है जो आवेदक द्वारा वाणिज्यिक उत्पादन शुरू करने से पूर्व देश में विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन कर रहा हो। प्राधिकारी द्वारा की गई पूर्ववर्ती जांच में शुरुआत के चरण में मध्यम घनत्व वाले फाइबर बोर्ड के सभी प्रकार शामिल थे। हितबद्ध पक्षकारों ने इस आधार पर पतले बोर्डों को अलग रखने का पुरजोर तर्क दिया कि इनका भारत में उत्पादन नहीं हो रहा है। प्राधिकारी द्वारा इस बात से संतुष्ट होने के बाद कि भारत में पतले बोर्ड का कोई उत्पादन नहीं होता है, विचाराधीन उत्पाद के दायरे को 6 मिमी. और उससे अधिक सीमित कर दिया। इसके अलावा, आवेदक ने क्षति अवधि में अपने उत्पादन और बिक्री की सीमा तक हुई क्षति के बारे में सूचना प्रदान की है। प्राधिकारी उसकी मौजूदगी की सीमा तक घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच कर सकते हैं।
- यह तर्क कि आवेदक भारत में पहले से ही स्थापित उद्योग है, और उसकी उत्पादन लाइन का कार्यान्वयन अलग-अलग मोटाई की अन्य लाइन के साथ किया जा रहा है, निराधार है क्योंकि आवेदक के पास वर्तमान संरचना से पूर्व फाइबर बोर्ड का उत्पादन और बिक्री करने की कोई उत्पादन लागत नहीं थी। कंपनी की कोई "वर्तमान संरचना" नहीं थी। आवेदक की मंशा 3 उत्पादन लाइनें (i) पतली फाइबर बोर्ड लाइन, (ii) मोटी फाइबर बोर्ड लाइन (जिसकी अभी स्थापना की जा रही है) और (iii) पार्टीकल बोर्ड लाइन स्थापित करने की है। इसके अलावा, आवेदक ने फ्लोर टाइलों, डोर स्किन, लेमिनेटिड फ्लोरिंग, डायरेक्ट प्रिंटेड बोर्ड, इंसुलेशन व हार्ड बोर्ड, फ्लश डोर, प्लाई बोर्ड, वेनियर कोटेड बोर्ड, फर्नीचर एवं मिक्सचर कॉम्प., कंपोजिट बोर्ड, डेकोरेटिव लेमिनेटिड बोर्ड, ब्लॉक बोर्ड, यू वी कोटेड बोर्ड तथा लेमिनेटेडिड पार्टीकल एवं एम डी एफ बोर्डों जैसे अन्य अनुषंगी उत्पादों हेतु सुविधाएं स्थापित की हैं। यह मानते हुए कि यह कंपनी "मौजूदा" कंपनी है और देश में अब तक उत्पादित न किए जा रहे किसी उत्पाद की उत्पादन लाइन जोड़ने

के साथ मौजूदा संरचना की पूर्ति करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं, तक भी यह घरेलू उद्योग की स्थापना के लिए वास्तविक व्यवधान की श्रेणी में आएगा क्योंकि विचाराधीन उत्पाद का पूर्व में उत्पादन नहीं किया जा रहा था और विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन हेतु नई उत्पादन सुविधाएं स्थापित की जा रही थीं ।

- जहां तक आंकड़ों के संग्रहण से जुड़े तर्क का संबंध है, यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि एक हितबद्ध पक्षकार वर्तमान मामले में जांच अवधि के रूप में वर्ष 2010-11 पर विचार करने का सुझाव दे रहा है । प्रथमतः यह मामला नवंबर, 2011 में शुरू किया गया था और इसलिए 2010-11 की जांच अवधि वर्तमान प्रयोजनार्थ पुरानी अवधि बन जाएगी । द्वितीयतः विचारणीय अवधि से अधिक की अवधि से किसी पक्षकार के हित के प्रति भेदभाव निश्चित तौर पर नहीं हो सकता है । यदि 2010-11 की अवधि वर्तमान प्रयोजनार्थ उचित होती तो निश्चित तौर पर परवर्ती तिमाही को जोड़ना कम अनुचित नहीं होता ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आवेदक के लिए परवर्ती लागत और नियत लागत अधिक होगी, आवेदक ने संयंत्र की स्थापना के समय उसके द्वारा निर्धारित उत्पादन लागत के बारे में सूचना प्रदान की है । यह लागत उत्पादन के कम स्तर पर नहीं है । यह लागत क्षमता उपयोग के काफी उच्च स्तर पर है । मात्र इस तथ्य से कि आवेदक की उत्पादन लागत अधिक हो सकती है, आवेदक को कानून के अंतर्गत राहत प्रदान करने से वंचित नहीं किया जा सकता । इसका तात्पर्य मात्र यह है कि क्षति का कोई अन्य कारक हो सकता है जैसे कि शुरुआती प्रचालन । इसके अलावा, कानून में ऐसे "अन्य कारकों" के लिए समायोजन की जरूरत का प्रावधान है, कानून में यह प्रावधान नहीं है कि क्षति के बारे में नकारात्मक जांच परिणाम दर्ज किया जाए । जब प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालता है कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले कुछ अन्य कारक हैं, स्पष्ट तौर पर हितबद्ध पक्षकार "कारणात्मक संबंध" की व्याख्या "उक्त" कारणात्मक संबंध के रूप में करने की कोशिश कर रहे हैं ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि अन्य भारती उत्पादक (ग्रीन प्लाई) के ही उत्पादन आंकड़े दिए गए हैं । क्षति से संबंधित अन्य सभी आंकड़े गायब हैं । आवेदक ने यह तर्क दिया है कि "अन्य घरेलू उत्पादकों" के बारे में क्षति संबंधी सूचना देने की कोई विधिक अपेक्षा नहीं है । आवेदक ने "घरेलू उद्योग" के बारे में क्षति संबंधी सूचना प्रदान की है । आवेदक ने यह दावा किया है कि वह "घरेलू उद्योग" है और उसने तदनुसार अपने खुद के प्रचालनों के बारे में सूचना प्रदान की है । आवेदक ने यह दावा नहीं किया है कि आवेदक और ग्रीन प्लाई घरेलू उद्योग हैं । नियमों में घरेलू उद्योग के बारे में क्षति निर्धारण की अपेक्षा की गई है और इसलिए घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में ग्रीन प्लाई से संबंधित सूचना पूर्णतः अप्रासंगिक बन जाती है । तथापि, यह उल्लेखनीय है कि उत्पाद के पाटन के मद्देनजर ग्रीन प्लाई ने विचाराधीन उत्पाद का पूर्ण उत्पादन ही शुरू नहीं किया है ।

- क्षति से संबंधित तर्क के बारे में ऐसा कोई नकारात्मक आंकड़ा नहीं है । उत्पादकता में सुधार का अर्थ यह नहीं है कि घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है । वर्तमान याचिका वास्तविक व्यवधान के बारे में है । चूंकि आवेदक उत्पादन शुरू करने के बाद अपना उत्पादन बढ़ा रहा है इसलिए यह स्पष्ट है कि समस्त व्यापारिक व्यव वाणिज्यिक उत्पादन शुरू करने वाली किसी कंपनी से आरंभिक वृद्धि होने की आशा करेंगे । जहां तक आबद्ध खपत का संबंध है, प्राधिकारी के पास संगत सूचना उपलब्ध है । उत्पादन और बिक्री के साथ मालसूची की तुलना से यह स्पष्ट पता चलता है कि -

- i. कंपनी द्वारा अनुमानित स्तर से काफी कम पर उत्पादन किया जा रहा था ।
- ii. उत्पादन के कम स्तर के बावजूद मालसूची में वृद्धि हो रही थी ।
- iii. मालसूची को सीमित/प्रतिबंधित करने के लिए कंपनी को कम स्तर के बावजूद उत्पादन सीमित/कम करना पड़ा था ।
- iv. उत्पादन के साथ मालसूची में वृद्धि, उत्पादन पर प्रतिबंध के साथ मालसूची में गिरावट से स्पष्टतः यह सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग मालसूची स्तर पर अंकुश रखने के लिए अपने उत्पादन को विनियमित कर रहा है । आवेदक का अनुरोध है कि कार्यरत और उपलब्ध मानव घंटों से स्पष्ट तौर पर यह सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग को देश में उत्पाद के पाटन के कारण संयंत्र को अत्यधिक सीमा तक निष्क्रिय रखने के लिए बाध्य किया गया है ।

• जहां तक जी एफ ए, एन एफ ए और कम कीमत पर बिक्री से जुड़ी सूचना का संबंध है, संगत सूचना प्राधिकारी के पास उपलब्ध है । नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी के लिए निवेश पर आय पर विचार करते हुए क्षति का निर्धारण करना अपेक्षित होता है न कि जी ए ए और एन एफ ए पर विचार कर । इसके अलावा, प्राधिकारी द्वारा कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण करना अपेक्षित होता है न कि आवेदक द्वारा । निर्धारित प्रपत्र में आवेदक द्वारा कहीं भी यह सूचना प्रदान करना अपेक्षित नहीं है ।

• जहां तक इस तर्क का संबंध है कि समूची क्षति अवधि के दौरान इंडोनेशिया से आयात कमोवेश समान रहे हैं; किसी एकल देश से आयातों की कम मात्रा का अर्थ यह नहीं है कि उससे क्षति नहीं हुई है । किसी ने यह तर्क नहीं दिया है कि इंडोनेशिया से आयात की मात्रा न्यूनतम सीमा से कम है अथवा इंडोनेशिया के संबंध में पाटन मार्जिन न्यूनतम है अथवा इंडोनेशिया और अन्य संबद्ध देशों के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति काफी अलग है ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति का सामना न किया जा सके । जहां घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचयी निर्धारण करना अपेक्षित होता है वहां यह तथ्य अप्रासंगिक बन जाता है कि किसी कंपनी विशेष से आयात की मात्रा समान रही है ।

• नियमावली के अनुबंध-1 में यह उपबंध है कि प्रत्येक मामले के गुण-दोष के आधार पर बिक्री की शर्तों और निबंधनों, कराधान, व्यापार स्तर, मात्रा, भौतिक विशेषताओं में अंतरों और कीमत तुलनीयता को प्रभावित कर सकने वाले किन्हीं अन्य अंतरों सहित कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने वाले अंतरों के लिए विधिवत छूट दी जाएगी । यह देखा जाएगा कि अंतर करने वाले किसी कारक की मौजूदगी ही पर्याप्त है । वाणिज्यिक में ऐसे कारक को वह कारक माना जाना चाहिए जो कीमत को प्रभावित करता है । उत्पादकों को ऐसा कारक अनवरत लागू करना चाहिए । उदाहरणार्थ यदि विदेशी उत्पादकों ने उस कीमत पर अलग-अलग मोटाई के बोर्डों की बिक्री की है जिसमें मोटाई का एक मापदंड नहीं माना जाता है तो अलग-अलग मोटाई वाले बोर्डों के लिए पृथक सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन का निर्धारण करना आवश्यक नहीं हो सकता है । अतः प्राधिकारी को सर्वप्रथम प्रश्नावली के उत्तर और आयात आंकड़ों की जांच करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि क्या विदेशी उत्पादकों ने कीमत निर्धारित करने के लिए कुछ मापदंडों को सुसंगत रूप से पालन किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

94. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में हितबद्ध पक्षकारों के विभिन्न अनुरोधों को नोट किया है और रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों तथा लागू कानून पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निम्नानुसार विश्लेषण किया है। हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों पर संगत सीमा तक विचार किया गया है और उनकी निम्नानुसार तथा इस जांच परिणाम के संगत खंडों में जांच की गई है।

95. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में घरेलू उद्योग को हुई क्षति के प्रदर्शक के रूप में "वास्तविक व्यवधान" का उल्लेख नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह तर्क झूठा और भ्रामक है क्योंकि जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का पैरा 26 निम्नानुसार है :

"उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के लिए उसकी स्थापना में स्पष्ट तौर पर वास्तविक व्यवधान उत्पन्न हुआ है। इसके अलावा घरेलू उद्योग को क्षति की मौजूदगी की सीमा तक स्पष्टतः वास्तविक क्षति भी हुई है। संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद का निर्यात उसके संबद्ध सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया जा रहा है जिससे उत्पाद का पाटन हुआ है। घरेलू उद्योग को "क्षति" हुई है जो स्पष्ट तौर पर पाटित आयातों के कारण हुई है।"

96. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि निर्यात कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमत से तुलनीय है, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि संबद्ध वस्तु का पाटन नहीं हुआ है। वस्तुतः निर्यातकों की प्रश्नावली के उत्तरों से यह पता चलता है कि भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन हुआ है।

97. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि वाणिज्यिक उत्पादन के 17 माह बाद भी घरेलू उद्योग आरंभिक चरण में होने का दावा करता है और उस स्थिति में वास्तविक व्यवधान का दावा बेबुनियाद है जब बिक्री कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमत से अधिक प्राप्त की गई हो, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु का उत्पादन केवल फरवरी, 2010 में ही शुरू किया था और इस प्रकार यह दावा न्यायोचित है। वाणिज्यिक उत्पादन के 17 माह बाद ही "क्षति" होने से घरेलू उद्योग के दावे की पुष्टि होती है क्योंकि आर्थिक किल्लत और शुरुआती प्रचालनों का कारण नहीं माना जा सकता। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के अस्तित्व की अवधि के लिए उसके वास्तविक निष्पादन पर विचार करते हुए और अनुमानित/लक्षित निष्पादन के साथ उसके निष्पादन की तुलना करने पर घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

98. जहां तक इस तर्क का संबंध है, आयातों में वृद्धि की दर केवल 1% थी जबकि मांग में वृद्धि की दर 16% थी; प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसकी जांच इस पृष्ठभूमि में करने की जरूरत है कि हाल तक भारत में संबद्ध वस्तु का कोई घरेलू उत्पादक नहीं था और इसलिए समूची मांग की पूर्ति आयातों द्वारा की जाती थी। बाजार में घरेलू उत्पादकों की मौजूदगी से ही बाजार हिस्से पर प्रभाव पड़ने की संभावना होती है क्योंकि अब प्रयोक्ताओं के पास स्वदेशी स्रोतों से भी संबद्ध वस्तु की खरीद

करने का विकल्प होगा। घरेलू उद्योग ने पर्याप्त क्षमताएं स्थापित की हैं किन्तु वह क्षमता उपयोग के लक्षित स्तर पर नहीं पहुंच सका है जिसके परिणामस्वरूप उसका क्षमता उपयोग काफी कम रहा है।

99. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि प्रपत्र IV-क में यह दर्शाया गया है कि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्से और बिक्री में वृद्धि हुई है; प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस बात पर विचार करते हुए कि घरेलू उद्योग ने हाल ही में संबद्ध वस्तु का उत्पादन शुरू किया है, उसके निष्पादन में सुधार होने की संभावना है। किसी भी उत्पादक से यह आशा की जाती है कि वह कालान्तर में अपने उत्पादन और बिक्री में सुधार करने के लिए कदम उठाएगा। इसके परिणामस्वरूप क्षमता उपयोग में धीरे-धीरे सुधार होता है। इस प्रकार क्षति अवधि में उत्पादन और बिक्री में वृद्धि से घरेलू उद्योग द्वारा बाजार में स्वयं को स्थापित करने के लिए किए गए प्रयासों का स्पष्ट पता चलता है। तथापि उसका क्षमता उपयोग अनुमानित स्तर से काफी कम रहा है।

100. जहां तक भारत में उत्पादन लागत से जुड़े तर्क का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि आवेदक ने हाल ही में अपना संयंत्र स्थापित किया है और उसने विदेशी उत्पादकों के पास उपलब्ध मशीनों से तुलनीय मशीनें लगाने का दावा किया है। उन्होंने यह तर्क दिया है कि तुलनीय प्रौद्योगिकी, संयंत्र एवं उपकरण पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की परिवर्तन लागत विदेशी उत्पादकों की परिवर्तन लागत से तुलना में काफी अधिक नहीं होगी। यह भी तर्क दिया गया है कि इस व्यापार में मशीनों के सीमित आपूर्तिकर्ता हैं और यह कि कीमत कारकों में अंतर की वजह से छिट-पुट अंतर हो सकता है। लेकिन परिवर्तन लागत में भारी अंतर की संभावना नहीं है। प्राधिकारी घरेलू उद्योग के इस तर्क में गुण पाते हैं कि प्रति सी बी एम आधार पर निर्धारित लागत के कुछ घटकों के कारण शुरूआती प्रचालनों की वजह से लागत अधिक हो सकती है परंतु यदि इस लागत पर क्षमता उपयोग के उचित स्तर पर विचार किया जाए तो कोई खास अंतर नहीं मिलेगा।

101. जहां तक सार्वजनिक हित के मुद्दे का संबंध है, हितबद्ध पक्षकार ने इस बात की पुष्टि नहीं की है कि वर्तमान मामले में पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना किस प्रकार सार्वजनिक हित में नहीं होगा। "सार्वजनिक हित" वाक्य में उत्पादकों, प्रयोक्ताओं/उपभोक्ताओं और आम जनता जैसे सभी हितधारकों के हितों का प्रदर्शन होगा। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य सामान्यतः "पाटन" की अनुचित व्यापार पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को हुई "क्षति" को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल किया जा सके, जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयातों पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगेगा; अतः उपभोक्ताओं के लिए उन उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों द्वारा भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी खासकर तब जबकि पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक राशि तक सीमित रखा जाएगा। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी।

102. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा पर्याप्त मात्रा में आयात किए गए हैं; प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तर्क में कोई दम नहीं है क्योंकि आवेदक ने कुल *** सी बी एम के आयात किए थे जिसे 68273 सी बी एम के बाजार आकार की तुलना में काफी नहीं माना जा सकता है और घरेलू उद्योग की स्थापित क्षमता 50,000 सी बी एम की है ।

103. जहां तक "भारत में किसी उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान" से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसी स्थिति हो सकती है जहां यद्यपि उत्पाद का उत्पादन तो हो रहा है तथापि वास्तविक व्यवधान का परिणाम दर्ज किया जा सकता है क्योंकि "वास्तविक व्यवधान" का तात्पर्य यह नहीं है कि संदर्भाधीन वस्तु का कोई उत्पादन नहीं होना चाहिए था । यह देखा जाता है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा दायर सूचना से यह पता चलता है कि इस अवधि में निष्पादन में गिरावट आई है । घरेलू उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान के आकलन के बारे में नियम और विनियम मौन हैं । इस मामले में आवेदक ने भारत में संबद्ध वस्तु के बारे में अपना उद्योग स्थापित करने का प्रयास किया है जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट हो जाएगा कि संयंत्र स्थापित किया गया और काफी निवेश किया गया है; परंतु व्यवहार्य वाणिज्यिक उत्पादन शुरू होने से पूर्व पाटित आयातों ने स्थापित संयंत्र को अत्यधिक अप्रयुक्त बना दिया । इन परिस्थितियों में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को "क्षति" हुई है भले ही इसे स्थापित उद्योग माना जाए या मात्र "नव स्थापित" । घरेलू उद्योग के संयंत्र और जनशक्ति का उपयोग न होने के कारण हुए भारी वित्तीय घाटे को अत्यधिक माना जाता है भले ही यह स्थापित उद्योग या ऐसे मौजूदा उद्योग से संबंधित है जो नवोदित या नव स्थापित है । परवर्ती मामले में पाटित आयातों के कारण "घरेलू उद्योग, स्थापित हो या अन्यथा के विकास में उन निर्णयों के पालन में विलंब कराकर स्पष्टतः वास्तविक व्यवधान उत्पन्न किया है जो किसी उचित बाजारी वातावरण के लिए जा सकते थे" ।

104. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि वास्तविक व्यवधान और वास्तविक क्षति साथ-साथ नहीं हो सकती, प्राधिकारी इससे सहमत नहीं हैं । पाटित आयातों के प्रभाव का एक रोचक उदाहरण ई यू जापानी ट्राम्स मामले (विनियम (ई ई सी) 165/90 ओ जे एल 20, 25190) में देखा जा सकता है । इस मामले में आयात की मात्रा, प्रस्तावित कीमत, घरेलू उद्योग की क्षति को देखते हुए ई यू प्राधिकारियों ने यह निर्धारित किया कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है । इस मामले के तथ्यों से वास्तविक क्षति और वास्तविक व्यवधान के रूप में क्षति दोनों के रूप में निष्कर्ष को समर्थन मिला ।

105. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आवेदक भारत में पहले से स्थापित एक उद्योग है और उनकी उत्पादन अलग-अलग मोटाई की एक लाइन से ही समर्थित हो रही है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह तथ्यतः गलत है क्योंकि वर्तमान संरचना से पूर्व फाइबर बोर्ड के उत्पादन और बिक्री हेतु आवेदक की कोई उत्पादन लाइन नहीं थी ।

106. जहां तक आंकड़ों के मिलान से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामला 11 नवंबर, 2011 को शुरू किया गया था, इस प्रकार 2010-11 के रूप में जांच अवधि

तुलनात्मक रूप से पुरानी होनी चाहिए थी । इसके अलावा, अपेक्षित लंबी अवधि से प्राधिकारी आरोपित पाटन और परिणामी क्षति के निर्धारण हेतु अपेक्षाकृत नवीनतम आंकड़े ले सकते हैं ।

107. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि दूसरे भारतीय उत्पादक (मै. ग्रीन प्लाई) के उत्पादन आंकड़े ही दिए गए हैं और क्षति से संबंधित अन्य सभी आंकड़े गायब हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. ग्रीन प्लाई ने विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन ही पूर्णतः शुरू नहीं किया था ।

108. जहां तक क्षति से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में आवेदन मुख्यतः वास्तविक व्यवधान के बारे में है । इसके अलावा, यही आशा की जाती है कि अपना उत्पादन बढ़ाते हुए आवेदक आरंभ में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित करेगा । मालसूची की तुलना उत्पादन और बिक्री के साथ करने पर यह स्पष्ट पता चलता है कि कंपनी अनुमानित स्तर से काफी कम पर उत्पादन कर रही थी । उत्पादन के इतने कम स्तर के बावजूद उसकी मालसूचियों में वृद्धि हो रही थी जिससे उसे कम स्तर के बावजूद उत्पादन में कमी/कटौती करनी पड़ी थी ताकि मालसूची कम/सीमित रखी जा सके । घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि वह पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण मालसूची का स्तर कम रखने के लिए अपना उत्पादन विनियमित कर रहा है ।

109. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि इंडोनेशिया से आयात समूची क्षति अवधि में कमोबेश समान रहे हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इंडोनेशिया से आयात की समान मात्रा होने का तात्पर्य यह नहीं है कि घरेलू उद्योग को क्षति नहीं होगी । इंडोनेशिया से आयात की मात्रा न्यूनतम सीमा से अधिक है और पाटन मार्जिन काफी अधिक है ।

110. उत्पादन लागत, आवेदक कंपनी द्वारा क्षमता उपयोग बाजार हिस्से, मांग की तुलना में क्षमता, आवेदक की बिक्री कीमत और आयात कीमत के बीच संबंध, कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री, लाभप्रदता, उत्पादकता, कच्ची सामग्री और मजदूरी लागत में वृद्धि, कारणात्मक संबंध का अभाव आदि जैसे क्षति से संबंधित अन्य मुद्दों की समुचित जांच इस जांच परिणाम के संगत खंडों में की गई है ।

संचयी निर्धारण

111. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (iii) में यह उपबंध है कि जब एक से अधिक देश से हुए किसी उत्पाद के आयात की एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही है तो प्राधिकारी के लिए केवल उस स्थिति में ऐसे आयातों के संचयी प्रभाव का निर्धारण अपेक्षित होता है जब वह यह निर्धारित करे कि :-

- (क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टिकृत पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त दो प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों की तीन प्रतिशत (या अधिक) है अथवा जहां अलग-अलग देशों का

निर्यात तीन प्रतिशत से कम है वहां आयातों का संचयी हिस्सा समान वस्तु के आयातों के सात प्रतिशत से अधिक है, और

(ख) आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है ।

112. प्राधिकारी नोट करते हैं कि :

- भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन कई देशों से किया जा रहा है ।
- प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है ।
- प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है ।
- आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है क्योंकि संबद्ध देशों से हुए निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समान वस्तुओं से सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं, जैसा कि निम्नलिखित से स्पष्ट होता है :

क. संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा विनिर्मित उत्पादों और आवेदक द्वारा विनिर्मित उत्पादों में तुलनीय गुण-धर्म हैं । दूसरे शब्दों में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा आपूर्त और घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत वस्तुएं आपस में समान वस्तुएं हैं ।

ख. ऐसे सामान्य पक्षकार हैं जो विभिन्न स्रोतों से आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु का प्रयोग कर रहे हैं । आयातित और घरेलू दोनों संबद्ध वस्तुएं एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग की जा रही हैं तथा घरेलू उत्पाद एवं आयातित उत्पादों के बीच सीधी प्रतिस्पर्धा है और यह प्रतिस्पर्धा आयातित उत्पादों में आपस में भी है ।

ग. संबद्ध देशों के निर्यातकों और घरेलू उद्योग ने समान ग्राहकों को समान अवधि में उत्पाद की बिक्री की है । बिक्री माध्यम तुलनीय है ।

घ. प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा काफी अधिक है ।

113. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के निर्यातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचयी निर्धारण करना उचित समझते हैं ।

114. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में यह उपबंध है कि क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव ; तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी । पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।"

115. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (IV) में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के बारे में निम्नानुसार उल्लेख है : "संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा ।"

116. आवेदक घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि भारत में उत्पाद के पाटन से घरेलू उद्योग की स्थापना में वास्तविक व्यवधान उत्पन्न हो रहा है । उसने वाणिज्यिक उत्पादन फरवरी, 2010 में शुरू किया है और उसका 3 वर्ष से अधिक का प्रचालनात्मक इतिहास नहीं है । अतः संबद्ध घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग के निष्पादन का आर्थिक विश्लेषण उस अवधि के लिए किया गया है जिस अवधि में याचिकाकर्ता ने उत्पाद का उत्पादन और उसकी बिक्री की है । यह विश्लेषण सर्वप्रथम वार्षिक आधार पर और तत्पश्चात् तिमाही दर तिमाही आधार पर घरेलू उद्योग के निष्पादन पर विचार करते हुए किया गया है । तथापि, आयात की मात्रा और बाजार हिस्से के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने जांच अवधि और पूर्ववर्ती 3 वर्षों पर विचार किया है ।

पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

भारत में मांग/खपत

117. देश में उत्पाद की मांग का निर्धारण घरेलू उत्पादकों की घरेलू बिक्री और सभी स्रोतों से हुए आयातों की मात्रा के रूप में किया गया है ।

वार्षिक विश्लेषण

विवरण	माप की इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	अप्रैल'10- जून'11 (जांच अवधि)	वार्षिकीकृत (जांच अवधि)
घरेलू उद्योग की बिक्री	सीबीएम	-	-	334	21,297	17,038
अन्य भारतीय उत्पादक की बिक्री	सीबीएम	-	-	-	4,030	3,224
संबद्ध देश आयात	सीबीएम	10,936	32,223	44,009	58,504	46,803
अन्य देश आयात	सीबीएम	975	11,704	8,618	1,510	1,208
भारत में मांग	सीबीएम	11,911	43,927	52,961	85,341	68,273

तिमाही विश्लेषण

मांग	यू ओ एम	फर.'10- मार्च'10	अप्रैल'10- जून'10	जुलाई'10- सितं.'10	अक्टू.'10- दिसं.'10	जन.'11- मार्च'11	अप्रैल'11- जून'11
घरेलू उद्योग की बिक्री	सीबीएम	***	***	***	***	***	***
अन्य भारतीय उत्पादक की बिक्री	सीबीएम	-	-	-	***	***	***
संबद्ध देश आयात	सीबीएम	8,259	10,486	8,807	10,284	14,985	13,942
अन्य देश आयात	सीबीएम	959	306	236	260	382	326
भारत में मांग	सीबीएम	9,552	13,016	12,870	15,852	21,161	22,443

118. यह नोट किया जाता है कि भारत में विचाराधीन उत्पाद की मांग में कालांतर में अत्यधिक वृद्धि हुई है ।

संबद्ध देशों से आयात की मात्रा

119. संबद्ध देशों तथा अन्य देशों से संबद्ध वस्तु के आयात की मात्रा की जांच आई बी आई एस से घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त सौदेवार आयात के आंकड़ों के आधार पर की गई है। यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद का कोई अनन्य सीमाशुल्क वर्गीकरण नहीं है और इसलिए सारांशीकृत सीमाशुल्क आंकड़ों (डी जी सी आई एंड एस द्वारा जारी किए गए अनुसार) पर भरोसा नहीं किया गया है। इस प्रकार गौण स्रोत (आई बी आई एस) द्वारा उपलब्ध कराए गए अलग-अलग सौदेवार आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। अतः मात्रात्मक विश्लेषण के लिए आई बी आई एस द्वारा सूचित आयात की मात्रा पर विचार किया गया है। संबद्ध वस्तु के आयात की मात्रा निम्नानुसार रही है :

वार्षिक विश्लेषण

आयातक मात्रा	यू ओ एम	2007-08	2008-09	2009-10	अप्रैल'10- जून'11 (जांच अवधि)	वार्षिकीकृत (जांच अवधि)
इंडोनेशिया	सीबीएम	-	39	6,957	10,177	8,142
मलेशिया	सीबीएम	2,943	20,244	22,783	22,052	17,642
श्रीलंका	सीबीएम	7,934	11,171	13,270	20,410	16,328
चीन जन.गण.	सीबीएम	59	769	999	5,865	4,692
कुल संबद्ध देश	सीबीएम	10,936	32,223	44,009	58,504	46,803
अन्य देश	सीबीएम	975	11,704	8,618	1,510	1,208
कुल आयातक	सीबीएम	11,911	43,927	52,627	60,014	48,011

तिमाही विश्लेषण

आयात मात्रा	यू ओ एम	फर.'10- मार्च'10	अप्रैल'10- जून'10	जुलाई'10- सितं.'10	अक्टू.'10- दिसं.'10	जन.'11- मार्च'11	अप्रैल'11- जून'11
इंडोनेशिया	सीबीएम	3,553	3,690	1,984	1,130	1,568	1,805
मलेशिया	सीबीएम	2,417	3,873	4,221	3,643	6,131	4,184

श्रीलंका	सीबीएम	2,093	2,663	2,334	4,371	5,332	5,710
चीन जन.गण.	सीबीएम	196	259	269	1,140	1,955	2,243
कुल संबद्ध देश	सीबीएम	8,259	10,486	8,807	10,284	14,985	13,942
अन्य देश	सीबीएम	959	306	236	260	382	326
कुल आयातक	सीबीएम	9,218	10,792	9,043	10,543	15,368	14,268

120. प्राधिकारी नोट करते हैं कि :

- (क) संबद्ध देशों से हुए आयातों में भारी वृद्धि हुई है । आयातों में क्षति अवधि के भीतर तिमाही आधार पर अथवा क्षति अवधि के दौरान विचार करने पर आयातों में वृद्धि हुई है;
- (ख) इस बात को देखते हुए कि घरेलू उद्योग ने वाणिज्यिक उत्पादन फरवरी, 2010 में शुरू किया है, आयात की मात्रा में गिरावट घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन के अनुरूप होनी चाहिए थी परंतु पूर्ववर्ती तिमाही की तुलना में जुलाई, 2010-सितंबर, 2010 की तिमाही को छोड़कर संबद्ध देशों से आयात की मात्रा में कोई गिरावट नहीं आई है । इसके अलावा, स्वाभाविक गिरावट प्रदर्शित करने के बजाए परिवर्ती तिमाही में मात्रा में वृद्धि हुई है और अब यह पहले से काफी अधिक है ।
- (ग) आयातों में वृद्धि काफी अधिक हुई है । जहां वर्ष 2007-08 में आयात की मात्रा 11,911 सी बी एम थी वहीं अप्रैल-जून, 2011 की तिमाही में आयात की मात्रा 14268 सी बी एम थी । समग्र आधार पर क्षति अवधि के दौरान आयात की मात्रा में 300% से अधिक की वृद्धि हुई थी।

मांग में बाजार हिस्सा

121. घरेलू उद्योग के हिस्से की तुलना में आयातों के बाजार हिस्से में प्रवृत्तियों का विश्लेषण निम्नलिखित तालिका में वार्षिक आधार पर और तिमाही आधार पर किया गया है :

वार्षिक विश्लेषण

विवरण	यू ओ एम	2007-08	2008-09	2009-10	अप्रैल'10- जून'11 (जांच अवधि)
घरेलू उद्योग	%	-	-	0.63	24.96
अन्य भारतीय उत्पादक	%	-	-	-	4.72
कुल संबद्ध देश	%	91.82	73.36	83.10	68.55
अन्य देश	%	8.18	26.64	16.27	1.77

तिमाही विश्लेषण

मांग में बाजार हिस्सा	यू ओ एम	फर.'10- मार्च'10	अप्रैल'10- जून'10	जुलाई'10- सितं.'10	अक्टू.'10- दिसं.'10	जन.'11- मार्च'11	अप्रैल'11- जून'11
घरेलू उद्योग	%	***	***	***	***	***	***
अन्य भारतीय उत्पादक	%	***	***	***	***	***	***
संबद्ध देश	%	86.46	77.99	66.22	64.87	73.81	62.12
अन्य देश	%	10.04	2.28	1.78	1.64	1.88	1.45

122 प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु का वाणिज्यिक उत्पादन वर्ष 2009-10 में शुरू किया था । इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने केवल 2 माह तक प्रचालन किया । वर्ष 2010-11 याचिकाकर्ता कंपनी के वाणिज्यिक उत्पादन का प्रथम वर्ष था । संबद्ध देशों के हिस्से के तिमाहीवार विश्लेषण से यह पता चलता है कि यहां अन्य देशों के आयातों के हिस्से में भारी गिरावट आई है वहीं संबद्ध देशों के लिए आयात की मात्रा में कोई गिरावट नहीं देखी गई है । इसके अलावा तिमाही दर तिमाही आधार पर कुल मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में उतार-चढ़ाव रहा है ।

उत्पादन, बिक्री, क्षमता और क्षमता उपयोग

123. घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री, क्षमता और क्षमता उपयोग का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:

वार्षिक विश्लेषण

	यू ओ एम	2009-10	अप्रैल'10- जून'11 (जांच अवधि)	वार्षिकीकृत (जांच अवधि)
कुल उत्पादन	सी बी एम	***	***	***
6 मि.मी. से कम	सी बी एम	2,262	22,980	18,384
6 मि.मी. से अधिक	सी बी एम	-	***	***
बिक्री मात्रा	सी बी एम	334	21,297	17,038
आबद्ध खपत	सी बी एम	***	***	***
क्षमता	सी बी एम	8,333	62,500	50,000
क्षमता उपयोग (@@)	%	***	***	***

@@ कुल उत्पादन पर आधारित

तिमाही विश्लेषण

	यू ओ एम	फर.'10- मार्च'10	अप्रैल'10- जून'10	जुलाई'10- सित.'10	अक्टू.'10- दिस.'10	जन.'11- मार्च'11	अप्रैल'11- जून'11
उत्पादन	सी बी एम	***	***	***	***	***	***
6-मि.मी. से कम	सी बी एम	***	***	***	***	***	***
6 मि.मी. से अधिक	सी बी एम	***	***	***	***	***	***
बिक्री मात्रा	सी बी एम	***	***	***	***	***	***
आबद्ध खपत	सी बी एम	***	***	***	***	***	***
क्षमता	सी बी एम	***	***	***	***	***	***
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***	***	***

124. उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग में सुधार प्रदर्शित हुआ है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने अपने प्रचालन के प्रथम वर्ष में ***% और प्रचालन के दूसरे वर्ष में ***% क्षमता उपयोग हासिल करने का अनुमान लगाया था, परंतु इस अनुमानित क्षमता उपयोग के मुकाबले घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग काफी कम रहा है। इस प्रकार घरेलू उद्योग उस सीमा तक उत्पादन क्षमता का उपयोग करने में समर्थ नहीं रहा है जिस सीमा तक वह पाटन के अभाव में प्राप्त कर सकता था।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

125. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती। आयात कीमत में वार्षिक घट-बढ़ का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :-

रु./सी बी एम

सी आई एफ निर्यात कीमत	2007-08	2008-09	2009-10	अप्रैल, 10-जून,
इंडोनेशिया	-	12,831	11,104	11,362
मलेशिया	10,980	11,609	10,726	11,797
श्रीलंका	12,352	13,236	11,929	12,616
चीन	7,488	10,234	11,307	11,198
कुल संबद्ध देश	11,956	12,142	11,162	11,947
अन्य देश	12,785	12,378	11,434	13,619
कुल आयात	12,024	12,205	11,206	11,989

126. आयात कीमत में तिमाहीवार घट-बढ़ का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:

सी आई एफ आयात कीमत	फर.'10- मार्च'10	अप्रैल'10- जून'10	जुलाई'10- सित.'10	अक्टू.'10- दिसं.'10	जन.'11- मार्च'11	अप्रैल'11- जून'11
कुल संबद्ध देश	11,572	11,764	11,847	11,818	11,934	12,256
अन्य देश	12,288	12,802	14,993	14,497	13,264	13,108
कुल आयातक	11,647	11,794	11,929	11,884	11,967	12,276

127. उपर्युक्त से प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों की सी आई एफ कीमत में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है। इसके अलावा अन्य देशों से आयातों की सी आई एफ कीमत संबद्ध देशों से सी आई एफ कीमत की तुलना में अधिक नोट की गई थी। वर्ष 2010-11 की दूसरी और तीसरी तिमाही में संबद्ध देशों से सी आई एफ आयात कीमत 21% तक संबद्ध देशों की कीमत से कम थी। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की परियोजना रिपोर्ट के अनुसार सी आई एफ कीमतें अनुमानित बिक्री कीमत से काफी कम थीं।

128. जैसा कि ऊपर नोट किया गया है, क्षति अवधि-और जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों की सी आई एफ कीमत में कोई परिवर्तन नहीं देखा गया है। प्राधिकारी ने संगत अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के लिए कच्ची सामग्री की कीमत में प्रवृत्ति का विश्लेषण किया है। इस संदर्भ में प्राधिकारी नोट करते हैं कि काष्ठ, ग्लू की लागत तथा अन्य रासायन उत्पादन लागत में प्रमुख घटक हैं। घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल उत्पादन लागत में काष्ठ, ग्लू की लागत और अन्य घटकों का हिस्सा 50 प्रतिशत से अधिक है। घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में प्रवृत्ति के विश्लेषण से यह संकेत मिलता है कि परियोजना रिपोर्ट में लगाए गए अनुमान के अनुसार कीमत की तुलना में काष्ठ की कीमत में भारी वृद्धि हुई है। जहां तक संबद्ध देशों से अन्य निर्यातकों के बारे में कच्ची सामग्री: अर्थात् काष्ठ की कीमत में घट-बढ़ का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सहयोगी निर्यातकों में से एक निर्यातक मै. एवरग्रीन की वेबसाइट में उपलब्ध काष्ठ की कीमत में प्रवृत्तियों से संबंधित सूचना से निम्नलिखित प्रवृत्ति का पता चलता है।

सूचीबद्ध	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
काष्ठ कीमत सूचीबद्ध *	136	132	121	148	160
काष्ठ कीमत सूचीबद्ध	100	97	89	109	118

*वर्ष 2005 को आधार वर्ष लेते हुए

129. उपर्युक्त से प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान काष्ठ की कीमत में वृद्धि हुई है और यह वृद्धि जांच अवधि में 18% हुई है। तथापि, उसका प्रदर्शन संबद्ध देशों से आयातों की सी आई एफ कीमत में परिवर्तनों में नहीं किया गया है। उपर्युक्त प्रवृत्तियों से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों के निर्यातकों ने उत्पादन लागत में वृद्धि को समाहित कर दिया है क्योंकि इसका उल्लेख सी आई एफ निर्यात कीमत में परिवर्तनों में नहीं किया गया है।

130. प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि काष्ठ के अलावा संबद्ध वस्तु के उत्पादन में ग्लू एक महत्वपूर्ण घटक है। ग्लू का विनिर्माण अलग-अलग रासायनों के संयोजन द्वारा किया जाता है जिनमें से सर्वाधिक प्रमुख हैं- पैराफिनवैक्स, यूरिया, मेलामाइन और मेथानोल। इर कच्ची सामग्रियों की आयात कीमत में प्रवृत्तियों का विश्लेषण संक्षेप में नीचे किया गया है जिससे भी यह पता चलता है कि इनमें से कुछ कच्ची सामग्रियों की दरों में भारी वृद्धि हुई है।

	इकाई	07-08	सूचीबद्ध	अप्रैल, 10- जून, 11 (जांच अवधि)	सूचीबद्ध	% वृद्धि
निविष्टि की लागत में घट-बढ़						
पैराफिन वैक्स	रु. किग्रा	40.26	100	57.21	142	42
यूरिया / (कारबेमी)	रु. किग्रा	12.32	100	13.24	107	7
मेलामाइन	रु. किग्रा	50.56	100	67.18	133	33
मेथानोल	रु. किग्रा	36.12	100	40.61	112	12

131. यह नोट किया जाता है कि ग्लू और अन्य प्रमुख निविष्टियों की लागत में अत्यधिक वृद्धि हुई है तथापि, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की सी आई एफ निर्यात कीमत में कोई उर्ध्वगामी प्रवृत्ति नहीं देखी गई है। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि निविष्टियों में लागत की वृद्धि को निर्यातकों ने समाहित कर दिया है।

कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री

132. कीमत कटौती का निर्धारण समूची क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति के साथ करने के बाद किया गया है। इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की गणना 1% हैंडलिंग प्रभार तथा लागू मूल सीमाशुल्क को संबद्ध देशों से आयात कीमतों के बारे में आई बी आई एस के आंकड़ों में सूचित मूल्य में जोड़ने के बाद की गई है।

133. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत छूट/कमीशन आदि तथा प्रदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, यदि कोई हो, की कटौती कुल बिक्री प्राप्ति में से की गई है।

134. कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देशों से आयातों के भारित औसत पहुंच कीमत की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षति रहित बिक्री कीमत के साथ की गई है।

कीमत कटौती

135. आयातों के पहुंच मूल्य के साथ घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के तुलनात्मक विश्लेषण से यह पता चलता है कि आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में निम्नलिखित सीमा तक कटौती हो रही है:

कीमत कटौती	यू ओ एम	2009-10	अप्रैल'10-जून'11 (जांच अवधि)
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	रू./सी बी एम	***	***
इंडोनेशिया			
पहुंच कीमत	रू./सी बी एम	12370	12657
कीमत कटौती	रू./सी बी एम	***	***
कीमत कटौती	%	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	30-40	20-30
मलेशिया			
पहुंच कीमत	रू./सी बी एम	11948	13142
कीमत कटौती	रू./सी बी एम	***	***
कीमत कटौती	%	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	30-40	20-30
श्रीलंका			
पहुंच कीमत	रू./सी बी एम	11929	12616
कीमत कटौती	रू./सी बी एम	***	***
कीमत कटौती	%	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	35-45	20-30
चीन जन.गण.			
पहुंच कीमत	रू./सी बी एम	12569	12474

कीमत कटौती	रू./सी बी एम	***	***
कीमत कटौती	%	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	30-40	25-35
कुल संबद्ध देश			
पहुंच कीमत	रू./सी बी एम	12024	12807
कीमत कटौती	रू./सी बी एम	***	***
कीमत कटौती	%	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	30-40	20-30

टिप्पणी: पहुंच कीमत की गणना संपूर्ण 2009-10 के वर्ष के आयातों के लिए और घरेलू उद्योग हेतु एन एस आर की गणना केवल 2 माह फरवरी, 10 से मार्च, 10 तक के लिए है।

136. उपर्युक्त से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि समस्त संबद्ध देशों से पहुंच कीमत के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती हो रही थी। यह भी नोट किया जाता है कि जहां वर्ष 2009-10 की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयातों के पहुंच मूल्य में मामूली वृद्धि हुई, वही कीमत कटौती की राशि में अत्यधिक गिरावट के कारण घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति में अत्यधिक कमी आई। अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग आयातों के पहुंच मूल्य के अनुरूप अपनी बिक्री कीमत कम करने के लिए बाध्य हुआ। यद्यपि, उसे घाटा जारी रहा जैसा कि बाद में इस जांच परिणाम में स्पष्ट किया गया है।

तिमाही विश्लेषण

कीमत कटौती	यू ओ एम	फर.'10- मार्च'10	अप्रैल'10- जून'10	जुलाई'10- सितं.'10	अक्टू.'10- दिसं.'10	जन.'11- मार्च'11	अप्रैल'11- जून'11
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	रू./सी बी एम	***	***	***	***	***	***
इंडोनेशिया							
पहुंच कीमत	रू./सी बी एम	12681	13062	11898	11963	12387	13335
कीमत कटौती	रू./सी बी एम	***	***	***	***	***	***

कीमत कटौती	%	***	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	30-40	20-30	25-35	25-35	25-35	20-30
मलेशिया							
पहुंच कीमत	रु./सी बी एम	11572	12341	13135	12942	13225	13945
कीमत कटौती	रु./सी बी एम	***	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	35-45	25-35	20-30	20-30	20-30	15-25
श्रीलंका							
पहुंच कीमत	रु./सी बी एम	13171	12626	12449	12464	12604	12807
कीमत कटौती	रु./सी बी एम	***	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	25-35	25-35	20-30	20-30	20-30	25-35
चीन जन.गण.							
पहुंच कीमत	रु./सी बी एम	13954	15298	17953	12317	12207	1180
कीमत कटौती	रु./सी बी एम	***	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	20-30	10-20	Negative	25-35	25-35	30-40
कुल संबद्ध देश							
पहुंच कीमत	रु./सी बी एम	12511	12740	12822	12562	12783	13056
कीमत कटौती	रु./सी बी एम	***	***	***	***	***	***

कीमत कटौती	%	***	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	30-40	20-30	20-30	20-30	20-30	20-30

टिप्पणी: पहुंच कीमत की गणना में केवल फरवरी, 10 और मार्च, 10 (2 माह) पर विचार किया गया है।

कम कीमत पर बिक्री

137. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के साथ क्षति रहित कीमत की तुलना से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग उत्पाद की कम कीमत पर बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ था :

रु./सी बी एम में

	यू ओ एम	अप्रैल'10-जून'11 (जांच अवधि)
क्षति रहित कीमत	रु./सी बी एम	***
पहुंच मूल्य (संबद्ध देश)	रु./सी बी एम	12807
कीमत से कम पर बिक्री	रु./सी बी एम	***
कम कीमत पर बिक्री	%	***
कम कीमत पर बिक्री	% रेंज	50-60

138. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम रही थी। अतः घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु की बिक्री पर उचित लाभ प्राप्त करने में समर्थ नहीं रहा था।

क्षति मार्जिन

139. आयातों की पहुंच कीमत के साथ क्षति रहित कीमत की तुलना से अत्यधिक क्षति मार्जिन का पता चलता है।

क्षति मार्जिन	यू ओ एम	एन आई पी	पहुंच कीमत	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन % रेंज
इंडोनेशिया	रु./सी बी एम	***	12657	***	***	55-65
मलेशिया	रु./सी बी एम	***	13142	***	***	65-75
श्रीलंका	रु./सी बी एम	***	12616	***	***	55-65

चीन	रु./सी बी एम	***	12474	***	***	75-85
कुल संबद्ध देश	रु./सी बी एम	***	12807	***	***	55-65

140. जांच अवधि के दौरान समस्त संबद्ध देशों से अत्यधिक क्षति मार्जिन के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा हुआ है और वह परियोजना रिपोर्ट के अनुसार लाभप्रदता का अनुमानित स्तर प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहा है।

लाभ/हानि

141. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से घरेलू उद्योग को प्राप्त लाभ निम्नानुसार था:

	यू ओ एम	2009-10	अप्रैल '10-जून '11 (जांच अवधि)
बिक्री की लागत	रु./सी बी एम	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	34
बिक्री कीमत	रु./जी बी एम	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	90
लाभ/ (हानि) प्रति इकाई	रु./जी बी एम	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	(100)	(8)
लाभ/ (हानि)	लाख रूपए	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	(100)	(519)

142. उपर्युक्त से प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2009-10 में चूंकि घरेलू उद्योग ने केवल 2 माह प्रचालन किया था इसलिए शुरुआती प्रचालनों और क्षमता उपयोग के कम स्तर, उसकी वास्तविक लागत, प्रति इकाई लाभ/हानि तथा लाभ/हानि का स्तर समग्र रूप से काफी अधिक रहा था। वर्ष 2009-10 की अवधि शुरुआती अवधि होने की बात को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी द्वारा प्रवृत्ति के बारे में कोई विश्लेषण/गणना नहीं की जा सकी। तथापि, जांच अवधि के बाद घरेलू उद्योग ने संपूर्ण वित्त वर्ष के लिए प्रचालन किया। इस अवधि के बाद भी घरेलू उद्योग के वित्तीय निष्पादन को नकारात्मक नोट किया गया था। अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति में गिरावट आई और घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा हुआ।

परियोजनागत अनुमानों की तुलना में प्रचालन मापदंडों का विश्लेषण

143. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस इकाई में केवल फरवरी, 2010 में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया। घरेलू उद्योग के विगत निष्पादन के बारे में किसी प्रवृत्ति के अभाव में और इस बात पर विचार करते हुए कि घरेलू उद्योग ने पाटित आयातों के कारण वास्तविक व्यवधान का दावा किया है, प्राधिकारी ने परियोजनागत निष्पादन की तुलना में वास्तविक निष्पादन का तुलनात्मक विश्लेषण किया है। इस संबंध में किया गया तुलनात्मक विश्लेषण संक्षेप में निम्नानुसार है:

	यू ओ एम	परियोजना रिपोर्ट प्रथम वर्ष	वास्तविक	
			अप्रैल'10- जून'11 (जांच अवधि)	वार्षिकीकृत (जांच अवधि)
क्षमता उपयोग	%	***%	***%	***%
उत्पादन	सीबीएम	***	22,980	18,384
बिक्री की लागत	रु/सी बी एम	***	***	***
बिक्री कीमत	रु/सी बी एम	***	***	***
लाभ/ (हानि) प्रति इकाई	रु/सी बी एम	***	***	***
लाभ (हानि)	लाख रुपए	***	***	***

144. उपर्युक्त से प्राधिकारी नोट करते हैं कि अपने वाणिज्यिक प्रचालन के प्रथम वर्ष के दौरान घरेलू उद्योग का निष्पादन उसकी परियोजना रिपोर्ट के अनुसार प्रचालनों/लाभप्रदता के अनुमानित स्तर से काफी कम रहा था। परियोजना रिपोर्ट में प्रथम वर्ष के लिए अनुमानित स्तर से घरेलू उद्योग का उत्पादन और क्षमता उपयोग दोनों ही कम रहे थे। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि अनुमानों की तुलना में वास्तविक प्राप्ति के अनुसार घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में भारी अंतर रहा था। प्राधिकारी द्वारा उत्पादन लागत में अंतर कच्ची सामग्री की कीमत में परिवर्तन और क्षमता उपयोग के कम स्तर की वजह से नोट किया गया है। यह प्रवृत्ति अनुमानों की तुलना में घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त अत्यधिक उच्च बिक्री कीमत में भी प्रदर्शित होती है। तथ्य यह रहता है कि घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान वित्तीय घाटा हुआ है जबकि अनुमानों के अनुसार इसके द्वारा प्रचालनों के प्रथम वर्ष से लाभ कमाए जाने की संभावना थी।

निवेश पर आय

145. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से घरेलू उद्योग को अर्जित निवेश पर लाभ निम्नानुसार रहा था:

	यू ओ एम	2009-10	अप्रैल'10- जून'11 (जांच अवधि)	वार्षिकीकृत (जांच अवधि)	परियोजना रिपोर्ट के अनुसार
ब्याज पूर्व लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
ब्याज पूर्व लाभ (सूचीबद्ध)	लाख रुपए	-100	-235	-235	***
नियोजित पूंजी	लाख रुपए	***	***	***	***
नियोजित पूंजी (सूचीबद्ध)	लाख रुपए	100	90	90	***
नियोजित पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
नियोजित पूंजी पर आय (सूचीबद्ध)	%	-100	-44	-44	***

146. उपर्युक्त से प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा वार्षिक आधार पर लगाई गई पूंजी परियोजना रिपोर्ट के अनुसार लगाई गई पूंजी के अनुमानों से कम रही थी। अतः प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के विनिर्माण हेतु संयंत्र की शुरुआत में कोई अधिक लागत नोट नहीं की है। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग लगाई गई पूंजी पर आय का अनुमानित स्तर प्राप्त करने में समर्थ नहीं रहा क्योंकि उसे जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण वित्तीय घाटा हुआ है।

नकद प्रवाह

147. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित नकद लाभ पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह पर निर्धारित किया गया पाटन का प्रभाव निम्नानुसार था :

वास्तविक	यू ओ एम	2009-10	अप्रैल'10- जून'11 (जांच अवधि)	वार्षिकीकृत (जांच अवधि)	परियोजना रिपोर्ट के अनुसार
लीा/ (हानि)	लाख रुपए	-100	-416	-416	***
मूल्यहास	लाख रुपए	100	203	203	***
नकद लाभ	लाख रुपए	100	-259	-259	***

148. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटित आयातों के कारण कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री की वजह से परियोजना रिपोर्ट के अनुसार कंपनी को लाभ कमाने के अनुमानों के मुकाबले जांच अवधि के दौरान नकद घाटा हुआ है।

रोजगार और मजदूरी

149. घरेलू उद्योग के रोजगार और मजदूरी में प्रवृत्तियों को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:

	यू ओ एम	2009-10	अप्रैल'10-जून'11 (जांच अवधि)
रोजगार	सं.	90	113
मजदूरी	लाख रूपए	100	1399

मालसूची

150. घरेलू उद्योग के पास मालसूची में प्रवृत्तियों का संक्षेप में उल्लेख निम्नानुसार है:

	यू ओ एम	2009-10	अप्रैल'10-जून'11 (जांच अवधि)
स्टॉक	सीबीएम	***	***
स्टॉक सूचीबद्ध		100	119
उत्पादन	सीबीएम	2,262	22,980
जांच अवधि के लिए औसत स्टॉक	सीबीएम	-	1318
माहवार उत्पादन की संख्या के समान औसत स्टॉक			0.86

151. उपर्युक्त से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान, जो घरेलू उद्योग के संपूर्ण प्रचालनों का प्रथम वर्ष था, घरेलू उद्योग 0.86 माह के उत्पादन के बराबर औसत स्टॉक रख रहा था। चूंकि घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि वह उसके द्वारा उत्पादन करने की क्षमता की सीमा तक संबद्ध वस्तु की बिक्री करने में समर्थ नहीं रहा है, इसलिए प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री और माल के स्टॉक की प्रवृत्तियों का माहवार विश्लेषण किया है। इसका विश्लेषण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:

माहवार	प्रारंभिक स्टॉक	आबद्ध को छोड़कर निवल उत्पादन	क्षमता उपयोग %	बिक्री	अंतिम स्टॉक	बिक्री दिवसों की सं. के अनुसार अंतिम स्टॉक
अप्रैल-10	***	***	***	***	***	***
मई-10	***	***	***	***	***	***
जून-10	***	***	***	***	***	***
जुलाई-10	***	***	***	***	***	***
अगस्त-10	***	***	***	***	***	***
सितंबर-10	***	***	***	***	***	***
अक्टू.-10	***	***	***	***	***	***
नवंबर-10	***	***	***	***	***	***
दिसंबर-10	***	***	***	***	***	***
जन.-11	***	***	***	***	***	***
फर.-11	***	***	***	***	***	***
मार्च-11	***	***	***	***	***	***
अप्रैल-11	***	***	***	***	***	***
मई-11	***	***	***	***	***	***
जून-11	***	***	***	***	***	***

152. उपर्युक्त से प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि की प्रथम तिमाही में घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता उपयोग में धीरे-धीरे वृद्धि की। तथापि, इसी अवधि के दौरान माल का अत्यधिक भंडारण हो गया था। इसके परिणामस्वरूप परवर्ती तिमाही में घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग को अत्यधिक कम नोट किया गया था। तीसरी और चौथी तिमाही के दौरान आम तौर पर उत्पादन, बिक्री और अंतिम स्टॉक में एक समान प्रवृत्ति नोट की गई। जांच अवधि की अंतिम तिमाही, जब घरेलू उद्योग ने अपना प्रचालन स्तर बढ़ाया, में एक बार फिर माल के स्तर में अत्यधिक वृद्धि देखी गई। अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि अत्यधिक माल जमा हो जाने के कारण घरेलू उद्योग परियोजना रिपोर्ट में लगाए गए अनुमान के अनुसार क्षमता उपयोग के ईष्टतम स्तर पर प्रचालन करने में सक्षम नहीं रहा था।

उत्पादकता

153. घरेलू उद्योग की उत्पादकता की जांच प्रतिदिन और प्रति कर्मचारी उत्पादन के संदर्भ में की गई है जो निम्नानुसार है:

	यू ओ एम	2009-10	अप्रैल'10-जून'11 (जांच अवधि)
प्रति दिवस उत्पादकता	सी बी एम/दिवस	37.70	67.81
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	सी बी एम/सं.	150.13	211.17

154. यह नोट किया जाता है कि इस अवधि में उत्पादकता में सुधार हुआ है ।

वृद्धि

155. यह उल्लेखनीय है कि घरेलू उद्योग ने नई उत्पादन सुविधा के साथ वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया । अतः घरेलू उद्योग की वृद्धि काफी अधिक रहनी चाहिए थी । तथापि, घरेलू उद्योग को खराब वृद्धि का सामना करना पड़ा ।

नया निवेश जुटाने की क्षमता

156. यह उल्लेखनीय है कि घरेलू उद्योग ने एक नया संयंत्र स्थापित किया और उसके द्वारा निवेश किए गए । तथापि, यदि घरेलू उद्योग का निष्पादन इतना खराब रहता तो नया निवेश में भी नुकसान होने की संभावना रहती ।

कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

157. संबद्ध देशों तथा अन्य देशों से आयात कीमत, उत्पाद के लिए लागत संरचना, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा जैसे कारकों पर विचार करते हुए घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत को प्रभावित कर सकने वाले पाटित आयातों से इतर कारकों से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से आयातित सामग्री का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है जिससे भारतीय बाजार में कीमत में भारी कटौती हो रही है । आगे यह नोट किया जाता है कि भारतीय उत्पादकों की कीमतों के लिए बेंचमार्क संबद्ध देशों से आयात की कीमतें हैं । इस उत्पाद का कोई व्यवहार्य स्थानापन्न नहीं है । उत्पाद की मांग में बेतहाशा वृद्धि हो रही थी और यह कम कीमत के लिए जिम्मेवार कारक नहीं हो सकती । अतः यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की कीमत के लिए जिम्मेवार एकमात्र कारक उत्पाद की संबद्ध आयात कीमतें और घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत

हैं। जैसा कि सूचना और आंकड़ों से पता चलता है, कि जहां उत्पादन लागत अधिक है वहीं आयात कीमतें घरेलू कीमतों से काफी कम हैं जिससे घरेलू उद्योग लागत के अनुरूप कीमतें वसूल करने से वंचित रहा है।

क्षति के बारे में निष्कर्ष

158. क्षति के विभिन्न मापदंडों पर विचार करते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नए संयंत्र की शुरुआत के मद्देनजर घरेलू उद्योग का निष्पादन अपेक्षित स्तर से काफी कम रहा है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि घरेलू उद्योग ने नई उत्पादन सुविधाएं स्थापित की हैं और समर्थनकर्ता कंपनी ने भी विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन शुरू किया है, संबद्ध देश से आयातों में भारी वृद्धि हुई है जबकि आयातों में गिरावट आनी चाहिए थी। कीमत कटौती का स्तर काफी अधिक है। कम कीमतों की पेशकश करने के बावजूद घरेलू उद्योग को उत्पाद की बिक्री करने में अपनी अक्षमता के मद्देनजर अपनी कीमतों में तुरंत कमी करनी पड़ी थी। अत्यधिक कम कीमत के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग कीमत ह्रासकारी प्रभाव का सामना कर रहा है। घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय घाटे पर उत्पाद की बिक्री करने के लिए बाध्य किया गया है जिससे निवेश पर आय और नकद प्रवाह नकारात्मक रहा है। देश में उत्पाद की पर्याप्त मांग होने के बावजूद घरेलू उद्योग का निष्पादन अनुमानित स्तर से काफी कम रहा था। शुरुआती प्रचालनों के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का समायोजन करने के बाद भी घरेलू उद्योग अपनी उत्पादन लागत वसूलने और उचित लाभ कमाने में असमर्थ था।

159 अतः यह नोट किया जा सकता है कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की स्थापना में व्यवधान पड़ रहा है। इसके अलावा घरेलू उद्योग का निष्पादन अपेक्षित स्तर से काफी कम रहा है जिससे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

झ. कारणात्मक संबंध

घरेलू उद्योग के अनुरोध

160. घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है क्योंकि आयातित और घरेलू उत्पाद के बीच कीमत में भारी अंतर विद्यमान है। इससे घरेलू उद्योग अपनी उत्पादन सुविधाओं की सीमा तक अपने उत्पाद की बिक्री करने से वंचित हुआ है। इसकी वजह से कीमत में कटौती हुई है और बिक्री मात्रा का स्तर कम रहा है, निवल बिक्री प्राप्ति में गिरावट आई है। जहां एक ओर क्षति रहित कीमत और आयातकों की पहुंच कीमत के बीच भारी अंतर है, वहीं दूसरी ओर घरेलू उद्योग लक्षित स्तर की सीमा तक अपने उत्पादन को बढ़ाने में अक्षम है। घरेलू उद्योग को नुकसान उत्पादन के मानव घंटों की अत्यधिक हानि, बढ़ते हुए उत्पादन के साथ मालसूचियों में वृद्धि, बढ़ती हुई मालसूची के कारण उत्पादन में गिरावट के

कारण हुआ है जिससे सामूहिक और संचयी रूप से इस बात की पुष्टि होती है कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के परिणामस्वरूप क्षति हो रही है ।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

मै. सेगामेट पैनल बोर्डर्स एस डी एन. बी एच डी तथा मै. मरबोक एम डी एफ, लंका (प्रा.) लि., श्रीलंका की ओर से किए गए अनुरोध

161. याचिकाकर्ता ने हाल ही में अपना उत्पादन शुरू किया है । अतः इस बात की पूरी जानकारी है कि याचिकाकर्ता को (i) शुरुआती लागत; (ii) अन्य स्थापित बिक्री और वितरण माध्यम; (iii) उच्च छूटों के साथ-साथ संवर्धित विपणन व्यय जैसे विभिन्न कारकों की वजह से क्षति होगी । इसके अलावा, हमने आवेदक उद्योग की उत्पादन लागत अधिक रहने के लिए उपर्युक्तानुसार मुख्य कारणों का पता लगा लिया है और ये कारण उसकी अंतर्निहित अक्षमताएं हैं । अतः प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे कृपया उपर्युक्त तथ्यों पर गौर करें जिनसे स्पष्ट तौर पर यह पता चल जाएगा कि आरोपित पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग का कोई क्षति नहीं हुई है और यदि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को कोई क्षति हुई है तो वह उसकी अक्षमताओं की वजह से हुई है । इसके अलावा, जहां पहुंच कीमतों में जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है, वहीं घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है जिससे प्रतिकूल संबंध का पता चलता है, कारणात्मक संबंध की तो बात ही नहीं आती है ।

एवरग्रीन फाइबर बोर्ड बरहाड (ई एफ बी), मलेशिया; एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (जे बी) एस डी एन बी एच डी (ई जे बी), मलेशिया और एवरग्रीन फाइबर बोर्ड (निलाई) एस डी एन. बी एच डी (ई एफ न), मलेशिया की ओर से किए गए अनुरोध

162. याचिकाकर्ता को उसकी क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री, बाजार हिस्से, मजदूरी, कर्मचारियों की संख्या, उत्पादकता, मालसूची आदि के संबंध में कोई क्षति नहं हुई है । लाभप्रदता, निवेश पर आय, नकद प्रवाह और कीमत हास, यदि कोई हो, के संबंध में क्षति संबद्ध देशों से आरोपित पाटित आयातों के कारण नहीं हुई है अपितु शुरुआती लागत की वजह से प्रति इकाई उच्च लागत, कच्ची सामग्री की उच्च लागत, उच्च उपयोगिता लागत, उच्च निर्धारित लागत, उच्च श्रम लागत, उच्च ब्याज लागत और उच्च मूल्यहास लागत की वजह से हुई है । याचिका में कारणात्मक संबंध का विश्लेषण करते समय याचिकाकर्ता ने अन्य भारतीय उत्पादक की बिक्री के बारे में कोई विश्लेषण नहीं किया है और न ही याचिका में कोई ब्योरा दिया है । अनुरोध है कि याचिकाकर्ता को क्षति, यदि कोई हो, दोनों घरेलू उत्पादकों के बीच आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण हुई है । घरेलू उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, और आरोपित पाटित आयातों के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

163. पाटनरोधी नियमों के अनुसार प्राधिकारी के लिए अन्य बातों के साथ-साथ पाटित आयातों से इतर ऐसे किसी अन्य ज्ञात कारक की जांच करना अपेक्षित होता है जिससे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है ताकि ऐसे अन्य कारक से हुई क्षति की वजह पाटित आयातों को न

माना जा सके । इस संबंध में जो कारक प्रासंगिक हो सकते हैं उनमें अन्य के साथ-साथ शामिल हैं:- पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा और कीमत, मांग में कमी अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन, विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी विकास तथा घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन एवं उत्पादकता । इस बात की जांच की गई थी कि क्या पाटनरोधी नियमों में सूचीबद्ध इन अन्य मापदंडों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है । यह पाया गया था कि :-

क तीसरे देशों से आयातों की मात्रा और कीमत: प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान तीसरे देशों से आयात या तो नगण्य हैं या उनकी मात्रा न्यूनतम है । अतः तीसरे देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती ।

ख. मांग में कमी और खपत की पद्धति में परिवर्तन: यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि हुई है । खपत की पद्धति में किसी परिवर्तन का कोई संकेत भी नहीं है ।

ग विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा: संबद्ध वस्तु का आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं है और यह देश में मुक्त रूप से आयात योग्य है । घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमतों से प्रतिस्पर्धा करता है । घरेलू उद्योग की कीमत संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत द्वारा अत्यधिक प्रभावित होती है । तथापि, किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है जिससे यह संकेत मिल सके कि विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियां विद्यमान नहीं हैं और कोई परिवर्तन नहीं हुआ है ।

घ प्रौद्योगिकी विकास: किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्रौद्योगिकी विकास को घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले कारक होने के बारे में कोई मुद्दा नहीं उठाया है । रिकॉर्ड में प्रौद्योगिकी में अत्यधिक विकास के बारे में ऐसी कोई सूचना नहीं है जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति का प्रमुख कारण बन सके ।

ङ निर्यात निष्पादन: प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है ।

164. प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालांकि सूचीबद्ध अन्य ज्ञात कारकों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता नहीं चलता है तथापि, निम्नलिखित मापदंडों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है ।

- (क) विद्याराधीन उत्पाद के आयातों में भारी वृद्धि हुई है और संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा बढ़ा है ।
- (ख) स्पष्ट तौर पर घरेलू उद्योग ने भारत में पाटित संबद्ध वस्तु की मौजूदगी के कारण अपनी बिक्री मात्रा गंवाई है ।
- (ग) समग्र संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटौती हो रही है ।
- (घ) आयातों के कारण घरेलू कीमत में अत्यधिक ह्रास हो रहा है ।
- (ङ) घरेलू उद्योग के लाभ और लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट स्पष्ट तौर पर पाटित आयातों के कारण आई है ।
- (च) कई मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन नकारात्मक रहा है क्योंकि घरेलू उद्योग कई मापदंडों में वास्तविक एवं वित्तीय निष्पादन के अनुमानित स्तरों को हासिल करने में सक्षम नहीं रहा है ।

क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

165. प्राधिकारी ने यथासंशोधित पाटनरोधी नियमों में निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहत कीमत निर्धारित की है ।

सहयोगी निर्यातक

कंपनी का नाम	एन आई पी	पहुंच कीमत	अम. डॉ/सीबीएम में	
			क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन रेंज % में
पीटी सुमाटेरा प्राइमा फरीदाबाद	***	***	***	60-70
पी टी. मसारी ड्वाइसेपाकट फाइबर	***	***	***	55-65
मै. सेगामेट पेनल बोर्ड्स एस डी एन. बी एच डी	***	***	***	50-60
मै. एवरग्रीन फाइबरबोर्ड बरहाड (ई एफ बी)/मै. एवरग्रीन फाइबरबोर्ड (जे बी) एस डी एन.बरहाड (ई जे बी)	***	***	***	40-50
मै. करबोर एम डी एफ लंका (प्रा.) लि.	***	***	***	60-70

असहयोगी निर्यातक

विवरण	इकाई	चीन जन.गण.	इंडोनेशिया	मलेशिया	श्रीलंका
एनआईपी	अम.डॉ./सीबीएम	***	***	***	***
पहुंच कीमत	अम.डॉ./सीबीएम	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	अम.डॉ./सीबीएम	***	***	***	***
क्षति मार्जिन (%) रेंज	%	***	***	***	***

ज. निष्कर्ष :

166. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों और उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच करने और रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद प्राधिकारी अंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- क. संबद्ध देशों से भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात संबंधित सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिससे संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का पाटन हुआ है।
- ख. घरेलू उद्योग को "क्षति" हुई है अर्थात् उसके उद्योग की स्थापना में वास्तविक ध्वधान उत्पन्न हुआ है तथा संबद्ध वस्तु के बारे में वास्तविक क्षति भी हुई है।
- ग. घरेलू उद्योग को यह "क्षति" संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण हुई है।

ट. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

167. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य सामान्यतः "पाटन" की अनुचित व्यापार पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को हुई "क्षति" को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल किया जा सके, जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयातों पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगेगा; अतः उपभोक्ताओं के लिए उन उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

168. यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों द्वारा भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी खासकर तब जबकि पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक राशि तक सीमित रखा जाएगा। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी।

ठ. सिफारिशें

169. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत कर उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी और निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं के बारे में सकारात्मक सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में प्रारंभिक जांच शुरू और संपन्न करने के बाद तथा सकारात्मक पाटन मार्जिन एवं ऐसे पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की अनंतिम रूप से सकारात्मक पुष्टि करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि जांच पूरी होने तक पाटन एवं "क्षति" को समाप्त करने के लिए अनंतिम शुल्क लगाना अपेक्षित है। अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीचे उल्लिखित प्रपत्र में और तरीके से अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

170. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन जो भी कम हो, के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित तालिका के कालम 8 में उल्लिखित राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	शीर्ष/ उप-शीर्ष*	वस्तु विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि अम. डॉ./सी बी एम में
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1.	4411*	"इन्सुलेशन बोर्डों, लेमिनेटेड फाइबर बोर्डों और ऐसे बोर्डों को छोड़कर जो रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों द्वारा बांडेड नहीं हैं, 6 मिमि. से कम की मोटाई के रेजिन या अन्य कार्बनिक पदार्थों से बांडेड लकड़ी या लिगनस फाइबर बोर्ड	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई	165.71
2.	4411*	वहीं	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	चीन जन.गण.	कोई	कोई	165.71
3.	4411*	वहीं	चीन जन.गण.	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	165.71

4.	4411*	वही	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	पी टी सुमटेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड	पी टी सुमटेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड	88.60
5	4411*	वही	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	पी टी. मसारी डवाइसेपाकट फाइबर	पी टी. मसारी डवाइसेपाकट फाइबर	85.99
6.	4411*	वही	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	क्र.सं. 4 तथा 5 से इतर अन्य कोई संयोजन		168.97
7.	4411*	वही	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	इंडोनेशिया	कोई	कोई	168.97
8	4411*	वही	इंडोनेशिया	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	168.97
9.	4411*	वही	मलेशिया	मलेशिया	मै. सेगामट पेनल बोर्ड एस डी एन.बीएचडी	मै. सेगामट पेनल बोर्ड एस डी एन.बीएचडी	26.11
10.	4411*	वही	मलेशिया	मलेशिया	मै. एवरग्रीन फाइबरबोर्ड बरहाड (ई एफ बी)/ मै. एवरग्रीन फाइबरबोर्ड (जे बी) एस डी एन. बरहाड (ई जे बी)	मै. एवरग्रीन फाइबरबोर्ड बरहाड (ई एफ बी)/ मै. एवरग्रीन फाइबरबोर्ड (जे बी) एस डी एन. बरहाड (ई जे बी)	83.69
11.	4411*	वही	मलेशिया	मलेशिया	क्र.सं. 9 तथा 10 से इतर अन्य कोई संयोजन		178.30
12.	4411*	वही	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	मलेशिया	कोई	कोई	178.30
13	4411*	वही	मलेशिया	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	178.30
14.	4411*	वही	श्री लंका	श्री लंका	मै. मरबोर एम डी एफ लंका (प्रा.) लिमिटेड	मै. मरबोर एम डी एफ लंका (प्रा.) लिमिटेड	66.27
15.	4411*	वही	श्री लंका	श्री लंका	क्र.सं. 14 से इतर अन्य कोई संयोजन		167.46
16.	4411*	वही	श्री लंका	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	167.46
17.	4411*	वही	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	श्री लंका	कोई	कोई	167.46

कृपया नोट करें: विचाराधीन उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 44 के अंतर्गत वर्गीकृत है। तथापि, विचाराधीन उत्पाद का कोई अनन्य सीमाशुल्क वर्गीकरण कोड नहीं है। अतः सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और इस जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।

ड आगे की प्रक्रिया

171. प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी :
- (क) प्राधिकारी इन जांच परिणामों पर सभी हितबद्ध पक्षकारों से टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे जिन पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया जाएगा।
 - (ख) निर्यातकों, आयातकों, आवेदक तथा ज्ञात समझे जाने वाले अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है जो इन प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रेषण की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पक्षकार भी इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकता है।
 - (ग) विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों की मौखिक सुनवाई करने के लिए प्राधिकारी एक सुनवाई करेंगे।
 - (घ) प्राधिकारी आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे सत्यापन करेंगे।
 - (ड.) अंतिम जांच परिणामों को घोषित करने से पूर्व प्राधिकारी पाटनरोधी नियमों के अनुसार आवश्यक तथ्यों का प्रकटन करेंगे।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 23rd July, 2012

Preliminary Findings

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of 'Resin or other organic substances bonded wood or ligneous fibre boards of thickness below 6mm, except insulation boards, laminated fibre boards and boards which are not bonded either by resin or other organic substances' originating in or exported from China PR, Indonesia, Malaysia and Sri Lanka.

No. 14/29/2010-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended from time to time (hereinafter referred as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred as the AD Rules);

- 2 The Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), under the AD Rules, received a written application from M/s. Balaji Action Buildwell, (hereinafter referred to as the Applicant) in accordance with the Act and the AD Rules, alleging dumping of 'Resin or other organic substances bonded wood or ligneous fibre boards of thickness below 6mm, except insulation boards, laminated fibre boards and boards which are not

bonded either by resin or other organic substances' (hereinafter also referred to as the subject goods) originating in or exported from China PR, Indonesia, Malaysia and Sri Lanka (hereinafter also referred to as the subject countries) and requested for initiation of anti-dumping investigation and levy of anti dumping measures.

- 3 Preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the Applicant. The application was, therefore, considered as properly documented. The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the Applicant to justify initiation of the investigation, decided to initiate the investigation concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.
- 4 The Authority notified the High Commissions / Embassies of the subject countries in India about the receipt of the application containing, *inter alia*, allegations of dumping and consequent injury to the domestic industry before proceeding to initiate the investigation in accordance with Rule 5(5) of the AD Rules.
- 5 Accordingly, the Authority initiated an investigation into the alleged dumping, and consequent 'injury' to the domestic industry in terms of the Rules 5 of the AD Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping measure, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. **PROCEDURE**

- 6 The procedure described herein below has been followed:
 - i. The Authority issued a public notice dated 11th November 2011 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries, in accordance with the Rule 6(1) of the AD Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.
 - ii. The Authority sent a copy of initiation notification dated 11th November 2011, to the High Commissions / Embassies of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, known importers/ users and the domestic industry as per the addresses made available by the Applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
 - iii. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters and the High Commissions / Embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) supra.
 - iv. High Commissions / Embassies of the subject countries in India were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire(s) within prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire(s) sent to the exporters/producers was also sent to them along with the names and addresses of the known exporters/producers.

- v. The Authority sent questionnaire(s) to elicit relevant information to the following known exporters/producers in subject countries in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

S.N.	Name of Producer/Exporter
	M/s. Tomrich International Trading Limited, Pudong, Shanghai, China PR
	M/s Nanjing ETAI Trading Co Limited, Jinshajing Nanjing, China PR
	M/s Linyi Hongfu Timber Co Limited, Yitang Town, Linyi Shandong, China PR
	M/s Shouguang Guihe Economic and Trade Co Limited, Shandong, China PR
	M/s Linyi Baideli International Trade Co Ltd. Nan Lou Zone, Yitang Town, Lanshan District, Linyi City Shandong China PR
	M/s Zhanjiang Kingstar Building Material Co Limited, Zhanjiang Guangdong, China PR.
	M/s Wenzhou Timber Group Co. Ltd., Zhejiang, China PR
	M/s Daiken Miri Sdn. Bhd., Miri Sarawak, Malaysia
	M/s Merbok MDF Lanka Pvt Limited, Horana, Sri Lanka
	M/s Robin Resources (Malaysia) Sdn Bhd, Pahang, Malaysia.
	M/s. Evergreen Fibre Berhad (JB) SDN. BHD, Johor, Malaysia
	M/s PT Andalan Karya Bersama, Kakarta Raya, Indonesia
	M/s La Mobila Pannelli PT, Rukan Enclave Bukit Golf, Pantai Indah Kapuk Indonesia

- vi. In response to the above notification, following interested parties including exporters/producers/ Association etc. have responded:

S.N.	Name of Producer/Exporter
1	M/s. Magna-Foremost SDN, BHD, Malaysia
2	M/s Masonite Components, Ireland
3	M/s Merbok MDF Lanka (Private) Ltd., Sri Lanka.
4	M/s Segamat Panel Boards Sdn, Bhd, Malaysia
5	M/s P.T. Masari Dwisepakat, Indonesia
6	M/s P.T. Sumatera Prima Fibre Board, Indonesia
7	M/s. Evergreen Fibre Board Berhad (EFB), Malaysia
8	M/s Evergreen Fibre Board (JB) SDN BHD, Malaysia
9	M/s Evergreen Fibre Board (Nilai), Sdn. Bhd (EFN), Malaysia
10	M/s Daiken Miri Sdn. Bhd., Miri Sarawak, Malaysia
11	M/s. P.T. Hijau Lestari Raya Fibre Board, Indonesia

12.	Ministry of International Trade & Industry, Malaysia
13.	Embassy of Republic of Indonesia, New Delhi.
14.	Director General, Kejra Sama Industri International, Jakarta, Indonesia.
15.	M/s. Dongwha Fibre Board SDN. BHD, Malaysia

- vii. Questionnaires were sent to the following known importers / users/Association of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

S.N.	Company's Name
1	M/s C.L. Gupta Exports Ltd., Village Jival, J.P. Nagar, UP
2	M/s. Venugopala Slate Industries, Markapur, Andhra Pradesh
3	M/s Moradabad Handicrafts Exporters Association, Moradabad, UP
4	M/s Thamarappally Brothers, M.G. Road, Ernakulam, Cochin
5	M/s Spacewood Furnishers Pvt. Ltd. T-48, MIDC Road, Nagpur-440 016
6	M/s Feroke Boards Ltd, Kaarad, Feroke College, Via- Malappuram, Kerala
7	M/s R.J.Metals, XL/4039 Faba Complex, Jews Street, Ernakulam Cochin, Kerala
8	M/s Kalinga Imports & Exports Pvt..Ltd 18/777 Kallai Road, Calicut, Kerala.
9	M/s Victory Plywood Distributors, Stadium Complex, Kannur, Kerala
10	M/s Mathewsons Exports & Imports P.Ltd, Kaloore, Cochin, Kerala
11	M/s Ply Point, Kodampuzha Road, Petta Feroke, Kozhikode Kerala
12	M/s Label Sales Corpn, Indradhanush Apartment, Shope No. 7,8 & 9 T.D.Road, Cochin, Kerala
13	M/s Srivari Traders, Odanthurai Metupalayam, Tamil Nadu
14	M/s Krishna Plywoods, Kamraj road, Karur Tamil Nadu
15	M/s Thamarapally Brothers, Ernakulam, Kochi, Kerala
16	M/s Jacsons Veneers And Panels P. Ltd, Ernakulam, Kochi, Kerala
17	M/s Kutty Flushdoors and Furniture Co. Pvt. Ltd. Koyambedu, Chennai
18	Association of Furniture Manufacturers of India (AFMI), Mumbai

- viii. In response to the above notification, following importers/ users, Association have responded:

S.N.	Importer's Name
1.	M/s. Venugopala Slate Industries, Markapur, Andhra Pradesh
2.	India Moulded Panel Shutters Manufacturers Association
3.	Moradabad Handicrafts Exporters' Association, Moradabad, U.P.
4.	M/s. C.L. Gupta Exports Ltd., Uttar Pradesh (UP), India.
5.	Indian Moulded Panel Shutters Manufacturers Association

6.	All India Fibreboard Manufacturer's Association, Haryana
----	--

- ix. A Market Economy Treatment (MET) questionnaire was forwarded to all the known exporters/producers and Embassy of China PR in New Delhi. For the purpose of initiation, the Normal value in China PR was considered based on the constructed cost of production of the subject goods in China PR, as the applicant pleaded that the information for market economy third country is not available to them. The Authority informed known exporters that it proposes to examine the claim of the applicant in the light of paras 7 and 8 of Annexure I of the AD Rules. The exporters/producers of the subject goods from China PR were therefore requested to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 of the Annexure of the AD Rules to enable the Authority to consider whether market economy treatment be granted to co-operative exporters/producers from China PR.
- x. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xi. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of the subject goods for the past three years, including the period of investigation.
- xii. Optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the Applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- xiii. Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2010 to 30th June 2011 (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis, however, covered the periods April 2007-March 2008, April 2008-March 2009, April 2009-March 2010 and the Period of Investigation (POI) viz. 1st April 2010 to 30th June 2011.
- xiv. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xv. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the 'facts available'.

- xvi. *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the AD Rules.

B. Miscellaneous Issues

7 Submissions made by other interested parties

The submissions made by interested parties, in brief, are as follows:

Submissions made by M/s Venugopala Slate Industries

- Application filed by the Applicant is grossly erroneous, insufficient to justify initiation and also resorted to excessive confidentiality.

Submissions made on behalf of M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd. and M/s Merbok MDF Lanka (Private) Ltd, Sri Lanka

- That the non-confidential version of the petition is wholly deficient and inadequate to enable the other parties to render their comments.
- That as per initiation notification, POI is April-2010 to June-2011 but the copy of non confidential version of the application provided by the domestic industry appears to be taking into account April 2010 - March 2011 as the POI.

Submissions on behalf of M/s. Magna-Foremost SDN and M/s. Masonite Components, Ireland

- The Authority, has initiated this investigation in violation of Article 5.3, despite insufficient evidence to justify doing so. The Authority has in its wisdom, suo moto, changed the period of investigation and injury investigation period from those filed by the Applicant.
- The Authority extended by 3 months the period of investigation originally proposed by the Applicant, i.e., April 2010 – March 2011 (12 months). In addition, the Authority affixed the injury investigation period between 2007 and 2010 despite the fact that no domestic industry had even existed for MDF until at least February 2010. As stated in the Petition, the Applicant did not commence commercial production of MDF until February 2010, while the Supporter commenced production much later, in December 2010. The Authority has provided no rationale for amending the said periods. More importantly, however, the changed periods effectively render the evidence provided by the Applicant insufficient to justify initiating this investigation.

Submissions made on behalf of Evergreen Fibreboard Berhad (EFB), Malaysia; Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Bhd. (EJB), Malaysia and Evergreen Fibreboard (Nilai) Sdn. Bhd.(EFN), Malaysia

- That the non-confidential version of the petition provided is deficient as it does not contain the information for the whole period of investigation i.e. April 10 to June 11 (15 months). It contains the information only for part of the POI i.e. April 10- March 11 (12 months). Further, the Applicant has not provided the raw import data received by it from IBIS along with the petition nor it indicated that the same has been provided to the Authority.
- That the domestic industry has claimed excessive confidentiality and there is no statement of confidentiality being claimed by the Applicant enclosed with the non-confidential version of the petition.

Submissions made on behalf of M/s PT. Masari Dwisepakat Fiber, Indonesia and M/s PT. Sumatera Prima Fibre board (SPF), Indonesia

- That the non-confidential version of the application filed by the Domestic Industry and supplied to us is not in accordance with the new guidelines being followed by the Designated Authority in all the current cases. there is no index to the application for us to appreciate what all documents have been filed in the confidential version, there is no running pagination, there is no reasons in tabular form giving reasons for confidentiality, etc.
- That the Applicant industry has not given Application Proforma as are required to constitute a valid and fully documented application. Necessary evidence as prescribed in the Proforma was also not supplied in accordance with the requirement under the garb of excessive confidentiality. The questions in the format application have been changed to suit their own requirements. The certifications given about self imports and relationship are not for the POI by the applicant or by the supporter.
- Confidentiality: The non-confidential version of the application filed by the Domestic Industry and supplied to the exporters not in accordance with the new guidelines being followed by the Designated Authority in all the current cases. The following information has been kept confidential without cogent reasons:
 - a. That the full functional production flow chart is there on the website of the applicant. Therefore, there is no reason to claim confidentiality on this.
 - b. Methodology adopted for excluding excluded products from the import data for calculation, because on the basis of the widths and thickness all the characteristics of the subject goods are not covered.
 - c. Whether imports made by Balaji are excluded or not from the import data and what is the quantity they have actually imported.
 - d. Non-confidential summary and indexed numbers of the project report on which the applicant relied upon.
 - e. Basis of construction of normal value. It is also not clear whether they have used power rate and other information which is available in the public domain of the subject countries or they have used their own rates. Further, the power information attached in the non-confidential is of no use because it is not for the period of Investigation and there are different rates for different usage.

- f. The applicant has not provided any source for the information provided in the application in relation to constructed normal value and for calculating export price. Source information given in some places is obsolete and not working. Audited balance sheets are not provided for the injury investigation period.
- g. Proper certification from the applicant in relation to its relation with export or import Statement of confidentiality is not provided.

- Erroneous Period of Investigation and Injury Period: The period of investigation and injury examination period fixed by the Authority is erroneous and unfair. In the instant case the period of Investigation is April 2010 – June 2011 i.e., of 15 months. The applicant is only new entrant in the market and has only completed 2 months in April 2010. Therefore, the determination of dumping and injury tends to be skewed as the variable costs and fixed costs would be very high for the applicant and no proper or comprehensive analysis can be undertaken. The Authority has not considered the financial year 2010-11, which was the only full financial year that could be analyzed. It is submitted that, although the recently concluded financial year is subsumed in the period of Investigation, the data for the same should have been specifically taken as one of the injury period.
- Adequacy & Accuracy: the investigations have been initiated without adhering to the requirements of Rule 5 of the Anti-dumping Rules, which specifically deals with the Initiation of investigation. The mandated parameters were not examined prior to reaching a determination for initiation of the present investigation. In absence of following, we are unable to offer our comments on adequacy and accuracy of the information in the application:
 - a. The date of application and correspondence exchanged with the applicants prior to initiation.
 - b. Letters addressed to concerned ministry or other producers in India.
 - c. Annual Reports for the past three years for applicant and the supporting producer
 - d. Non-confidential version for calculations done and methodology for Normal Value/Export Price. It may be seen from the non-confidential version of the application that the Applicant Industry has not given any details of the calculation of the constructed normal value and the export price. Further, in terms of the ruling of the Hon'ble Supreme Court cited earlier, such information has to be provided to the opposing interested parties to enable them to offer their comments.
 - e. It has been claimed by the Applicant Industry that there are no significant difference in manufacturing process adopted by the Applicant Industry compared to the one adopted by the exporters from subject countries. In such a situation we are unable to understand as to why confidentiality has been claimed by the Applicant on the process of manufacture.
- There has been substantial delay in making available application that formed the basis of initiation of the present case. The raw import data may be provided as received from IBIS and also list containing excluded entries with explanation for such exclusions.

Submissions made by the domestic industry

8 The submissions made by the domestic industry, in brief, are as follows:

- As regards the contention that NCV petition is wholly deficient and inadequate to enable the other parties to render their comment; referring to the relevant rules & regulations, the Applicant has stated that the petition filed by the domestic industry in fact contains much more than what is the obligation on the domestic industry.
- As regards the contention that POI as per initiation notification is April 2010 to June 2011 but the NCV has data only up till March 2011 and therefore information relied upon by the Authority was incomplete; the Applicant has stated that there is no legal requirement that the DA should have, at the time of initiation, information on record for the period of investigation. The “period in the petition” for which petition has been filed and “period of investigation” chosen by the Designated Authority for elaborate investigations is altogether two different factors/. While the petition must identify a period and must contain all relevant period for the said period; the Designated Authority is at a liberty to consider any other period, including the period suggested by the Applicant for detailed investigation. In fact, the argument advanced by the interested parties is highly undesirable and is not in public interest and is dangerous in suggesting that the Applicant can frame the most appropriate period and thereafter force the authority to adopt the same.
- It is really amazing that an interested party is suggesting consideration of 2010-11 as an investigation period in the present case. Firstly, the case was initiated in November 2011 and therefore investigation period of 2010-11 would have implied a stale period for the present purpose. Secondly, period longer than as could have been considered can certainly not prejudice the interests of any party. If the period 2010-11 would have been appropriate for the present purpose, certainly, addition of subsequent quarter is no less inappropriate.
- As regards the contention relating to erroneous period of investigation and injury period fixed is erroneous and unfair: it is submitted that in the previous Para, the interested parties have argued that Applicant is an existing company. In this Para, the interested parties have argued that the Applicant is a new entrant in the market. If Applicant is a new entrant, admittedly, this case falls under material retardation to establishment of an industry, unless opposing parties establish that there was already a production and sale of the product under consideration in the country. It would be relevant to point out in this regard that the previous petition filed in respect of Medium Density Fiber Board included all thicknesses of fiber board. The interested parties, however, strongly argued for exclusion of thin board on the grounds that there was no company in India producing thin board. After due consideration, the Authority came to a conclusion that fiber board below 6 mm was not being produced in the country and accordingly restricted the scope of product under consideration to fiber board of 6 mm and above.

- As regards the contention that mandated parameters were not or examined prior to reaching a determination for initiation of the present investigation; there is no such mandated requirement. Further, since Applicant filed updated petition and since this updated petition formed the basis of initiation of investigations, the correspondence exchange with the Applicant prior to initiation becomes meaningless. As regards, letters addressed to concerned ministry or other producers in India; there is no such mandated requirement under the law. As regards, Annual reports for the past three years for the applicant and supporting producer; there is no mandated requirement for the annual report of the supporting producer. With regard to annual report of Applicant, the issue was earlier raised by the DGAD and addressed by the Applicant. Copies of the letters written by the Applicant are enclosed with these submissions. As regards, NCV version of the calculations done and methodology for normal value/ export price; the petition is relied upon which contains relevant information.
- As regards production flow chart; Applicant has provided sufficient information on the product process. The same provides sufficient information with regard to flow chart as well. The flow chart enclosed with the petition is the actual production plant flow chart of the Applicant and therefore the same has not been disclosed.
- As regards the contention that there has been substantial delay in making information available to the interested parties; the interested party have been provided sufficient time. It is not the case where interested parties have been given 40 days time from the date of initiation of investigation. The Authority has in fact given 40 days time to the interested parties from the date on which letters were communicated/sent to the interested parties. Thus, interests of opposing parties, in any case, have not got prejudiced. In fact, it is only the domestic industry which has suffered in the process.

Examination by the Authority

- 9 As regards the contention that the non-confidential version of the petition provided was deficient as it did not contain the information for the whole period of investigation i.e. April 10 to June 11 (15 months); the Authority notes that the revised information/data for the POI was duly sought from the Applicant in the instant matter and the same was placed in the public file that was open for inspection by all the interested parties.
- 10 The Authority has taken note of the above submissions regarding confidentiality and notes that the information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the

course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the 'facts available'.

- 11 As regards the contention pertaining to period of investigation is concerned; the same has been chosen considering the facts and circumstances of the present case and has been appropriately chosen to cover the latest available data on the subject. Further, it is not correct to state that while the POI as per initiation notification is April 2010 to June 2011 but the NCV has data only up till March 2011 as the information for the POI was duly obtained from the domestic industry and placed in the public file as per the AD Rules. Besides, it is reiterated that the application contained sufficient evidence to justify initiation of an anti-dumping investigation in the present matter.
- 12 The Authority further notes that that mandated parameters were duly examined and sufficient evidence was available on record to justify initiation of the investigation in the instant matter.
- 13 As regards the contention regarding delay in making information available to the interested parties; the Authority notes that interested parties have actually been benefitted as 40 days time was duly provided to all known interested parties from the date on which letters were forwarded to the interested parties. Thus, no adverse impact has apparently been caused to their interests.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND DOMESTIC LIKE ARTICLE

Submissions made by other interested parties

- 14 The submissions made by interested parties, in brief, are as follows:

Submissions made by Indian Moulded Panel Shutters Manufacturers Association

- 15 The submissions made by Indian Moulded Panel Shutters Manufacturers Association, in brief, are as follows:
 - It is not clear whether the door skins are under product under consideration as PUC as defined in the initiation notification is too broad and vague. For the purpose of volume and price, the domestic industry in their petition has excluded the imports of HDF and Door Skin from the subject countries but some subsequent submissions shows the issue is open ended for the decision of Authority. Huge variance in import price of Door Skin and that of the PUC itself shows that Door Skin ought to be outside the PUC. Door Skin prices are higher in comparison to MDF or HDF and door skins are a distinct product. The raw material for HDF Door Skins are MDF and HDF board while for MDF and HDF raw materials are wood, resin and others which shows that Door Skins are value added and a separate product. Door Skins cannot be interchangeable with other applications except door. Thus, HDF and MDF are not commercially interchangeable because price of door skin are higher by 200% as compared to MDF. Fibre Board Moulded Door Skin can only be produced from Fibre

Board of 3mm thickness with its density above 800 kg/m³. The applicant industry may at best be producing Moulded Door Skin from MDF Board only. Thus, the Moulded Door Skin is a value added product for Applicant in comparison to simple fibre board MDF/HDF. In other words, MDF/HDF is an input material in the process for making door skin for the domestic industry in concern. The average prices for Moulded Door Skins were higher than those for thin MDF (150-200% on average). Further, prices for thin HDF are also significantly higher than thin MDF. Thus, prices between MDF, HDF and Moulded Door Skin are not comparable.

- Applicant deliberately avoided parameter of density and thickness while defining the scope of PUC. It has consequences as the raw material consumption per CBM governs the density of the Board. HDF consumes higher amount of raw materials and is of higher density as compared to MDF. Even catalog itself of applicant domestic industry shows Door Skin is separate from MDF or HDF. The claim that import price of high density board is even lower than the average import price is baseless. Correct evaluations would have made HDF outside the scope of PUC.

Submissions made by M/s Venugopala Slate Industries

16 The submissions made by M/s Venugopala Slate Industries, in brief, are as follows:

- Complete raw import data relied upon by the Applicant needs to be provided to assess whether the methodology adopted by the Applicant to compile the import data for PUC is correct or not as altered import data provided is not sufficient to do the same.

Submissions on behalf of M/s. Magna-Foremost SDN and M/s. Masonite Components, Ireland

17 The definition provided in the Initiation Notification makes it evident that moulded door facings, also known as door skins, are excluded from the scope of the product under consideration, and this is confirmed by the Applicant's express exclusion of data pertaining to door skins from its product headings and import data. There are differences in production process, differences in applications. Door skins are used exclusively as door skins – i.e., used in the manufacture of doors to form the outward panels of a door. Because of their chemical properties and dominant surface contours, they cannot be reshaped or resized into other fibre board products and therefore do not compete with or substitute for the vast majority of the Applicant's MDF products.

Submissions made on behalf of M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd, and M/s Merbok MDF Lanka (Private) Ltd, Sri Lanka

18 The submissions made on behalf of M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd, and M/s Merbok MDF Lanka (Private) Ltd, Sri Lanka, in brief, are as follows:

- That the domestic industry has stated that it has adopted the transaction-wise import data provided by IBIS because product under consideration does not have a dedicated

customs classification code. Such raw import data falling under chapter sub-heading 4411 provided by IBIS should have imports reported in different descriptions and units. However, domestic industry has provided in the application only altered import data with methodology used to compile import data of subject product. Thus, we are not able to understand, whether compilation of import data for subject product by domestic industry is correct or not as complete raw import data has not been provided in the application.

Submissions made on behalf of Evergreen Fibreboard Berhad (EFB), Malaysia; Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Bhd. (EJB), Malaysia and Evergreen Fibreboard (Nilai) Sdn. Bhd.(EFN), Malaysia

19 The following submissions, in brief, have been made on behalf of Evergreen Fibreboard Berhad (EFB); Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Bhd. and Evergreen Fibreboard (Nilai) Sdn. Bhd.:

- The product under consideration in the present investigation has been kept too wide. The domestic industry has included the type of products which are not even manufactured by the Applicant. The same are also not technically and commercially substitutable by the imported products. The domestic industry has included all types of boards below 6mm be it medium density boards or high density boards. The domestic industry is not capable of producing widths below 2.5mm and the same are required to be excluded from the purview of the investigation.

Submissions made on behalf of M/s PT. Masari Dwisepakat Fiber, Indonesia and M/s PT. Sumatera Prima Fibre board (SPF), Indonesia

20 The following submissions, in brief, have been made on behalf of M/s PT. Masari Dwisepakat Fiber, Indonesia and M/s PT. Sumatera Prima Fibre board (SPF), Indonesia:

- Wrongful inclusion of non-product under consideration in the import data: Transaction wise examination reveals that the data included transactions relating to High Density Boards. From the transaction wise description, it is not evident as to how insulated boards and other non-product under consideration were excluded. They are not in a position to understand whether filtration of raw data was undertaken for excluded categories specifically when the narration of each transaction does not give any description of special features like laminated fibre board etc. In any case, the Tariff Heading 4411 not only includes boards that are bound by resins or other organic substances but also includes within its scope board that may not be bound by resin or other organic substances. The Authority may also review the import data and exclude all entries that relate to non-product under consideration. While undertaking such an exercise, the applicants be called upon to disclose the methodology adopted by them when they excluded the products from the raw data and listing of all such exclusions.

- **Scope of the Product under Consideration:** the present investigations should exclude Thin Fibre board below 3mm thickness from the purview of Product under consideration as the same are neither produced nor sold by the Domestic Industry. Thickness of a Board is a critical parameter for any particular application and different thicknesses cannot be technically or commercially substituted for each other. For instance, if the design requirement is to use 3mm thick Board, it would not be technically possible for any user to substitute the same with any other Board with a different thickness. The end-use of thinner fibre boards is entirely different from thicker sizes. The product scope selected by the applicant is vague and not defined appropriately. The description does not deal with an important factor viz. density. It appears that the approach adopted for not defining the product under consideration through its density is to strategically include within the produce scope density that is not being produced by the applicants. It appears that the applicant Industry has withheld information relating to captive consumption of the product under consideration. The applicant is mainly into the business of high price subject goods which required plain fiber boards as raw material. In view of the above, the Authority should exclude the followings from the scope of the product under consideration:

- Fiber Boards below the thickness of 2.5 / 3 mm depending upon what the Domestic Industry has produced and "actually" supplied during the POI.
- All Medium Density Boards having emission standard of E2, E3 and any other standard which is not equivalent to E1 emission standard.
- Fire Retardant Particle Board
- Veneered MDF and Particle Boards

In view of aforementioned submissions, the Authority may also review the import data and exclude all entries that relate to non-product under consideration. While undertaking such an exercise, the applicant be called upon to disclose the methodology adopted by them when they excluded the products from the raw data and listing of all such exclusions. We are presently not in a position to understand filtration of raw data was undertaken for excluded categories specifically when the narration of each transaction does not give any description of special features like laminated fibre board etc. In any case, the Tariff Heading 4411 not only includes boards that are bound by resins or other organic substances but also includes within its scope board that may not be bound by resin or other organic substances.

- **False declaration about substitutability:** Applicant has mentioned in the application that there is no known viable technical and commercial substitute of the subject goods. In this context, the exporters have raised serious objection as there are several viable substitutes available in the market. It is also submitted that the Applicant himself provided the differences between subject goods and other substitutes on its website. Therefore the submission made by the Applicant is incorrect and need to be rejected.

Submissions made by domestic industry

21 The following submissions, in brief, have been made on behalf of the domestic industry:

- As regards the contention that the Applicant has mischievously included Non-PUC while examining various parameters in terms of law; T/T data reveals that data related to high density boards have been included; the Applicant takes strong objection to unwanted, uncalled for and unnecessary usage of words such as “mischievous”, whose sole purpose is to create bias and impede the investigations. The Applicant requests the authority to call upon the parties to first establish the basis for such uncalled for words. Assuming the Applicant has included some import data of Non-PUC; firstly, how it becomes mischievous and secondly how such inclusion is material to the present determination? The Applicant has reviewed the entire import data once again and found that there is no import entry of Non-PUC that has been included in volume and value of imports of the product under consideration.
- As regards the contention that the PUC defined is vague and not defined properly and that the description does not deal with density, which is an important factor; it is stated that there is no ambiguity or vagueness in the description. The basis of allegation is not understood as the interested party has not shown how density as a parameter governs/impacts the price. The Applicant has reviewed import listing and finds no consistent pattern with regard to density and price. Price of low density product is sometime higher than higher density product and sometime lower. Unless there is a consistent pattern of product pricing based on a parameter, it must be concluded that the parameter, in fact, has not been followed by the parties concerned. Further, the interested parties have not shown any consistent pattern in this regard.
- As regards the contention that the Applicant only produces thickness ranging from 2.5 to 5mm; it is stated that the present application is in respect of material retardation to establishment of domestic industry. Therefore, the fact of no production during the injury period becomes irrelevant in the present case. The domestic industry is not yet fully established. It is obvious that the domestic industry would not have produced and sold all variants of the product. It may be noted, the domestic industry produced fiber board of 2.1 mm in presence of officers at the time of on the spot verification just to demonstrate that the domestic industry can produce fiberboard below 2.1 mm and the interested parties have resorted to mere allegation. Lab test reports of 2.1 mm fiber board produced by the domestic industry have been separately filed. The Applicant has produced particle board of E1 standard. If the Applicant can produce particle board of E1 standard, the Applicant can certainly produce product under consideration of E1 standards. The present petition is in respect of dumping causing material retardation of establishment of domestic industry. As regards Fire retardant particle board; there is no factual basis for the claim. The Applicant has so far produced only selected few categories of product and the petition is in respect of material retardation of establishment of domestic industry. The Applicant, obviously

cannot supply all range and types to begin with the production. The moment production is commercialized the Applicant shall offer all those products which are required in the market. However, even the most popular product types produced by the Applicant could not be sold to the extent of production and the Applicant was faced with piling up of inventories. Further, the Applicant was forced to sell the goods produced at significantly adverse price in view of dumping of the product.

- As regards Tariff heading 4411 not only includes boards that are bound by resin but also includes boards that may not be bound by resin; the Applicant is aware and the application is in respect of boards that are bound by resin but also includes boards that may not be bound by resin. The fact that board may be bound by other organic substance does not render the position any different. The Applicant submits that the product under consideration in the present investigations is "resin or other organic substances bonded wood or ligneous fibre boards of thickness below 6mm," hereinafter, referred to as 'fibre board' in the petition. Fibre board is custom wood or craft wood composite engineered product, and is made of heat pressed resin bonded wood fibre. Fibre board can be further mechanically processed, such as laminated, surface coated, carved, molded, etc. Scope of the product under consideration in the present petition includes all products classifiable under customs heading 4411, except (a) fibre boards of thickness 6mm or above, (b) insulation boards, (c) laminated fibre boards and (d) boards which are not bonded either by resin or other organic substances. Besides, Manufacturers may classify the product based on emission standards, as per guidelines set by international organizations, like CARB (California Air Resources Board). Emission standards can be achieved by use of appropriate resin. All producers of fibre board in subject countries and Indian producers are in a position to produce and supply the product under consideration with different emission standards. To make E-1 fibre boards, worldwide the technology used is to add some additives in the Glue of E-2 and lower the Formaldehyde emissions. The Applicant has produced E-1 standard boards.
- As regards Sanding, it can be done on the product under consideration. Sanding is a process wherein the surface of the board can be made extremely smooth by removing material. Imports are generally being made in un-sanded form. This is because of the fact that application areas of MDF from 2mm to 5.5 mm do not require any sanding. The sanding is done on any fibre board due to two factors (i) rough surface (ii) thickness variation. In case of production of 2mm to 4 mm thickness boards, the heat penetration is good, the curing of board take place in short time, the board surface become smooth and the thickness of board is also similar in the Fibre Board across the width and length and thickness variation is $\pm 0.1\text{mm}$ and therefore does not affect the quality. So generally manufacturers do not do sanding on fibre boards of thickness 2mm to 4mm.
- As regards Density and Thickness; Density and thickness are correlated with each other. Generally density of thin MDF ranges from 750 to 850 kg/cbm. The BIS norms allow density variation of 10%. In reality, if any manufacturer increases the density, the cost of raw materials will increase because of more consumption of raw material,

power and also the productivity would be down as higher the density higher would be the curing time. It would also be seen that the production declines with lower thickness. However, it is seen that density overlaps between different thicknesses but the variation is not significant. Therefore, there has not been any impact of density and thickness in the product prices. Before the Authority considers any parameter as relevant for price comparison, the interested parties must first establish that the prices varied significantly and consistently with the parameter. If there is no consistent difference in the prices, the parameter in any case is required to be ignored. The interested parties have not kept any consistent difference in the prices on the basis of thickness and density. Such being the case, the Authority may kindly ignore the difference. Mere existence of a factor resulting in difference is insufficient. Such factor must have been recognized in the commerce as a factor that affects the prices. Such factor must have been consistently applied by the producers.

- As regards the contention that there are several viable substitutes available in the market as against what is stated by the applicant; the petition requires information on "viable substitute" for the product. The viable substitute has to be considered on the basis of technical and commercial substitutability of the product. It is a clear position that there is no technical or commercial substitute for the product under consideration. None of the interested parties have identified any such technical and commercial substitute for the product. Further, if indeed there is any such technical and commercial substitute for the product; the interested parties should not be bothered about the present investigation. They can switch to such viable substitute.
- As regards the contention that T/T data has been adopted by the DI which has imports reported in different descriptions and units and only altered import data along with the methodology adopted has been provided and that complete raw data must be furnished so as to assess the correction of the compilation of import data; there is no such legal requirement for providing raw data. In terms of the prescribed application proforma in its relevant part, the petition should contain (a) volume and value of imports, country wise; and (b) source of information. Evidently, the T/T information itself need not be annexed with the petition. The only obligation on the Applicant is to identify the source and quantified volume and value of imports. Despite this, the domestic industry provided information showing transaction wise imports.
- Like Article: There is no known difference in the product produced by the Applicant company and exported from subject countries. Both the products have comparable characteristics in terms of parameters such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification, etc. Comparison of essential product properties in respect of domestic product and imported product would show that the goods produced by the domestic industry are comparable to the imported goods in terms of essential product properties. The subject goods are produced and sold in a number of variants to meet specific end applications. Different product types are produced using the same or similar raw materials, employing the same or similar production process, technology, employees. Fact of production or non

production of a particular product type in the case of the Applicant depends on the market requirements. Further, since the Applicant is in the process of establishing itself in the Indian market, the Applicant is gradually offering different variants.

Examination by the Authority

- 22 The product under consideration in the present investigation is *'Resin or other organic substances bonded wood or ligneous fibre boards of thickness below 6mm, hereinafter, referred to as 'fibre board', except insulation boards, laminated fibre boards and boards which are not bonded either by resin or other organic substances'*.
- 23 From the product description, it would be amply clear that it covers wood or ligneous fibre boards of thickness below 6mm that are bound by resin but also includes boards that may not be bound by resin except insulation boards, laminated fibre boards and boards which are not bonded either by resin or other organic substances.
- 24 Fibre board is a custom wood or craft wood composite engineered product, and is made of heat pressed resin bonded wood fibre. Fibre board can be further mechanically processed, such as laminated, surface coated, carved, moulded, etc. Scope of the product under consideration includes all products classifiable under customs heading 4411, except (a) fibre boards of thickness 6mm or above, (b) insulation boards, (c) laminated fibre boards and (d) boards which are not bonded either by resin or other organic substances.
- 25 Fibre boards are wood based boards, available in different sizes and thicknesses. However, unlike solid wood made of single piece, they are high-strength engineered product - made from wood or lingo cellulosic material- refined into fibres, and then reconstituted with a resin binder at elevated temperatures, to form boards.
- 26 Fibre boards, being an engineered product, have certain advantages over solid wood (made out of single solid piece of wood). Fibre board has stronger tolerance to moisture changes, as compared to solid wood, because it is made of wood fibre arranged in overlapping pattern. It has better adaptability to environmental changes, and is very versatile. Fibre board has various applications, like in furniture, handicraft, consumer articles, etc.
- 27 The product under consideration is classified under Chapter 44 of the Customs Tariff Act. The product under consideration does not have a dedicated customs classification code. Customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of this investigation.
- 28 The Authority concurs with the view that Door Skins are value added and a separate product. Besides, prices of door skin are significantly higher as compared to normal Fibre board. It is further noted that Fibre Board Moulded Door Skin can only be produced from Fibre Board of 3mm thickness with its density above 800 kg/m³. As Moulded Door Skin is a value added product, the same is not within the ambit and scope of the investigation.
- 29 It is noted that the PUC is defined properly. There is no ambiguity in the description. It is further noted that the interested parties have merely filed their submissions seeking exclusions of different types within the PUC without appropriate reasoning. It is noted that the domestic industry has essentially claimed injury' on the basis of material retardation of establishment of their industry. In such a case, it certainly cannot be expected that it must

have necessarily produced and sold the subject goods in all its forms in order to claim injury as presence of the dumped imports in the Indian market have materially impacted their business decisions so far as the PUC is concerned.

- 30 As regards density vis a vis the prices, no consistent pattern has been noted. In fact, the co-operating exports/producers have not made any distinction in their Appendix 8 data on this account.
- 31 As regards the contention that the Applicant only produces thickness ranging from 2.5 to 5mm; it has been noted that the domestic industry is capable of producing thickness below 2.5mm and hence the same is not required to be excluded. Besides, the injury in the instant matter is essentially in respect of material retardation to establishment of domestic industry; therefore, no production of a particular type of the subject goods not relevant in the present case as the domestic industry is not yet fully established; nay has been prevented from doing so due the presence of dumped imports. The Authority notes that the Applicant domestic industry has the capacity to produce different types of the subject goods and hence the claims made by interested parties on this account do not have any merit.
- 32 As regards the contention that there are several viable substitutes available in the market, the same has not been substantiated. It is seen that the domestic industry has disputed the claim. The Authority proposes to examine the issue further during the course of the investigation, particularly while conducting the on-site verification.
- 33 The Authority notes that the imports data used in the present analysis pertains to the PUC. The data has been determined based on the ambit and scope of the PUC as defined in the initiation notification.
- 34 The Applicant has claimed that there is no known difference in the product produced by the Applicant company and exported from subject countries and that both the products have comparable characteristics in terms of parameters such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification, etc. A comparison of essential properties in respect of the domestic like product and the imported subject goods show that the domestic like product is comparable to the imported subject goods. The subject goods are produced and sold in a number of variants to meet specific end-use applications. Different types of the subject goods are produced using the same or similar raw materials, employing the same or similar production process, technology, employees etc.
- 35 Thus, the subject goods produced by the Applicant are being treated as like article to the product under consideration imported from the subject countries within the meaning of the AD Rules for the purpose of this investigation.

D. Scope of 'Domestic Industry' & 'Standing'

- 36 At the time of the initiation of this investigation, Rule 2(b) of the AD Rules defined domestic industry as under:

'domestic industry' means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers only.

37 However, this Rule has been subsequently amended to read as follows:

'domestic industry' means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers.

Submissions made by other interested parties

38 The submissions made by interested parties, in brief, are as follows:

Submissions made by M/s Venugopala Slate Industries

- Applicant did not have the *Locus standi* for being considered as 'domestic industry' and the investigation should be terminated immediately as the Applicant has already admitted that it had imported the subject goods during the period of investigation and sold the same in the market at profit.

Submissions made on behalf of M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd. and M/s Merbok MDF Lanka (Private) Ltd, Sri Lanka

- The Applicant has admitted that it had imported the subject goods during the period of investigation and sold the same in the market at profit. Thus, being an importer of the subject goods, the Applicant falls outside the ambit of 'Domestic Industry' as defined in the statute.

Submissions made on behalf of Evergreen Fibre board Berhad (EFB), Malaysia; Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Bhd. (EJB), Malaysia and Evergreen Fibre board (Nilai) Sdn. Bhd.(EFN), Malaysia

- The determination of standing of the Applicant as domestic industry is not in accordance with law as the Applicant has admitted the fact of imports in the period of investigation and hence there is no reason to treat the Applicant as domestic industry in view of the aforesaid. The domestic industry has made contradictory statements regarding imports. On page 10 and as well as in the initiation notification, it is

disclosed that the imports were made in order to bench-mark the product being produced by the company by research and development and not for trading and that the volume of imports is miniscule in comparison with the production of the Applicant. Conversely, on page 12 of their petition, they have stated that they have sold the imported material in the domestic market and made significant profits.

Submissions on behalf of M/s. Magna-Foremost SDN and M/s. Masonite Components, Ireland

- The Applicant does not have the standing to qualify as the “domestic industry” under Articles 4.1 and 5.4 of the AD Agreement and Rule 2(b) of the Anti-dumping Rules because the Applicant is itself an importer of the subject product.

Submissions made on behalf of M/s PT. Masari Dwisepakat Fiber, Indonesia and M/s PT. Sumatera Prima Fibre board (SPF), Indonesia

- **Self Imports of Subject Goods for Benchmark:** The domestic industry to get over the requirement of Rule 2(b) has mischievously offered defense by stating that the self imports were for benchmark purposes. Such an object can be well achieved by buying imported goods from the local market and not by importing full containers of subject goods. Interestingly, on page no. 10 para 37, of the petition, it is mentioned by Applicant that they imported the subject goods for research and development but not for trading. On the contrary, in para 44 of page no. 12, they have categorical mentioned that they have sold the imported material at significant profit, that means they have traded the subject goods and earned profit also. Trend analysis for imports faulty due to self imports of applicants prior to POI and during POI. That the website of the Applicant admits that prior to POI they were only resorting to imports. That the case needs to be terminated for another reason as the determinations on standing and pre-conditions of Rule 5 cannot be made under Rule 12 or Rule 17.

Submissions made by domestic industry

- The Applicant Company has not imported the subject goods, barring small volume of imports made after the commencement of commercial production. The product of different thickness from different companies was imported in small quantities for the comparison with the product produced in house. The product comparison is effective only when the whole batch of the product is imported so that the extent of moisture content, glue content and various other product specifications can be compared with the same product range produced by the Applicant. These imports were made in order to benchmark the product being produced by the company by research and development and not for trading. In fact, the volume of imports is miniscule in comparison with the production of the Applicant. Bills of entry in respect of such imports have been provided to the Authority. The Applicant is not related (either directly or indirectly) to any exporter or importer of product under consideration in the subject countries.

- With regard to imports made by the Applicant, the reasons for imports have been given hereinabove. It is not a case where the Applicant has sold the imported material at significant profits. It is clarified that the statement in the application should not be read to mean that the Applicant has sold the product. In fact, the Applicant has not sold the product as such. It has consumed the product in downstream product and sold such downstream product (in downstream products also, the Applicant is suffering financial losses). The Applicant is not resorting to imports in order to benefit from dumping. Thrust of the Applicant has not turned to imports and the thrust continues to be on own production. The Applicant should therefore be considered as eligible domestic industry within the meaning of the Rules.
- In respect of contention that the Applicant does not have the *locus standi* on account of importing goods during the POI; the argument is without any legal and factual basis. Contrary to the claim made, the definition of domestic industry provides that the Authority shall ordinarily consider “domestic producers as a whole”. Further, in case a domestic producer has imported the product from subject countries, the rules provide that the Authority “may” “construe” such a domestic producer as ineligible domestic industry. It may be noted that firstly, the rule does not say that the Authority shall consider such a company as an ineligible domestic producer. Secondly, because of the usage of the word ‘may’, an interested party must establish before the Authority that such a producer as ineligible domestic producer. This is more so given the ordinary meaning of word domestic industry. In other words, while inclusion should be assumed, the need to exclude must be established.
- In respect of imports made for benchmark purpose and that contradictory statements have been made; it is submitted that the domestic industry has given actual defense for self imports and that the allegation is without basis. Thin Board was not being produced in India before the Applicant started production. Therefore, question of buying the same from local market for benchmarking purposes does not arise. Further, the product imported for benchmark purpose need not be stored indefinitely. Business prudence demands that the same is disposed off once the purpose is achieved. The Applicant has not sold the imported product in the market and has consumed the imported product in downstream product and thereafter sold the product. In fact, it would be seen from the information that the Applicant has suffered losses in downstream products as well.
- A statement showing production by various producers and share of Applicant including that of the supporting company is contained in the application. From the mentioned data, it is evident that there are two companies in India namely Balaji Action Buildwell (the Applicant) and Green Ply Industries, who have recently commenced the production of the product under consideration. Green Ply Industries has commenced the commercial production of product under consideration very recently in December’2010. Green Ply Industries Ltd. has supported the present application. Thus, the Applicant constitutes “a major proportion” in the total Indian

Production. Production of the Applicant accounts for more than 50% of the total Indian production (87% approx) and therefore should be considered as majority producer of the product under consideration. The application has been made by or on behalf of the Domestic Industry and therefore satisfies the requirements of standing under Rule 5(1) of the AD Rules.

Examination by the Authority

- 39 The Authority has noted the arguments raised by the interested parties. The Authority notes that the AD Rules confer discretion on the Authority to, *inter alia*, include or exclude a domestic producer that has imported the subjected goods from the ambit & scope of the domestic industry on the facts & merits of each case. The amendment dated 1st December 2011 to Rule 2(b) of the AD rules does not alter the situation; but clarifies the same. Rule 2(b) of the AD Rules stipulates that domestic producers which are either related to the exporters or importers or which are themselves importers of the allegedly dumped articles may be excluded when determining the domestic industry in certain situations. The Authority notes that a domestic producer might import the product under consideration for one or more *bona-fide* reasons, including for testing, research & development, seed-marketing purposes (imports of the product to test the quality etc).
- 40 It is noted that the Applicant Company has imported the subject goods of different thickness in small quantities for the comparison with the product produced in-house to the extent of *** cbm during 2010-11, which accounts for approximately *** % of the total imports. It is noted that these imports were made by the Applicant for bench-marking the product being produced by the company for research and development of its products and not for trading. The volume of imports is miniscule in comparison with the production of the Applicant. It is also noted that the imports do not form the core activity of the company and it has not abdicated its role of a domestic producer.
- 41 As per the application, there are two producers of the product in India, namely M/s. Balaji Action Buildwell (the Applicant) and M/s Green Ply Industries Ltd. M/s Green Ply Industries Ltd. has supported the present application. Thus, the applicant along with the supporter account for 100% of the production of the subject goods in India.
- 42 The Applicant has claimed that the company's thrust continues to be on own production rather than on imports and the Applicant should therefore be considered as eligible domestic industry within the meaning of the AD Rules.
- 43 In view of the above, it would be inappropriate to exclude such a domestic producer from being treated as domestic industry. The Authority finds merit in the claim of the Applicant that it should not be excluded as a domestic producer of the subject goods in India and be considered as the domestic industry for the purposes of this application.
- 44 The Applicant accounts for more than 50% of the total Indian production (87 % approx) and therefore is a major producer of the subject goods. Thus, the application has been made by or on behalf of the domestic industry and satisfies the requirements of 'Standing' under Rule 5

of the AD Rules. Further, the Applicant constitutes 'Domestic Industry' in terms of Rule 2(b) of the AD Rules.

E. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

Submissions made by other interested parties

45 The submissions made by interested parties, in brief, are as follows:

Submissions made on behalf of Evergreen Fibreboard Berhad (EFB), Malaysia; Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Bhd. (EJB), Malaysia and Evergreen Fibreboard (Nilai) Sdn. Bhd.(EFN), Malaysia

- The normal value has been incorrectly determined on the basis of high consumption norms of the domestic industry for raw material and utility whereas the consumption norm for raw material and utility are much lower for the exporters.

Submissions made on behalf of M/s PT. Masari Dwisepakat Fiber, Indonesia and M/s PT. Sumatera Prima Fibre board (SPF), Indonesia

- **Selection of Surrogate Country:** The Authority failed to follow proper procedure as prescribed under paragraph 7 of Annexure I to select appropriate market economy third country. Under the procedure, the domestic industry was required to provide sufficient evidence and names of producers for the Authority to propose such selection in the initiation notification. Neither did the domestic industry provide any material or evidence nor did the Authority make any efforts to select an appropriate market economy third country out of the three countries proposed. No efforts whatsoever had been made by the Authority to seek appropriate information. Further, the Authority failed to appreciate that in spite of the legal obligation under paragraph 7, it failed to put the parties to the investigation at notice without unreasonable delay about selection of the third country market economy or surrogate country. The applicant has not even specified as to which country was proposed to be taken as a surrogate country, despite having full knowledge of several similar economies involved in the production of the subject goods and also of their participation in the current investigation.
- **Adjustments in the Export Price:** In the initiation notification, the Authority has only considered ocean freight, marine insurance, documentation charges, cleaning charges and manifestation charges for calculating ex factory price for exports, but in the petition the Applicant has considered commission also. In this regard, the Authority should provide the final export price used for initiation purpose. Further, the commission charged by the Applicant is very high. In most of the cases commission is considered as 1% of FOB price.

Submissions made on behalf of the domestic industry

- As regards the contention that Authority failed to follow proper procedure under para 7 of Annex. 1 to select appropriate market economy third country etc; it is stated that the stage of application of Para 7 by the Authority has not even arrived as yet. The Applicant submits that normal value for China PR could not be determined on the basis of price or constructed value in a market economy third country for the reason that the relevant information is not available to the Applicant. It is noted that such normal value must be "comparable price in the ordinary course of trade for the like article when meant for consumption in such market economy third country". In order to arrive at normal value on this basis, the Authority shall require complete & exhaustive verifiable information on all domestic sales made by a cooperating producer in such third country, along with its cost of production and all other associated information and evidences (including all information in the ordinary course of trade). Principles of fair comparison as laid down under Article 2.4 of the Agreement are also relevant in this respect. The Applicant has not been able to procure such information from a producer in market economy third country.

The Applicant submits that India is an appropriate surrogate country for China PR. Not only the consideration of India as a surrogate country would result in access to accurate and adequate information, there is no factual basis to consider that India would not be a proper surrogate country. India has been considered as an appropriate surrogate by other Investigating Authorities too. The normal value in China can be determined on any of the above-mentioned basis. The normal value in China can thus be determined on the basis of (a) price in India, and (b) cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit. The normal value has been determined accordingly on the basis of cost of production in India, duly adjusted, in view of the fact that the selling price is a loss making price.

Further, the Applicant refers to Para 8 of Annexure-I to the rules which provides that the Authority shall examine whether the product or the producers in China are operating in market economy environment. The Authority is required to provide sufficient opportunity to the parties concerned in this regard. It is only thereafter that the Authority can consider application of Para 7 and a question of surrogate country shall arise. Information from such surrogate country at this stage shall imply a presumption on the part of the Authority that the Chinese exporters, in any case, would not claim market economy status either for the product or in respect of the companies.

- As regards the contention that in the initiation notification adjustment to export price included does not include commission, whereas the Applicant has claimed adjustment on account commission in the application; the DA need not accept all the claims made by the Applicant; nor rejection of the claim with regard to commission would make dumping margins significantly different. The application should contain sufficient prima facie evidence of dumping. It is not the argument of the interested party that acceptance or rejection of commission shall make materially different position in this regard.

- As per information known to the Applicant, a number of producers are engaged in production of the product under consideration in the subject countries. Before accepting any response, the Applicant requests the Authority to kindly cross check the claims made by these interested parties with the Indian Customs data. Static import price despite rising raw materials is a clear evidence of dumping. It would be seen that there is a significant increase in the input costs. If the import prices are adjusted for the increase in the input prices, it would be seen that the import prices in fact have significantly declined [i.e. cost adjusted import prices show huge decline over the period. It is thus evident that dumping has intensified over the period.

Examination by the Authority

- 46 The Authority notes that the Applicant domestic industry is required to provide information that is reasonably available to it and sufficient information was made available to justify initiation of the investigation in the instant matter.
- 47 As regards the issue that normal value has been incorrectly determined on the basis of high consumption norms of the domestic industry for raw material and utility whereas the consumption norm for raw material and utility are much lower for the exporters, the same is incorrect. As recorded in the initiation notification, the Applicant had estimated the Normal values in the subject countries by considering the constructed normal value approach. For the purpose, it had estimated cost of production of the foreign producers by adopting such information as is reasonably and publically available. The Authority had prima-facie considered the normal value of the subject goods in the subject countries on the basis of constructed values for the purpose of the initiation of this investigation. The Authority, however, notes that it expected concerned exporters/producers from the subject countries to co-operate in the investigative process by filing their exporter's questionnaire response for facilitating appropriate determination of the dumping margins so that the Normal values could be determined based on their respective questionnaire responses. It is noted that a few exporters /producers from the subject countries (except from China PR) have filed their exporter questionnaire's response. An examination of the exporters' questionnaire response along with additional information /data sought by the Authority, shows that the dumping margins are significantly positive.
- 48 As regards the contention that Authority failed to follow proper procedure under para 7 of Annex. 1 to select appropriate market economy third country etc; the Authority notes that the issue has been raised by an Indonesian exporter, who should not be concerned with this issue as para 7 is not applicable to them at all. No Chinese exporter/producer has sought to question the same. Notwithstanding the same, the Authority notes that the Applicant had submitted that Normal value for China PR could not be determined by them on the basis of price or constructed value in a market economy third country as relevant information was not accessible to them. It needs to be noted that appropriate market economy third country must be comparable keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question. The Authority notes that it did not have any reliable information that was made available to it at the time of initialing this investigation. Besides, the Applicant had submitted that India is an appropriate surrogate country for China PR as not only India has

- been considered as a surrogate country to China PR in the past by WTO Members but it would also result in access to accurate and adequate information. The normal value had thus been determined on the basis of cost of production in India, duly adjusted. While doing so, the Authority had moderated the claims of the Applicant and it was thus determined that there was sufficient evidence on record in this respect to justify initiation of the investigation.
- 49 As regards adjustments in the Export Price at the time of initiation notification; it is clarified that the Authority had considered ocean freight, marine insurance, documentation charges, cleaning charges and manifestation charges and had disregarded the claim with respect to commission for the purposes of estimating ex factory price of the subject goods from the subject countries. Thus, rather than considering commission @ 1% of FOB price as suggested by the interested party, the Authority had not made any adjustment in the export price for the same.
- 50 The Authority sent questionnaire to the known exporters/producers from the subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed. Response to the questionnaires were received from the following:

S.N.	Name of Producer/Exporter
1	M/s. Magna-Foremost SDN, BHD, Malaysia
2	M/s Masonite Components, Ireland
3	M/s Merbok MDF Lanka (Private) Ltd., Sri Lanka.
4	M/s Segamat Panel Boards Sdn, Bhd, Malaysia
5.	M/s P.T. Masari Dwisepakat, Indonesia
6.	M/s P.T. Sumatera Prima Fibre Board, Indonesia
7.	M/s. Evergreen Fibre Board Berhad (EFB), Malaysia
8.	M/s Evergreen Fibre Board (JB) SDN BHD, Malaysia
9.	M/s Evergreen Fibre Board (Nilai), Sdn. Bhd (EFN), Malaysia
10.	M/s Daiken Miri Sdn. Bhd., Miri Sarawak, Malaysia

- 51 M/s Daiken Miri Sdn. Bhd., Miri Sarawak, Malaysia has stated that they have not exported the subject goods during the POI.

Examination of Market Economy claims in respect of China PR by the Authority

- 52 The Authority notes that in the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in anti-dumping investigations by India and other WTO Members. China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the AD Rules.
- 53 As per Paragraph 8 of Annexure I of the AD Rules, the presumption of a non-market economy can be rebutted, if the exporter/producer(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) of Paragraph 8 and establish the facts to the contrary. The co-operating exporters/producers of the subject

goods from People's Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 of Annexure I of the AD Rules in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Authority to consider the following criteria as to whether: -

- the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

54 The Authority indicated, in the initiation notification that the applicant has claimed that China PR should be treated as Non Market Economy and therefore Normal value in case of China PR should be determined in accordance with Para 7 and 8 of Annexure I of the AD Rules. The applicant has submitted that they have not been able to access information from a market economy third country for the purposes of determination of Normal value in respect of China PR and has pleaded that India can be considered as an appropriate market economy third country for determination of normal value in China PR. The Authority informed known exporters/producers from China PR that it proposes to examine the claim of the Applicant in the light of para 7 and 8 of Annexure I of the AD Rules. The exporters/producers of the subject goods from China PR were therefore requested to furnish, *inter alia*, necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 of the Annexure I of the AD Rules to enable the Authority to consider whether market economy treatment be granted to cooperative exporters/producers from China PR.

55 The Authority notes that consequent upon the initiation notice issued by the Authority; none of the Chinese producer/exporter has submitted its questionnaires' response including the market economy questionnaire response and thus has not sought to rebut the non-market economy presumption.

Determination of Normal value in respect of Exporters / Producers from China PR

56 Para 7 of Annexure I of the AD Rules provides that

In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or

where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments.

- 57 The Authority notes that sufficient information and evidence is not available on record in respect of the price or constructed value of a market economy third country that has the comparable level of development *vis a vis* China PR, particularly considering the subject goods. Thus, in view of the above facts, the Authority, for the purpose of preliminary determination, proceeds to provisionally determine the Normal value in respect of exporters/producers from China PR on available reasonable basis, in terms of second proviso of para 7 of Annexure 1 to the AD Rules. Accordingly, the ex-works Normal Value of the product under consideration have been provisionally determined based on constructed costs of production, duly adjusted. The Normal Values have been constructed as per the methodology described below:

Methodology adopted for constructing Normal Value in case of China PR

- 58 Accordingly, the Authority has constructed Normal value for producers in China PR on the basis of:
- the price of inputs as procured by the domestic industry,
 - efficient consumption norms of raw materials of domestic industry as considered in the NIP.
 - the utilities cost and conversion costs of the domestic industry as considered in NIP.
 - After arriving total cost of production for CNV as above, 5% profit has been allowed.

- 59 For the purpose of preliminary findings, the normal value so determined comes to US\$ *** /CBM.

Normal value in respect of Indonesia, Malaysia and Sri Lanka – responding exporters

- 60 Response to the questionnaire were filed by the following companies:

S.N.	Name of Producer/Exporter
1	M/s. Magna-Foremost SDN, BHD, Malaysia
2	M/s Masonite Components, Ireland
3	M/s Merbok MDF Lanka (Private) Ltd., Sri Lanka.
4	M/s Segamat Panel Boards Sdn, Bhd, Malaysia
5.	M/s P.T. Masari Dwisepakat, Indonesia
6.	M/s P.T. Sumatera Prima Fibre Board, Indonesia
7.	M/s. Evergreen Fibre Board Berhad (EFB), Malaysia
8.	M/s Evergreen Fibre Board (JB) SDN BHD, Malaysia
9.	M/s Evergreen Fibre Board (Nilai), Sdn. Bhd (EFN), Malaysia
10.	M/s Daiken Miri Sdn. Bhd., Miri Sarawak, Malaysia

- 61 M/s. Magna-Foremost SDN and M/s. Masonite Components, Ireland has stated that they have not exported the subject goods to India and that they have only exported door-skins. Since it has already been clarified that door-skins are not part of the PUC, no further examination of their data has been undertaken for determining individual dumping margin in their case, subject to further verification as may be deemed appropriate.

General methodology followed for the responding exporters for determination of Normal Values

- 62 The Authority has determined individual dumping margin in respect of co-operative exporters / producers who have provided the requisite information. The general methodology adopted for determination of Normal value is as follows:
- 63 It was first seen, whether the domestic sales of the subject goods by the responding exporters/producers in their domestic markets were representative and viable for permitting determination of Normal values on the basis of their domestic selling prices and whether the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by the respondents and sought by the Authority. Wherever the respondents have provided transaction-wise details of the sales of the like article in their home markets, the information so provided has been relied upon to determine the Normal value for the subject goods after carrying out the ordinary course of trade test and sufficiency test subject to further investigation and verification.
- 64 For carrying out the OCT test, the costs of production have been examined with reference to the exporter's/producer's questionnaire responses filed by them and in terms of the additional information sought by the Authority, subject to further investigation and verification. Wherever discrepancies in the information/data filed have been noted, the Authority has provisionally constructed the cost to make and sell the goods based on best information available on record, subject to further investigation and verification.

- 65 Wherever, there were no domestic sales or no sufficient domestic sales, the Normal value has been determined by the Authority on the basis of 'facts available' in terms of Rule 6(8) of the AD Rules.
- 66 In their responses, the respondents have provided transaction-wise details of sales made of the subject goods in their home markets. The information so provided has been provisionally relied upon to determine separate weighted average domestic selling price of the subject goods, subject to further investigation and verification. Further, all domestic sales transactions were examined with reference to the costs of production of the subject goods/ constructed costs, to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade. It was also seen whether the loss-making transactions account for over 20% of the sales or not. Wherever the profitable domestic sales transactions were found to be accounting for more than 80% of total sales, the weighted average price of all the domestic sales have been taken into consideration. However, wherever the profitable sales volume was found to be less than 80%, the weighted average price of the profitable domestic sales has been taken into consideration.

Determination of Normal value in respect of Co-operative Exporters / Producers from Indonesia, Malaysia and Sri Lanka

M/s Evergreen Fibreboard Berhad (EFB)

- 67 From the perusal of the response of the company it is seen that the company does not follow product coding system and the type of product is identified on the basis of the description given on the invoice/sales contract etc. However, for the comparison purposes, the exporter has devised a product control number (PCN) for each type of the product sold by the company on the basis of the following properties/ features of subject goods manufactured by the company:
- Low Emission Boards
 - Standard / Normal Boards
 - Sanding Process
 - Thickness
 - Width
 - Length
- 68 It has been stated that the goods having the same PCN sold in the domestic market and the export markets are identical. Further, the company has claimed that there are no differences in the goods sold or produced in the domestic market or sold to countries other than India in physical/ technical / chemical characteristics from those exported to India.
- 69 The questionnaire' response submitted by the company was perused. It was found that the respondent has provided selling price and other details of the subject goods in relevant Appendixes of their response. It is noted that M/s Evergreen Fibreboard Berhad (EFB) has a subsidiary, namely M/s Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Berhad (EJB), which has also filed

its questionnaire response. Besides, it is also noted that there is another group company M/s Evergreen Fibreboard (Nilai) Sdn. Bhd, which is producing and selling the subject goods in the domestic market but no response has been filed on behalf of this company. In response to query from the Authority, it was clarified that the response has not been filed as the company has not exported the subject goods to India.

- 70 It is noted from the published data available on the web-site of the company that the company has a number of related entities engaged in activities associated with production of the subject goods including plantation, power generation, manufacturing of glue required for manufacturing the subject goods. Further, the information submitted by the company in Appendixes 7 & 8 includes credits for inadmissible receipts. It is also noted that though the company has stated that the analysis be undertaken on PCN-wise basis; but it is noted that the company does not maintain the Appendix 8B data on PCN-wise basis. Therefore, for the purposes of preliminary findings, the analysis has been done for PUC as a whole. After adjustments for inadmissible credits as above, it is noted that the company has earned profits on domestic sales. In the circumstances, the Authority has provisionally determined the Normal value based on domestic sales, subject to further investigation and verification, which works out as US \$ *** /cbm.

M/s Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Berhad (EJB)

- 71 From the perusal of the response of the company it is seen that the company does not follow product coding system and the type of product is identified on the basis of the description given on the invoice/sales contract etc. However, for the comparison purposes, the exporter has devised a product control number (PCN) for each type of the product sold by the company on the basis of the following properties/ features of subject goods manufactured by the company:

- a. Low Emission Boards
- b. Standard / Normal Boards
- c. Sanding Process
- d. Thickness
- e. Width
- f. Length

- 72 The goods having the same PCN sold in the domestic market and the export markets are identical. Further, the company has claimed that there are no differences in the goods sold or produced in the domestic market or sold to countries other than India in physical/ technical / chemical characteristics from those exported to India.

- 73 The questionnaire response submitted by the company was perused. It is noted that M/s Evergreen Fibre board (JB) Sdn. Berhad (EJB) is a subsidiary of M/s Evergreen Fibre board Berhad (EFB). It is further noted that there is another group company M/s Evergreen Fibre board (Nilai) Sdn. Bhd, which is producing and selling the subject goods in the domestic market but no response has been filed on behalf of this company. In response to query from

the Authority, it was clarified that the response has not been filed as the company has not exported the subject goods to India.

- 74 On a perusal of the company's response, certain discrepancies were noted in respect of Appendixes 3,4,7,&8 of the response. An opportunity to clarify the same was provided to the company. Though the company sought to clarify the issues raised but the same were not found to be satisfactory as the information filed was contradictory in nature. In the circumstances, the Authority is constrained to proceed further by provisionally constructing the Normal value subject to further investigation and verification, which works out as US \$ *** /cbm.
- 75 In view of the fact that once company is the subsidiary of the other; the Authority has provisionally decided to determine a single dumping margin for both the respondents, that is, M/s Evergreen Fibreboard Berhad and M/s Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Berhad.

M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd.

- 76 From the perusal of the response of the company it is seen that the company has claimed that the products which are sold in India and in the domestic market are identical, however each thickness has its own price in the market. SPB only produces thin MDF ranging from 2.2 MM thickness to 6.00 MM.
- 77 The questionnaire' response submitted by the company was perused. It was found that the respondent has provided selling price and other details of the subject goods in relevant Appendixes of their response. The examination of the questionnaire response filed by the company along with the additional information/data sought by the Authority indicates that the company has incurred financial losses on the overall sales of the subject goods after excluding the realisations from the non-cost items. In response to the query from the Authority, the company clarified that its domestic operations for the subject goods are making profits whereas the losses are only in third country exports (other than India). Pending further examination and verification of the data, the Authority has accepted the contention of the company. The adjustments claimed by the company have been provisionally accepted, subject to further investigation and verification. Thus, the normal vale based on the domestic sales of the company works out as US \$ *** /cbm.

PT SUMATERA PRIMA FIBREBOARD

- 78 From the perusal of the response of the company it is seen that the company has claimed that the goods sold in the home market are identical to the exported goods for the same specifications. Therefore, the comparison of prices in the two markets ought to be made for each product code.
- 79 The questionnaire' response submitted by the company was perused. It was found that the respondent has provided selling price and other details of the subject goods in relevant

Appendixes of their response. However, the company has not given code-wise Appendix 8B data. After examination of the submissions of the company, certain discrepancies were noted and the company was advised to clarify the same. While some discrepancies in the data still remain, the information/data filed by the company has been provisionally accepted subject to verification. It is seen that the domestic sales transactions are overwhelmingly loss-making and hence, the Normal value has been provisionally constructed based on their Appendix 8B data, subject to verification. Accordingly, the normal value for the exporter has been determined which works out as US \$ *** /cbm.

PT. Masari Dwisepakat Fiber

- 80 From the perusal of the response of the company it is seen that the company has claimed that it mostly sells premium quality product in the home market. The Indian market does not place too much attention on the product quality. Therefore, they mostly sell Grade A2 and B products to India. However, the goods sold in the home market are identical to the exported goods for the same specifications. Therefore, the comparison of prices in the two markets ought to be made for each product code.
- 81 The questionnaire' response submitted by the company was perused. It was found that the respondent has provided selling price and other details of the subject goods in relevant Appendixes of their response. However, the company has not given code-wise Appendix 8B data. The information/data filed by the company has been provisionally accepted subject to verification. Accordingly, the Normal value has been determined after carrying out the sufficiency and OCT test. The adjustments as claimed by the company have been provisionally accepted, subject to verification. Accordingly, the normal value for the exporter has been determined which works out as US \$ *** /cbm.

M/s Merbok MDF Lanka (Private) Limited

- 82 From the perusal of the response of the company it is seen that the company has claimed that there is no difference between the goods sold in the home country compared with the goods exported to India except thickness and brand and that there are no differences in the goods sold or produced in the domestic market or sold to countries other than India in physical/ technical/ chemical characteristics from those exported to India except thickness and brand.
- 83 The questionnaire' response submitted by the company was perused. It was found that the respondent has provided selling price and other details of the subject goods in relevant Appendixes of their response. The examination of the response filed by the company shows that the company has received significant financial support from its holding company as interest-free loan. In the Appendixes 7 & 8 of the questionnaire's response filed by the company, no expenses on account of finance costs have been reflected. It was noted that after considering the interests costs on the loan so obtained, the company has incurred losses for its domestic operations. Hence, the Authority has provisionally constructed the Normal value

based on their cost of production after appropriate adjustments for interest costs, subject to further investigation and verification, which works out as US \$ *** /cbm.

Determination of Normal value in respect of Non-Co-operative Exporters / Producers

- 84 The Authority notes that none of the other exporters/producers from EU and USA have responded to the exporter's questionnaire. Therefore, the normal value in their cases has been determined on the basis of 'facts available'.

F. EXPORT PRICE

Export price for the responding exporters

M/s Evergreen Fibreboard Berhad (EFB)

- 85 The Authority examined whether the export prices in respect of responding exporters could be determined on the basis of questionnaire responses filed by the respondent. The export prices have been allowed as claimed by the respondent, subject to further investigation and verification. The respondent has furnished information in Appendix 2 relating to exports to India. The adjustments on account of Overseas Freight, Inland Transportation, Local Insurance, Packing, Customs handling and Clearance Charges and Bank Charges have been claimed and are provisionally being accepted subject to further investigation and verification. The ex factory export price thus works out as US \$ *** /cbm.

M/s Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Berhad (EJB)

- 86 The Authority examined whether the export prices in respect of responding exporters could be determined on the basis of questionnaire responses filed by the respondent. The export prices have been allowed as claimed by the respondent, subject to further investigation and verification. The respondent has furnished information in Appendix 2 relating to exports to India. The adjustments on account of Overseas Freight, Inland Transportation, Packing, Local Insurance, Customs handling and Clearance charges and Bank Charges have been claimed and are provisionally being accepted subject to further investigation and verification. The ex factory export price thus works out as US \$ *** /cbm.

M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd.

- 87 The Authority examined whether the export prices in respect of responding exporters could be determined on the basis of questionnaire responses filed by the respondent. The export prices have been allowed as claimed by the respondent, subject to further investigation and verification. The respondent has furnished information in Appendix 2 relating to exports to India. The adjustments on account of Inland Transportation, Overseas Transportation, Handling & Other Charges have been claimed. As regards the adjustments, the same are provisionally being accepted subject to further investigation and verification. The ex factory export price thus works out as US \$ *** /cbm.

PT. Sumatera Prima Fibreboard

- 88 The Authority examined whether the export prices in respect of responding exporters could be determined on the basis of questionnaire responses filed by the respondent. The respondent has furnished information in Appendix 2 relating to exports to India. After examination of the submissions of the company, certain discrepancies were noted and the company was advised to clarify the same. While some discrepancies in the data still remain, the information/data filed by the company has been provisionally accepted subject to verification. The export prices have been allowed as claimed by the respondent, subject to further investigation and verification. The adjustments on account of Commission, Rebate, Inland Transportation, Ocean Freight have been claimed and are provisionally being accepted subject to further investigation and verification which works out as US \$ *** /cbm.

PT. Masari Dwisepakat Fiber

- 89 The Authority examined whether the export prices in respect of responding exporters could be determined on the basis of questionnaire responses filed by the respondent. The export prices have been allowed as claimed by the respondent, subject to further investigation and verification. The respondent has furnished information in Appendix 2 relating to exports to India. The adjustments on account of Overseas Transportation, Inland Transportation and Bank Charges have been claimed and are provisionally being accepted subject to further investigation and verification. The ex factory export price thus works out as US \$ *** /cbm.

M/s Merbok MDF Lanka (Private) Limited

- 90 The Authority examined whether the export prices in respect of responding exporters could be determined on the basis of questionnaire responses filed by the respondent. The export prices have been allowed as claimed by the respondent, subject to further investigation and verification. The respondent has furnished information in Appendix 2 relating to exports to India. The adjustments on account of Inland transportation, Overseas transportation, Overseas insurance and Credit costs have been claimed and are provisionally being accepted subject to further investigation and verification. The ex factory export price thus works out as US \$ *** /cbm.

Determination of Export Price in respect of Non-Co-operative Exporters/Producers

- 91 Since no other response has been received from any other producer/exporter of the subject goods; the Authority has determined the Export price as per 'facts available' in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. The data has been collated as per the information provided by the applicant and the information provided by the co-operative exporters.

G. DUMPING MARGIN

92 Considering the Normal values and Export prices as determined above, the dumping margins have been determined as follows:

In US\$/Cbm

S.No.	Country-Producer/Exporter	Normal Value	Net Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin %	Dumping Margin Range
China PR						
1.	All producers and exporters	***	***	***	***	185-195
Indonesia						
2.	Pt Sumatera Prima Fibreboard	***	***	***	***	60-70
3.	PT. Masari Dwisepakat Fiber	***	***	***	***	35-45
4.	All other producers and exporters	***	***	***	***	105-115
Malaysia						
5.	M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd.	***	***	***	***	11-16
6.	M/s Evergreen Fibreboard Berhad (EFB) / M/s Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Berhad (EJB)	***	***	***	***	34-39
7.	All other producers and exporters	***	***	***	***	90-95
Sri Lanka						
8.	M/s Merbok MDF Lanka (Private) Limited	***	***	***	***	25-30
9.	All other producers and exporters	***	***	***	***	75-80

H. INJURY AND CAUSAL LINK**Submissions made by other interested parties**

93 The submissions made by interested parties, in brief, are as follows:

Submissions made by M/s Venugopala Slate Industries

- There is no merit in the Applicant's claim that their selling price is lower than the prices projected in the project report. Such projection lacks reasonableness and relevancy as

international prices have all along been significantly lower than Indian prices during injury period. Any error in their judgment ought not to be corrected through anti-dumping mechanism. It is incorrect to compare the actual selling price *vis-à-vis* selling price assumed in the project report disregarding the prevailing international price.

- Applicant has misinterpreted provisions of material retardation as Rule 11 (1) provides for mutually exclusive provisions; hence the claim lacks any factual and legal basis. Applicant cannot claim nascent stage after almost 17 months of commercial production and they should not be allowed to misuse anti dumping mechanism to care for their higher cost of production caused by their inherent inefficiency in terms of higher raw material rate, higher fixed cost etc. No Material Injury has been caused to the Domestic Industry as per the data contained in the petition. Arguments on levels of imports are exaggerated; whereas factually imports from subject countries have slightly increased by approx 1% which is negligible and it should be seen along with an admittedly miniscule production and increase in demand. Market share of alleged dumped imports has declined despite the growth in demand. Various other injury parameters showed superb growth and any sign of injury can be seen. The cost of production of the applicant is abnormally high as compared to other East Asian countries as compared to the co-operating exporters. Fixed conversion cost of domestic industry appears to be very high; hence, higher amount of fixed cost should be removed from the injury examination to ensure fair analysis.
- Raw material cost of PUC is influenced by two variables i.e. raw material rate and actual consumption of raw material per unit of output. Raw material rates and consumption norms appear close to double of international rates. Such inefficiencies and losses due to other reasons should be examined and cannot be attributed to injury caused by dumping. Any losses to the Applicant, if any, can be attributable only to higher cost of production. Any imposition of anti dumping duty would be against public interest in the present case as any duty would lead to passing on burden of higher cost due to inefficiencies on importers which in turn seriously affect the interest of user industry.
- Landed price from subject countries have increased whereas selling price of applicant are showing declining trend in the same period. This reflects an inverse relationship and shows no correlation between landed prices *vis-à-vis* domestic selling prices.
- The Applicant has commenced their production recently. Hence, any injury on account of factors such as Start up cost, Un-established sales and distribution channels, increased marketing expenses coupled with higher discounts, higher cost of production etc cannot be attributed to alleged dumping.

Submissions made on behalf of M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd and M/s Merbok MDF Lanka (Private) Ltd, Sri Lanka

- If any, injury to the domestic industry was on account of wood price and consumption norms during the injury period.

- Reasonableness of the projections made in the Project Report: In support of their claim for injury the Applicant has claimed that the price at which the company is forced to sell the product in the market is below than the prices projected in the project report. In this regard, it is submitted that the least selling price of Applicant was approx Rs. 16,935 per CBM during 2009-10 and declined to Rs 15,164 per CBM in POI. We have estimated such selling price from the trending of price undercutting. Pertinently, prices of subject goods in international market have all along been significantly lower than these Indian prices during injury period. While it is for the financial institution for make realistic profitability projections while appraising project for financing having regard to current prevailing prices in the international market, any error in their judgment ought not be corrected through anti-dumping mechanism which is meant to counter act the effect of unfair trade practices. Under anti dumping laws, there are set practices for price comparison under free trade regime. It is incorrect to compare the actual selling price vis-à-vis selling price assumed in the project report disregarding the prevailing international price. It is also relevant to note that the Indian producers of subject product in the country commenced their production recently and they could achieve a price realization higher than international levels.
- Literal meaning of the term “materially retards the establishment of any industry in India” reflects a situation when dumping prohibits the commencement of any industry in India though the plant is ready to declare its commercial production. The term commencement cannot and should not be misinterpreted to denote growth and expansion by the domestic industry which the applicant have tried to do. The use of words ‘import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry in India or material retards the establishment of any industry in India’ in Rule 11 (1) makes it amply clear that Material injury, threat of material injury and material retardation are mutually exclusive. However, initiation notification states that domestic industry has suffered apparently material retardation and also material injury. Hence, test of material retardation relied by the Applicant is inapplicable to the Applicant as plant is already in operation.
- The Applicant has commenced the commercial production w.e.f. 2nd February 2010. It is strange that even after 17 months of commercial production, applicant industry claims to be in its nascent stage. In addition, it is submitted that the claim of the applicant industry for material retardation when they have actually realized selling price above international prices is unfounded and untenable. Further, if the cost of production of the domestic industry is higher due to their inefficiencies, higher raw material rate and higher fixed cost etc then how such industry can claim material retardation as nascent industry and attribute the same to dumping.
- The Authority has stated in the initiation notification that the imports from the subject countries have substantially increased, which should have declined, given that the

domestic industry has set up new production facilities and supporting company has also commenced the production of the product under consideration. However, imports from subject countries was 44,009 MT in 2009-10 which slightly increased to 44,562 CBM in the proposed POI and the rate of such increase was approx 1% only which is very negligible.

- There is no material injury to the Domestic Industry. The data contained in the petition does not show existence injury to the domestic industry on account of alleged dumped imports. In fact, Proforma IVA shows that the production, capacity utilization, market share and sales of the domestic industry have all improved during the POI vis-à-vis the previous year. It is a peculiar situation when operating injury parameters have shown improvement, its market share has improved, and realizing selling prices above the prevailing international prices yet domestic industry is claiming injury. That capacity utilization of Applicant which was only 27% during 2009-10 improved to 32% during POI, thus showing no injury.
- That the domestic industry is not at all competitive when its cost of production is higher by 100% over the international levels. We have tried, (based on our estimation) to compare the actual cost of production and selling price of our exporter vis-à-vis domestic industry. This indicates that the cost of production of the Applicant was abnormally higher as compare to exporters and reasons of higher cost of Applicant have been analyzed as under:
 - a. Higher Fixed Conversion Cost of Applicant: that fixed conversion cost of the Applicant was Rs. 6,372 per CBM whereas it should be Rs. 2,246 per CBM at normal utilization (90%). Thus, fixed conversion cost of domestic industry was high by Rs. 4,126 per CBM during POI due to lower capacity utilization. Further, actual fixed costs of the applicant industry are more than double of the exporters. Therefore, higher amount of fixed cost should be removed from the injury examination to ensure fair analysis as the injury suffered by the Applicant due to this cannot be attributable to alleged dumped imports from the subject countries.
 - b. Raw Material Rate and Consumption Norms of Applicant: It is submitted that raw material cost of PUC is influenced by two variables i.e. raw material rate and actual consumption of raw material per unit of output. A comparison of raw material rates of applicant industry with the corresponding rates of exporters, it may be seen that raw material rates of domestic industry are close to double of cooperating exporter. This difference in rates, explains partially the reason for difference in cost of production of applicant domestic industry vis-à-vis exporters. This is further compounded when we compare the actual consumption of raw material per unit of output of exporter with applicant industry which is higher by about 28%. This is nothing but inefficiency of operation by applicant industry. The possibility of padding up of costs by showing higher consumption material cannot be ruled out which may be critically looked into by the Authority. There

are differences in raw material cost and such difference in raw material cost cannot and should not be attributed to alleged dumping.

- c. Thus, the cost of the Applicant is over by almost Rs. 9,142 per CBM only on account of inefficiencies in terms of low capacity utilization and higher consumption of raw material. Hence any losses caused on account of such other reasons cannot be attributable to dumping.
- That the Applicant has suffered losses when the least net selling price of Applicant was Rs. 15,164 per CBM and such price was higher than international prices which were 12,000 per CBM. We have estimated such selling price from the trending of price undercutting. Therefore, reason of losses to the Applicant was higher cost due to inefficiencies. The landed price from subject countries have increased from Rs. 12,024 MT in previous year to Rs. 12,730 MT in the period of investigation whereas selling price of applicant are showing declining trend in the same period. This reflects an inverse relationship and shows no correlation between landed prices vis-à-vis domestic selling prices.
- That the Applicant has commenced their production recently. Therefore, it is quite known that the Applicant would suffer injury on account of various factors such as (i) Start up cost; (ii) Un-established sales and distribution channels; (iii) increased marketing expenses coupled with higher discounts. There is no causal link.

Submissions made on behalf of Evergreen Fibreboard Berhad (EFB), Malaysia; Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Bhd. (EJB), Malaysia and Evergreen Fibreboard (Nilai) Sdn. Bhd.(EFN), Malaysia

- The rule lays down that there are three types of injury that may be caused to the domestic industry i.e. material injury to an established industry, threat of material injury to an established industry or threat of material retardation of establishment of an industry. The word 'or' used in the above Rule makes it clear that there cannot be a finding of all three types of injury or any two types of the injury existing at the same time. Therefore, injury in the form of material retardation and material injury cannot co-exist. It is also important to mention that the Applicant nowhere in the petition has mentioned that it is a case of material injury. It has merely stated for material retardation and there is no material retardation of the establishment of the domestic industry.
- The import analysis is wholly incorrect. It is amply clear that total imports have conversely declined substantially in 2010-11. Further, a negligible increase of about 1% in the imports from the subject countries over the same period cannot be regarded by any stretch of imagination as substantial increase. That the import data has been incorrectly sorted by the domestic industry.
- The initiation notification, with regard to injury it has been mentioned that the domestic industry has suffered material retardation of its establishment. The domestic industry

has been successfully producing the subject goods for 17 months including the period of investigation and also continues to manufacture the subject goods beyond the period of investigation.

- There is no material injury to the domestic industry as may be seen from the following:
 - i. *Capacity*: The installed capacity of the Applicant has increased significantly from 8333 to 50000 m3 in 2010-11 as compared to previous year.
 - ii. *Production*: The production of the Applicant has substantially increased from 2262 m3 in 2009-10 to 15860 m3 in 2010-11.
 - iii. *Capacity Utilization*: The capacity utilization of the Applicant has increased from 27% in 2009-10 to 32% in 2010-11.
 - iv. *Sales*: The sales of the Applicant have also substantially increased from 334 m3 to 15347 m3 in a single year which is more than 4600%.
 - v. *Inventories*: The domestic industry in 2010-11 produced 15860 m3 and sold 15347 m3 and the balance of 423 m3 is stock for this year. That the stock of mere 2.67% of production in 2010-11 or less than 10 days of inventory cannot be regarded as piling up of inventories.
 - vi. *Market Share*: The market share of the Applicant has increased from 0.63% in 2009-10 to 25.23% in 2010-11.
 - vii. *Profitability, Return on capital employed, Cash profits and price undercutting*: The injury with respect to them, if any is not because of the alleged dumped imports from subject countries but because of its high cost due to high per unit cost on account of start-up cost, high raw material cost, high utility cost, high fixed cost, high labour cost, high interest cost and high depreciation cost.
 - viii. *Wages*: It is submitted that the wages paid to the employees have substantially increased in 2010-11 over the previous year.
 - ix. *Number of Employees*: there is no decline in the number of persons employed by the Applicant.
 - x. *Productivity*: The productivity of the Applicant has increased.
- There is no causal link between the injury, if any to the domestic industry and alleged dumped imports. It is submitted that injury, if any has been suffered by the Applicant on account of inter-se competition between the two domestic producers.

Submissions made on behalf of M/s PT. Masari Dwisepakat Fiber, Indonesia and M/s PT. Sumatera Prima Fibre board (SPF), Indonesia

- The applicant Industry has withheld information relating to captive consumption of the product under consideration. It is mainly into the business of high price subject goods which required plain fiber boards as raw material.
- After 15 months of commercial production, no industry can claim to be in its nascent stage and claim material retardation.

- The applicants have not substantiated how the present case falls within the scope of material retardation. There is no basis to claim also that the industry is still in its nascent stage. The applicant is an already established industry in India. The present case is a case in which the applicant's production line is being supplemented with another line with a different thickness. As an established industry player in this market, the applicants have been benefited by their current setup as they already possess some of the common equipment, employees, expertise, existing distribution network and systems, existing customer bases, and/or other components, raw material suppliers needed to produce and distribute the fiber board below 6 mm and are able to leverage these factors for purposes of their additional production line operations. In view of the above, and specific language of the initiation notification, we are of the considered opinion that present case is not a case seeking protection for retardation of establishment of an industry in India due to dumped imports and injury as a result thereof. It is settled jurisprudence that a case of material retardation can be made only and only when production has not begun or the industry has not yet achieved its commercial volumes.
- The initiation notification is like a show cause notice and has not put any party to notice that the claim of applicants for material retardation has been accepted by the Authority. In the absence of an initiation for material retardation, we are presently not offering any further comments on material retardation.
- The period of investigation and injury examination period fixed by the Authority is erroneous and unfair. In the instant case the period of Investigation is April 2010 – June 2011 i.e., of 15 months. The applicant is only new entrant in the market and has only completed 2 months in April 2010. Therefore, the determination of dumping and injury tends to be skewed as the variable costs and fixed costs would be very high for the applicant and no proper or comprehensive analysis can be undertaken.
- As per the application there is only one more producer (Green Ply) of the subject goods in India and such new producer also started producing the subject goods from December 2010. The applicant has only provided the production figures in the non-confidential version of the application and all the other injury related information is missing. The Designated Authority may also ascertain such factual claims made by the applicants from other authentic sources.
- Injury parameters: In this connection we wish to point out following:
 - a. Figures of depreciation, interest, and wages are negative.
 - b. Productivity per employee and per day has also increased.
 - c. In Proforma IV-A, interest shown shows sudden increase from base year. This sudden increase may be one of the reasons why the Applicants are not doing well.
 - d. Applicant has not shown captive consumption in Proforma IV A.
 - e. Average inventory has decreased in comparison to base year, when they have started their production.

- f. When we compare inventory by dividing by per day sale it is seen that the inventory comes down significantly.
 - g. Information relating to GFA, NFA, Working Capital and Price underselling not provided.
 - h. As per the revised Proforma IV-A Applicant has performed well as compared to base year 2009-10.
 - i. Applicant is mainly selling value added products which is costly as compared to plain MDF. They are making door skin, MDF coated boards, melamine boards out of this line and exterior grade MDF. Therefore, we would request the Authority to kindly consider the issue to captive consumption while computing the cost and NIP of the Applicant and also kindly provide the non-confidential version of calculation sheet for our effective comments.
- The imports from Indonesia remained more or less same throughout the injury investigation period. As shown in the table that the value increased 21.70% during 2010-11 whereas the volume increased by 20%. In the Annualized figures the value of Indonesian imports increased by around 20%, whereas volume increased only by 12% as compared to 2009-10.

Submissions on behalf of M/s. Magna-Foremost SDN and M/s. Masonite Components, Ireland

- The claims of material retardation and material injury are mutually exclusive: where a domestic industry is in fact already established, it cannot claim material retardation. The fact that the Applicant accounts for approximately 87% of total Indian production of the subject product strongly evidences that, in this case, the domestic industry is already established. The Applicant – which admits to having commenced production in February 2010, 21 months before this investigation was initiated – can hardly be considered to be not yet established, making any claim of material retardation improper in this case.

Submissions made by the domestic industry

The submissions made by the domestic industry, in brief, are as follows:

- In respect of contention that DI is forced to sell the product in the market below than the prices projected in the project report; it is submitted that mere fact that the export price was comparable to some other “international” price does not mean anything. In fact, there is nothing like “international price”. Even two transaction prices need not be the same. Prices to two customers can differ. Under this economic reality, the exporter is projecting one of the “international price”. The selling price of the domestic industry, in fact, is required to be compared with the target price in order to determine price underselling. It is universally accepted principle to determine price underselling by considering target prices and actual selling price.

- As regards the contention that even with 17 months of commercial production, domestic industry claims to be in the nascent stage and that the claim of material retardation in the case when selling price has been realized above the international prices is unfound and untenable; it is submitted that the Authority is required to assess injury to the domestic industry by comparing domestic industry performance during investigation period with preceding years. By practice, the Authority is considering preceding three years and compares the performance in period of investigation with preceding three years. Thus, typically, the Authority considers period of investigation and preceding three years for injury assessment. In the present case, however, the Applicant does not have actual operational history for period of investigation and preceding three years. This, itself, establishes that the case of the Applicant is that of nascent industry. Notwithstanding the Applicant has established injury on both ways –
 - By considering its actual performance for the period of its existence;
 - By comparing its performance with the projected/target performance

Both clearly establish that the domestic industry has suffered injury.

- In respect of the contention that rate of increase in imports from a year prior to the POI was only 1%, whereas rate of increase in demand was 16%, whereas the level of production by the DI was miniscule; it is submitted that the very fact that the production by the domestic industry was miniscule despite significant capacities and demand in the market itself establishes that the domestic industry is not able to produce to the extent of its capacities, establishes injury suffered by the domestic industry. In the facts and circumstances of an industry like present, where commercial production commenced in February, 2010 and where demand for the product is significantly high and domestic industry has significant capacities, inability of the domestic industry to reach the target levels of capacity utilization itself establishes that the domestic industry is being prevented from commercializing production to the targeted extent. Establishment of an industry must be seen with reference to the way it was projected to establish. The domestic industry projected that its capacity utilization shall be *** %, *** % and *** % in first, second and third year of its operation respectively. Thus, it is clear that the domestic industry would be in establishment unless it reaches *** % of its capacity utilization. As opposed to this target levels, the capacity utilization of the domestic industry have been woefully low. The Authority should consider the capacity utilization of the exporter and compare the same with the capacity utilization of the domestic industry. Information on month wise production and sale of the exporters may be called for and be compared with the capacity utilization levels achieved by the exporters. If, it is found that the capacity utilization achieved by some of the exporters are far higher than the capacity utilization achieved by the domestic industry, it must be explained by the exporters why capacity utilization of domestic industry is so low. If the cause for the same is presence of dumped imports in the market, it must be concluded that dumping of the product is causing injury to the domestic industry.

- In respect of the contention that Proforma IV-A shows that the production, capacity utilization, market share and sales of the DI have increased in the POI as compared to the previous year; it is submitted that the argument lacks appreciation of the way a domestic industry commencing production from a new production facility shall perform. Having commenced commercial production in February, 2010, it is obvious that the domestic industry will make efforts to increase its production and sale over the period. It is obvious that the domestic industry would not achieve 100% capacity utilization on day one. The capacity utilization would gradually improve. Thus, increase in production and sale over the injury period is clearly reflective of the efforts of the domestic industry to get established in the market. However, the capacity utilization of the domestic industry was substantially below the levels it had projected. If dumping is not the cause of injury to the industry to the domestic industry, then why domestic industry is faced with such adverse capacity utilization as compared to the levels projected. If the argument of the interested parties is that Applicant is not able to run the plant at this level, it is submitted that Applicant has in fact run the plant at high levels. However, such levels could not be maintained for long period, as the same resulted in huge piling up of inventories and Applicant thereafter had to curtail the production. It would also be seen from the injury information that the Applicant had to reduce its selling price immediately after commencement of sales in the market on finding that it was unable to dispose off the product in the market. Further, after reducing the prices, the Applicant had to increase discounts etc. in order to push the sales. The selling price of the domestic industry declined immediately after start up of production and sale. Further, the net sales realization of the domestic industry declined over the period. This decline in net sales realization and reduction in selling price was despite lower prices offered by the domestic industry. Further, appreciating that the Applicant had somewhat higher fixed cost due to initial start up operation, the Applicant has determined its cost structures by adopting higher level of optimum capacity utilization, whereby the Applicant would have posted profits in its first quarter of operations, but suffered financial losses towards the end of the investigation period. In other words, if start up cost are excluded, the Applicant had started operation with profitable prices; but went into losses because of dumping of the product in the country. From a comparison of net sales realization of the domestic industry and sales volumes, it would be seen that as the domestic industry reduced its realization, its sales volume improved. In other words, the domestic industry had to compromise on selling price in order to get some volumes. From a comparison of selling prices of the domestic industry and weighted average landed price of imports from subject countries, it would be seen that –
 - When the domestic industry offered its product in the market, the price difference between the domestic product and imported product was quite significant.
 - The domestic industry reduced the prices in order to somewhat bridge the gap between domestic and imported product. However, in view of very significant price difference between the domestic product and imported product, the volume of imports remained significant and did not decline.

- The import volumes should have declined substantially after commencement of production by the domestic industry. Given that the domestic industry product was an *"import substitutive product"*, it was a legitimate expectation of the domestic industry that imports of such a product would substantially fall as the domestic production ramps up production and takes over the demand in the market.
- In respect of the contention relating to the cost of production in India; it is submitted the Applicant has set up the latest plant in this industry and is having machines comparable to the machines available with the foreign producers. Given comparable technology and plant & equipment, it is impossible that the conversion cost of the domestic industry would be substantially different (and higher) as compared with the conversion costs of the foreign producers. Any such claim implies that the foreign producers have manipulated their data and have suppressed true conversion cost. There are limited machine suppliers in this trade, while minor variation might come from country to country in view of difference in price factors, significant difference in conversion costs are impossible. It only implies that facts are being suppressed from or misrepresented to the Authority. The machine deployed by the Applicant at the least can be considered more efficient than the other producers in the subjected countries. There is no basis for the presumption that the fixed costs of the domestic industry are higher than the exporters. While some elements of fixed cost on per CBM basis may be higher due to start up operations, if the costs are considered at reasonable level of capacity utilization, no significant difference shall be found. Applicant submits that the foreign producers are producing and selling a number of products. It is quite likely that they have resorted to apportionment of expenses in such a manner that the costs are understated for the product under consideration and expenses are diverted to other product. It is pointed out in this regard that there is no mandatory requirement under accounting principles to maintain separate information for different products. It is, therefore, very easy for the foreign producers to manipulate their cost data and report lower cost of production. Thus, it is not a question of inefficiencies but a question of manipulated/fabricated data being provided by the exporters to the Authority.
- In respect of the contention relating to Selling prices of domestic industry vis a vis landed price of the imports ; it is submitted that the domestic industry started its journey by pricing its product which were just above the optimum cost of production where it would have fetched some nominal profit, albeit below reasonable levels. Despite so realistic and reasonable price offered by the domestic industry, so significant was the price difference between domestic industry price and import price that the domestic industry had to immediately take a corrective action and reduce the price, despite which the sales volumes were not moving to the levels the domestic industry has production capacities. Therefore, the domestic industry was further forced to offer increasing discounts in order to somehow attract customers to buy domestic product. However, since the price difference still remains significant, the domestic industry could not eventually achieve optimum levels of production.

- In respect of causal link; it is submitted that the injury to the domestic industry is on account of dumped imports as significant price difference between imported and domestic product has prevented the domestic industry from selling its product to the extent of production capacities, which led to reduction in price and low level of sales volumes, reduction in net sales realization, significant difference between non injurious price and landed price of imports on one hand and inability of the domestic industry to increase its production to the extent of target levels on the other hand, significant loss of production man hours, increase in inventories with rising production, decline in production due to rising inventories, collectively and cumulatively establishes that the domestic industry is suffering injury as a result of dumped imports.
- In respect of Public Interest; it is submitted that the present claim of public interest has been made by an exporter or a foreign producer. Suffice it would be to say that the exporter should not be concerned with public interest in India. The Applicant is a part of a responsible and highly respected business house in the Country, whose promoters have been instrumental in setting up and running a 500 bed super specialty hospital in Delhi for the general welfare of the public at large. The group has significant presence in the Country and is well aware about the public interest in India. The Applicant is in fact in a position to provide the product at reasonable price in the country. In any case, the exporter has not established how the anti-dumping duty imposition shall not be in public interest. Since the entire argument is a mere conjecture on the part of exporter, the authority may kindly reject the argument. It is also submitted that the word public interest is a much wider terms and implies interests of producers, consumers and public at large. In any case, it does not mean importers interest. The imposition of duty shall be in public interest, as it would help the domestic industry fully establish itself in the country, which is in the interests of the consumers as well. The consumers shall not be left at the mercy of foreign producers.
- In respect of the contention that the Applicant has withheld information relating to captive consumption of the PUC; it is submitted that sufficient information is already on record. Should the Authority require any further information, the Applicant will provide the same.
- In respect of the contention that substantial imports are reported by the Applicant and other supporting producer in India and entire analysis has been undertaken without taking into account such vital facts; it is submitted that there is no substance in the argument as the imports by the Applicant are not substantial. The imports by the Applicant were *** cbm in a market size of 68,273 cbm and against a capacity of 50,000 cbm.
- In respect of the contention relating to "materially retardation of the establishment of any industry in India; it is submitted that the understanding with WTO members with regard to material retardation makes the meaning of material retardation very clear. Even in a situation where the product is already being produced, the Authority may record a finding of material retardation. Further, material retardation does not mean that company should not have commenced commercial production. Contrary to the arguments of the interested

party, in fact, the jurisprudence emerging on the subject is very clear, i.e., the Authority must examine injury information of the domestic industry to the extent it exists. Proposition advanced by the interested party, in fact, implies that only a company not commencing commercial production can bring application. This would in fact imply that an anti-dumping duty may be imposed even when a company may not have commenced commercial production. Notwithstanding above, the information filed by the Applicant domestic industry in any case clearly establishes that its performance was adverse and deteriorated over the period. The Applicant relies upon the application and the past determinations by the Authority. It has set up manufacturing facilities for production of the product under consideration in the country. There is no other producer of the product in the country who was producing the product under consideration in the country before the Applicant commenced commercial production. The previous investigation by the Authority included all kinds of medium density fiberboard at the stage of initiation. The interested parties heavily argued for exclusion of thin boards on the grounds that the same was not being produced in India. The Authority having satisfied itself that there was no production of thin board in India restricted the scope of the product under consideration to 6mm and above. Further, the Applicant has provided information with regard to its injury to the extent it has produced and sold over the injury period. The Authority may examine the performance of the domestic industry to the extent of its existence.

- The contention that the Applicant is already an established industry in India and that their production line is only being supplemented with another line with a different thickness is without basis as the Applicant did not have any production line for production and sale of fiberboard before the present set up. There was no "current setup" of the company. The Applicant intended to setup three production lines – (i) Thin Fiber Board line, (ii) Thick Fiber Board Line (the same is still being setup) and; (iii) Particle Board Line. Further the Applicant has set up facilities for other downstream products such as Floor Tiles, Door Skin, Laminated Flooring, Direct Printed Board, Insulation & Hard Board, Flush Doors, Ply Boards, Veneer Coated Board, Furniture & Fixture Comp., Composite Board, Decorative Laminated Board, Block Board, UV Coated Board, and Laminated Particle & MDF Boards. Assuming that the company was already an "existing" company and efforts were being made to supplement the existing setup with addition of a production line of a product not hitherto produced in the Country, the same would still fall in the category of material retardation to the establishment of the domestic industry, so long as the product under consideration was not being produced earlier and fresh production facilities have been setup for production of product under consideration.
- In respect of contention relating to data collection; it is really amazing that an interested party is suggesting consideration of 2010-11 as an investigation period in the present case. Firstly, the case was initiated in November 2011 and therefore investigation period of 2010-11 would have implied a stale period for the present purpose. Secondly, period longer than as could have been considered can certainly not prejudice the interests of any party. If the period 2010-11 would have been appropriate for the present purpose, certainly, addition of subsequent quarter is no less inappropriate.

- With regard to the argument that variable cost and fixed cost would be high for the Applicant, the Applicant has provided information with regard to cost of production assessed by them at the time of setting up of the plant. These costs are not at low level of production. These costs are at much higher level of capacity utilization. In any case, the mere fact that the cost of production of the Applicant may be higher is insufficient to deprive the Applicant relief under the law. It only implies that there may be another factor of injury, i.e., start up operation. Further, the law requires/provides for adjustment on account of such "other factors". The law does not provide that a negative finding of injury must be recorded, the moment the Authority comes to a conclusion that there is some other factor as well causing injury to the domestic industry. Evidently, the interested parties are trying to interpret "a" causal link as "the" causal link.
- As regards the contention that only production figures of the other Indian producer (green ply) has been given, all the other injury related figures are missing; the Applicant has contended that there is no legal requirement to provide injury information in respect of "other domestic producers". Applicant has provided injury information in respect of "domestic industry". Applicant has claimed that it constitutes "domestic industry" and has accordingly provided information in respect of its own operations. Applicant has not claimed that Applicant and Greenply constitute domestic industry. The rules require determination of injury in respect of domestic industry and therefore information concerning Greenply with regard to injury to the domestic industry becomes wholly irrelevant. It is, however, pointed out that Greenply has not even fully commenced production of the product under consideration in view of dumping of the product.
- As regards the contention relating to injury; there is no such negative figure. Improvement in productivity does not imply that the domestic industry has not suffered injury. The present petition is in respect of material retardation. As the Applicant is augmenting its production after commencing the same, it is obvious that all business expenses would show an initial growth expected from any company commencing commercial production. As regards captive consumption, relevant information is available to the Authority. A comparison of inventory with production and sale clearly shows that-
 - i. The company was producing much below the projected levels.
 - ii. Inventories were rising despite such low level of production.
 - iii. The company had to reduce/curtail production despite low levels, in order to contain/restrict inventories.
 - iv. Rise in inventories along with production, fall in inventories along with restriction on production clearly establishes that the domestic industry has been regulating its production in order to contain inventory levels. Applicant submits that the man hour worked and available itself will clearly establish that the domestic industry has been forced to substantially keep the plant idle because of dumping of the product in the country.

- As regards Information regarding GFA, NFA and price underselling not provided; the relevant information is available with the authority. Under the rules, the authority is required to determine injury considering return on investment and not considering GFA and NFA. Further, price underselling is required to determine by the authority and is not required to be determined by the Applicant. The prescribed format nowhere requires this information to be provided by the Applicant.
- As regards the contention that imports from Indonesia remained more or less same through the injury period; Low volume of imports from an individual country does not imply that the same has not caused injury. It is nobody's argument that volume of imports from Indonesia were below *de-minimis* or the dumping margin in respect of Indonesia is *de-minimis* or conditions of competition between Indonesia and other subject countries were materially different so as not to cumulate the injury to the domestic industry. Whereas injury to the domestic industry is required to be cumulatively assessed, the fact that the volume of imports from particular company has remained relatively flat becomes irrelevant.
- Annexure-I to the Rules provides, *inter-alia*, that due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability. It would be seen that mere existence of a factor resulting in difference is insufficient. Such factor must have been recognized in the commerce as a factor that affects the prices. Such factor must have been consistently applied by the producers. For example, if the foreign producers have sold boards of different thickness at prices which did not consider thickness as a parameter, it may not be necessary to determine separate normal value, export price and dumping margin for boards having different thickness. The Authority may therefore first examine the questionnaire responses and the import data and ascertain whether at all the foreign producers have consistently followed some parameters for fixing the prices. If not, any such parameter can be ignored at least for the purpose of the preliminary findings.

Examination by the Authority

- 94 The Authority has taken note of various submissions of the interested parties on injury to the domestic industry and has analyzed injury to the domestic industry considering the facts available on record and applicable law as follows. The submissions made by the interested parties have been considered to the extent found pertinent and have been examined as follows and in the relevant sections of these findings:
- 95 As regards the contention that initiation notification does not mention 'material retardation' as reflective of injury to the domestic industry; the Authority notes the contention is fallacious and misleading as para 26 of the initiation notification reads as follows:

"In view of the above, the domestic industry has apparently suffered material retardation of its establishment. Besides, the domestic industry has also

apparently suffered material injury to the extent of its existence. The product under consideration is being exported from the subject countries below associated normal value, resulting in dumping of the product. The domestic industry has suffered 'Injury', which has apparently been apparently caused by the dumped imports."

- 96 As regards the contention that the export price was comparable to the international price does not mean that the subject goods have not been dumped. In fact, a perusal of the exporters' questionnaires responses show that the subject goods have been dumped into India.
- 97 As regards the contention that even after 17 months of commercial production, the domestic industry claims to be in the nascent stage and that the claim of material retardation in the case when selling price has been realized above the international prices is unfounded; the Authority notes that the domestic industry commenced its production of the subject goods in February 2010 only and hence the claim is justified. 'Injury' even after 17 months of commercial production only prove the claim of the domestic industry as the same can no more be attributed to teething troubles and start up operations. The Authority notes that the domestic industry has been adversely impacted when considering its actual performance for the period of its existence as well while comparing its performance with the projected/target performance.
- 98 As regards the contention that the rate of increase in the imports was only 1%, whereas the rate of increase in demand was 16%; the Authority notes that the same needs to be examined in the backdrop that there was no domestic producer of the subject goods in India till very recently and hence the entire demand was being met by the imports. The very existence of domestic producers in the market is likely to impact the market share as now the users would have the option to procure the subject goods through the indigenous sources as well. The domestic industry has installed significant capacities but it has not been able to reach the target levels of capacity utilization; as a result thereof its capacity utilization has been dismally low.
- 99 As regards the contention that Proforma IV-A shows that the production, capacity utilization, market share and sales of the domestic industry have increased in the POI as compared to the previous year; the Authority notes that the performance of the domestic industry is expected to improve considering that it has recently commenced production of the subject goods. Any producer is expected to take steps to improve its performance as regards its production and sales over the period. As a result thereof, the capacity utilization gradually improves. Thus, the increase in production and sales over the injury period is clearly reflective of the efforts made by the domestic industry to establish itself in the market. However, its capacity utilization has been significantly below the projected levels.
- 100 As regards the contention pertaining to cost of production in India; it is noted that the Applicant has set up its plant recently and has claimed to have installed machines comparable to the machines available with the foreign producers. It has been contended by them that considering comparable technology, plant and equipment, the conversion costs of the domestic industry would not be significantly higher as compared to the conversion costs of

foreign producers. It has been further contended that there are limited machine suppliers in this trade and that while minor variation might be there due to difference in price factors but significant difference in conversion costs is not possible. The Authority finds merit in the domestic industry's claim that there could be higher costs due to start up operations because of some elements of fixed cost on per CBM basis but if these costs are considered at reasonable level of capacity utilization, no significant difference would be found.

- 101 As regards the issue of Public Interest; the interested party has not substantiated as to how imposition of the anti-dumping duty in the instant matter would not be in the public interest. The phrase 'public interest' would reflect the interests of all the stake holders such as producers, users/consumers and public at large. The Authority further notes that the purpose of the anti-dumping duties, in general, is to eliminate 'injury' caused to the domestic industry by the unfair trade practices of 'dumping' so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of the anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries/territory in any way, and, therefore, would not affect the availability of the subject goods to the consumers. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury caused to the domestic industry. On the contrary, imposition of the anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by the dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.
- 102 As regards the contention that substantial imports have been made by the Applicant domestic industry; the Authority notes the contention is devoid of any merit as the imports effected by the Applicant were to the extent of *** cbm, which cannot be considered as significant *vis a vis* the market size of 68,273 cbm and the domestic industry's installed capacity of 50,000 cbm.
- 103 As regards the contention relating to 'material retardation of the establishment of any industry in India'; the Authority notes that there could be a situation where although the product is being produced, yet a finding of material retardation could be recorded as 'material retardation' does not imply that there should not have been any production of the goods in question. It is seen that the information filed by the Applicant domestic industry shows that its performance has deteriorated over the period. The Rules & Regulations are silent on the evaluation of material retardation of the establishment of a domestic industry. In this case, the Applicant has made efforts to establish its industry in respect of the subject goods in India, as would be apparent from the fact that the Plant has been installed and considerable investment has taken place; but before viable commercial production could take place, dumped imports have caused the installed plant to be largely unutilized. In the circumstances, the Authority notes 'injury' to the domestic industry has been caused

whether it is treated as established industry or merely 'nascent'. Huge financial losses resulting in the non-utilization of domestic industry's plant and manpower are considered as material, whether related to an established industry or an existing industry which was in an infant or nascent state. In the latter instance, the dumped imports have 'clearly materially retarded the development of a domestic industry, established or otherwise, by causing delays in the adoption of decisions that would have occurred in a fair market environment'.

- 104 As regards the contention that material retardation and materials injury cannot co-exist; the Authority does not concur with the same. An interesting illustration of the effect of dumped imports can be found in the EU Japanese DRAMs case (Regulation (EEC) 165/90, OJ L20, 25.1.90). In this case, the volume of imports, the prices at which they were offered, the condition of the domestic industry, led the EU Authorities to determine the effect of the dumped imports had caused injury to the domestic industry. The facts of the case were considered to support a finding both of material injury and of injury in the form of material retardation.
- 105 As regards the contention that the Applicant is already an established industry in India and that their production line is only being supplemented with another line with a different thickness; the Authority notes that the same is factually incorrect as the Applicant did not have any production line for production and sale of fiberboard before the present set up.
- 106 As regards the contention relating to data collection; the Authority notes that the present case was initiated on 11th November 2011; thus, period of investigation as 2010-11 period would have been relatively old. Besides, a longer period would enable the Authority to take on board relatively recent data for determination of alleged dumping and consequent injury.
- 107 As regards the contention that only production figures of the other Indian producer (M/s Green ply) has been given and all the other injury related figures are missing; the Authority notes that M/s Greenply had not even fully commenced production of the product under consideration.
- 108 As regards the contention relating to injury; the Authority notes that the application in the instant matter is essentially in respect of material retardation. Besides, it is only expected that the Applicant having augmented its production would initially show a positive growth. A comparison of inventory with production and sales clearly shows that the company was producing much below the projected levels. Its inventories were rising despite such low level of production; whereby it had to reduce/curtail production despite low levels, in order to contain/restrict inventories. The domestic industry has claimed that it has been regulating its production in order to contain inventory levels because of the presence of dumped imports.
- 109 As regards the contention that imports from Indonesia remained more or less the same through the injury period; the Authority notes that similar volume of imports from Indonesia

would not mean that these would not caused injury to the domestic industry. The volume of imports from Indonesia is above *de-minimis* and the dumping margins are significant.

- 110 Other injury related issues such as pertaining to cost of production, capacity utilisation by the applicant company, market share, capacity *vis a vis* demand, relationship between the sales price of the applicant and the import prices, price undercutting or price underselling, profitability, productivity, increase in cost of raw materials and wages, absence of causal link etc have been examined appropriately in the relevant sections of these findings.

Cumulative assessment

- 111 Annexure II para (iii) of the AD Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that: -
- a. the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent (or more) of the import of like article or where the export of individual countries is less than three percent, the imports collectively accounts for more than seven percent of the import of like article and
 - b. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.
- 112 The Authority notes that:-
- The subject goods are being dumped into India from a number of countries.
 - The margins of dumping from each of the subject countries are more than the *de-minimis* limits prescribed;
 - The volume of imports from each of the subject countries is more than the negligible limits prescribed;
 - Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate as the exports from the subject countries directly compete with the like articles offered by the domestic industry in the Indian market, which is evident from the following:-
- a. The products manufactured by the producers from the subject countries and the products manufactured by the Applicant have comparable properties. In other words, goods supplied by various subject countries and by the domestic industry are *inter-se* like articles.
 - b. There are common parties who are resorting to use of the imported subject goods from various sources and the goods produced by the domestic industry.

Both, the imported and the domestic subject goods, are being used interchangeably and there is direct competition between the domestic product & imported products and *inter-se* amongst imported products.

- c. The exporters from the subject countries and domestic industry have sold the product in the same periods to the same set of customers. The sales channels are comparable.
- d. The volume of imports from each of the subject countries is significant.

113 In view of the above, the Authority considers that it would be appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from exports of the subject goods from the subject countries

114 Annexure-II of the AD Rules provides for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

115 As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows: "The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

116 The Applicant domestic industry has claimed that dumping of the product in India is materially retarding the establishment of the domestic industry. It has commenced commercial production in February 2010 and thus does not have operational history for more than three years. Therefore, the economic analysis of the performance of the domestic industry for the purpose of examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned has been carried out for the period during which the petitioner has produced and sold the product. The analysis has been done first on an annual basis and thereafter by considering performance of domestic industry on a quarter by quarter basis. However, for the purpose of import volumes and market share, the Authority has considered the investigation period and the preceding three years.

Volume Effect of Dumped Imports and Impact on Domestic Industry

Demand/consumption in India

- 117 Demand of the product in the Country has been assessed as the sum of domestic sales of the domestic producers and imports from all sources.

Annual Analysis

Particulars	Unit of Measurement	2007-08	2008-09	2009-10	April'10-June'11 (POI)	Annualized (POI)
Sales of Domestic Industry	CBM	-	-	334	21,297	17,038
Sales of Other Indian Producer	CBM	-	-	-	4,030	3,224
Subject Countries imports	CBM	10,936	32,223	44,009	58,504	46,803
Other Countries imports	CBM	975	11,704	8,618	1,510	1,208
Demand in India	CBM	11,911	43,927	52,961	85,341	68,273

Quarterly Analysis

Demand	UOM	Feb'10-March'10	April'10-June'10	July'10-Sep'10	Oct'10-Dec'10	Jan'11-March'11	April'11-June'11
Sales of Domestic Industry	CBM	***	***	***	***	***	***
Sales of Other Indian Producer	CBM	-	-	-	***	***	***
Subject Countries imports	CBM	8,259	10,486	8,807	10,284	14,985	13,942

Other Countries imports	CBM	959	306	236	260	382	326
Demand in India	CBM	9,552	13,016	12,870	15,852	21,161	22,443

- 118 It is noted that the demand for the product under consideration in India has increased significantly over the period.

Import Volume from Subject Countries

- 119 The volume of imports of the subject goods from the subject countries and other countries have been examined based on the transaction-wise imports data as obtained by the domestic industry from IBIS. It is noted that the product under consideration does not have a dedicated Customs classification code and therefore summarized Customs data (as released by DGCI&S) has not been relied upon. Thus, individual transaction wise data, as made available by the secondary source (IBIS), has been relied upon. Therefore, the imports volume reported by the IBIS has been considered for volume analysis. Volume of imports of the subject goods have been as follows:

Annual Analysis

Imports Volume	UOM	2007-08	2008-09	2009-10	April'10- June'11 (POI)	Annualized (POI)
Indonesia	CBM	-	39	6,957	10,177	8,142
Malaysia	CBM	2,943	20,244	22,783	22,052	17,642
Sri Lanka	CBM	7,934	11,171	13,270	20,410	16,328
China PR	CBM	59	769	999	5,865	4,692
Total Subject Countries	CBM	10,936	32,223	44,009	58,504	46,803
Other Country	CBM	975	11,704	8,618	1,510	1,208
Total Imports	CBM	11,911	43,927	52,627	60,014	48,011

Quarterly Analysis

Import Volume	UOM	Feb'10- March'10	April'10- June'10	July'10- Sep'10	Oct'10- Dec'10	Jan'11- March'11	April'11- June'11
Indone	CBM	3,553	3,690	1,984	1,130	1,568	1,805

sia							
Malay sia	CBM	2,417	3,873	4,221	3,643	6,131	4,184
Sri Lanka	CBM	2,093	2,663	2,334	4,371	5,332	5,710
China	CBM	196	259	269	1,140	1,955	2,243
Total Subject Countries	CBM	8,259	10,486	8,807	10,284	14,985	13,942
Other Country	CBM	959	306	236	260	382	326
Total Imports	CBM	9,218	10,792	9,043	10,543	15,368	14,268

120 The Authority notes that

- Imports from the subject countries have increased significantly. Imports have increased, when considered over the injury period or on quarterly basis within the investigation period;
- Given that the domestic industry has commenced commercial production in February 2010, the import volumes should have declined with the commencement of the production by the domestic industry. But no decline in the volume of imports from the subject countries was noted except in the quarter July 2010 – September 2010 over the previous quarter. Further, in the subsequent quarter the volume increased, instead of showing a natural decline and are now much higher than before;
- The increase in the imports is quite significant. Whereas the volume of imports in 2007-08 was 11,911 cbm, the volume of imports in April-June, 2011 quarter itself was 14,268 cbm. On an overall basis, the increase in volume of imports was more than 300% over the injury period;

Market share in demand

121 The table given below analyses the trends in the market share of imports *vis-à-vis* the share of the domestic industry on an annual basis and quarterly basis:

Annual Analysis

Particulars	UOM	2007-08	2008-09	2009-10	April'10- June'11
-------------	-----	---------	---------	---------	----------------------

					(POI)
Domestic Industry	%	-	-	0.63	24.96
Other Indian Producer	%	-	-	-	4.72
Total Subject Countries	%	91.82	73.36	83.10	68.55
Other Country	%	8.18	26.64	16.27	1.77

Quarterly Analysis

Market Share in Demand	UOM	Feb'10-March'10	April'10-June'10	July'10-Sep'10	Oct'10-Dec'10	Jan'11-March'11	April'11-June'11
Domestic Industry	%	***	***	***	***	***	***
Other Indian Producer	%	***	***	***	***	***	***
Subject Countries	%	86.46	77.99	66.22	64.87	73.81	62.12
Other Country	%	10.04	2.28	1.78	1.64	1.88	1.45

- 122 The Authority notes that the domestic industry has commenced the commercial production of the subject goods in the year 2009-10. During this period the domestic industry functioned for only 2 months. The year 2010-11 was the first year of commercial production of the petitioner company. The quarter wise analysis of the share of the subject countries indicates that while the share of imports of the other countries has declined significantly, no decline in the volume of imports for the subject countries has been noted. Further, the share of domestic industry in the total demand has fluctuated on a quarter to quarter basis.

Production, sales, capacity and capacity utilization

- 123 The production, sales, capacity and capacity utilization of the domestic industry has been analyzed as follows:

Annual Analysis

	UOM	2009-10	April'10- June'11 (POI)	Annualized (POI)
Total Production	CBM	***	***	***
Below 6mm	CBM	2,262	22,980	18,384
Above 6mm	CBM	-	***	***
Sales volume	CBM	334	21,297	17,038
Captive consumption	CBM	***	***	***
Capacity	CBM	8,333	62,500	50,000
Capacity utilization (@@)	%	***	***	***

@@ Based on total production

Quarterly Analysis

	UOM	Feb'10- March'10	April'10- June'10	July'10- Sep'10	Oct'10- Dec'10	Jan'11- March'11	April'11- June'11
Production	CBM	***	***	***	***	***	***
Below 6mm	CBM	***	***	***	***	***	***
Above 6mm	CBM	***	***	***	***	***	***
Sales volume	CBM	***	***	***	***	***	***
Captive consumption	CBM	***	***	***	***	***	***
Capacity	CBM	***	***	***	***	***	***
Capacity utilization	%	***	***	***	***	***	***

- 124 The above analysis shows that the production, sales and capacity utilization of the domestic industry shows improvement. However, it is noted that the domestic industry had projected to achieve ****% capacity utilization in the first year of its operation and ***% in the second

year operation; but as against this projected capacity utilization, the capacity utilization of the domestic industry has remained significantly low. Thus, the domestic industry has not been able to utilize production capacities to the extent it could have, in the absence of dumping.

PRICE EFFECT OF THE DUMPED IMPORTS ON THE DOMESTIC INDUSTRY

- 125 With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. Annual movement of the import prices has been analyzed as follows:

Rs/cbm

CIF Import Price	2007-08	2008-09	2009-10	April'10-June'
Indonesia	-	12,831	11,104	11,362
Malaysia	10,980	11,609	10,726	11,797
Sri Lanka	12,352	13,236	11,929	12,616
China	7,488	10,234	11,307	11,198
Total Subject Countries	11,956	12,142	11,162	11,947
Other Countries	12,785	12,378	11,434	13,619
Total Imports	12,024	12,205	11,206	11,989

- 126 Quarter wise movement of the import prices has been analyzed as follows:

CIF Import Price	Feb'10-March'10	April'10-June'10	July'10-Sep'10	Oct'10-Dec'10	Jan'11-March'11	April'11-June'11
Total Subject Countries	11,572	11,764	11,847	11,818	11,934	12,256
Other Countries	12,288	12,802	14,993	14,497	13,264	13,108
Total Imports	11,647	11,794	11,929	11,884	11,967	12,276

- 127 The Authority notes from the above that there is no noticeable change in the CIF price of imports from the subject countries during the injury period and the period of investigation. Further, the CIF price of imports from the other countries was noted to be higher than the CIF price from the subject countries. In the second and third quarter of the year 2010-11, the CIF import price from the subject countries was lower than the subject countries by as much as 21%. The Authority further notes that CIF prices were significantly lower than the projected sales price as project report of the domestic industry.
- 128 As noted above, no changes in the CIF prices of imports from the subject countries have been noted during the injury period and the POI. The Authority has undertaken an analysis of the trends in the prices of raw material for the subject goods during the relevant period. In this context, the Authority notes that the wood, glue cost and other chemicals are important elements in the cost of production. The analysis of the data submitted by the domestic industry and the other interested parties, shows that the element of wood, glue cost and other elements in the total cost of production is more than 50%. An analysis of the trends in the cost of production of the domestic industry indicates that there has been a significant increase in the prices of wood over the prices as projected in the project report. With regards to the movements in the prices of raw materials i.e. wood in respect of other exporters from the subject countries, the Authority notes that the information with regards to trends in the prices of wood, as available at the website of one of the co-operating exporters M/s.Evergreen indicates the following trends:

Indexed	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Wood price indexed *	136	132	121	148	160
Indexed wood prices	100	97	89	109	118

*with year 2005 as base year

- 129 The Authority notes from the above that there has been an increase in the price of wood during the injury period and the POI by as much as 18%. However, this is not reflected in the changes in the CIF price of imports from the subject countries. The trends, as above, reflects that the exporters from the subject countries have absorbed the increase in the cost of production, as the same is not reflected in the changes in the CIF export prices.
- 130 The Authority further notes that apart from wood, glue is an important element in the production of the subject goods. Glue is manufactured by using a combination of different chemicals, most important of them being Paraffin Wax, Urea, Melamine and Methanol. An analysis of trends in the import prices of these raw materials, as summarized below also indicates that there has been a substantial increase in the rates of some of these raw materials.

	Unit	07-08	Indexed	April'10- June'11(POI)	Indexed	% increas
--	------	-------	---------	---------------------------	---------	--------------

)		e
Input price movement						
Paraffin Wax	Rs.Kg	40.26	100	57.21	142	42
Urea / (Carbamie)	Rs.Kg	12.32	100	13.24	107	7
Melamine	Rs.Kg	50.56	100	67.18	133	33
Methanol	Rs.Kg	36.12	100	40.61	112	12

- 131 It is noted that there has been a significant increase in the input costs for glue and other major inputs. However, no upward trends have been noted in the CIF export price of the subject goods from the subject countries. In view of the same, the Authority notes that escalation in the cost of inputs has been absorbed by the exporters.

Price undercutting and underselling effects

- 132 Price undercutting has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from the subject countries over the entire period of investigation with the weighted average net sales realization of the domestic industry. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the IBIS data of import prices from the subject countries.
- 133 In order to determine the net sales realization of the domestic industry, discounts, commissions, etc. offered by the domestic industry and the central excise duty paid, if any, have been deducted from the total sales realization.
- 134 For the purpose of price underselling determination the weighted average landed price of imports from the subject countries has been compared with the Non-injurious selling price of the domestic industry determined for the POI.

Price Undercutting

- 135 The comparative analysis of the Net Sales Realization of the domestic industry with the landed value of imports indicates that the imports are undercutting the domestic industry's prices to the extent mentioned below:

Price undercutting	UOM	2009-10	April'10-June'11 (POI)
--------------------	-----	---------	------------------------

NSR of Domestic Industry	Rs/CBM	***	***
Indonesia			
Landed Price	Rs/CBM	12370	12657
Undercutting	Rs/CBM	***	***
Undercutting	%	***	***
Undercutting	% Range	30-40	20-30
Malaysia			
Landed Price	Rs/CBM	11948	13142
Undercutting	Rs/CBM	***	***
Undercutting	%	***	***
Undercutting	% Range	30-40	20-30
Sri Lanka			
Landed Price	Rs/CBM	11929	12616
Undercutting	Rs/CBM	***	***
Undercutting	%	***	***
Undercutting	% Range	35-45	20-30
China PR			
Landed Price	Rs/CBM	12569	12474
Undercutting	Rs/CBM	***	***
Undercutting	%	***	***
Undercutting	% Range	30-40	25-35
Total Subject Countries			
Landed Price	Rs/CBM	12024	12807
Undercutting	Rs/CBM	***	***

Undercutting	%	***	***
Undercutting	% Range	30-40	20-30

Note: Landed Price calculation for 2009-10 full year imports and NSR for DI only two months Feb '10 to March'10.

- 136 The Authority notes from the above that the landed prices from all the subject countries were undercutting the sales price of the domestic industry. The Authority further notes that while there was a marginal increase in the landed value of imports during the POI over the year 2009-10, the quantum of undercutting declined on account of significant decline in the NSR of the domestic industry. The Authority, therefore, notes that the domestic industry was forced to reduce its selling prices in line with the landed value of imports, although it continued to incur losses, as elaborated subsequently in these findings.

Quarterly Analysis

Price undercutting	UOM	Feb'10-March'10	April'10-June'10	July'10-Sep'10	Oct'10-Dec'10	Jan'11-March'11	April'11-June'11
NSR of Domestic Industry	Rs/CBM	***	***	***	***	***	***
Indonesia							
Landed Price	Rs/CBM	12681	13062	11898	11963	12387	13335
Undercutting	Rs/CBM	***	***	***	***	***	***
Undercutting	%	***	***	***	***	***	***
Undercutting	% Range	30-40	20-30	25-35	25-35	25-35	20-30
Malaysia							
Landed Price	Rs/CBM	11572	12341	13135	12942	13225	13945
Undercutting	Rs/CBM	***	***	***	***	***	***
Undercutting	%	***	***	***	***	***	***
Undercutting	% Range	35-45	25-35	20-30	20-30	20-30	15-25

Sri Lanka							
Landed Price	Rs/CBM	13171	12626	12449	12464	12604	12807
Undercutting	Rs/CBM	***	***	***	***	***	***
Undercutting	%	***	***	***	***	***	***
Undercutting	% Range	25-35	25-35	20-30	20-30	20-30	25-35
China PR							
Landed Price	Rs/CBM	13954	15298	17953	12317	12207	1180
Undercutting	Rs/CBM	***	***	***	***	***	***
Undercutting	%	***	***	***	***	***	***
Undercutting	% Range	20-30	10-20	Negative	25-35	25-35	30-40
Total Subject Countries							
Landed Price	Rs/CBM	12511	12740	12822	12562	12783	13056
Undercutting	Rs/CBM	***	***	***	***	***	***
Undercutting	%	***	***	***	***	***	***
Undercutting	% Range	30-40	20-30	20-30	20-30	20-30	20-30

Note: Landed Price calculation only considered Feb '10 & March'10 (2 Months)

Price Underselling

- 137 Comparison of non injurious price with the selling price of the domestic industry shows that the domestic industry was forced to undersell the product:

In Rs/CBM

	UOM	April'10-June'11 (POI)
Non injurious price	Rs/CBM	***
Landed value (subject countries)	Rs/CBM	12807
Price underselling	Rs/CBM	***

Underselling	%	***
Underselling	% Range	50-60

- 138 The Authority notes that the Net Sales Realization of the domestic industry during the POI was below the non-injurious price of the domestic industry. Therefore, the domestic industry was not able to recover reasonable profit on its sales of the subject goods.

Injury margin

- 139 Comparison of non injurious price with landed price of imports shows significant injury margin.

Injury Margin	UOM	NIP	Landed Price	Injury Margin	Injury Margin %	Injury Margin % Range
Indonesia	Rs/CBM	***	12657	***	***	55-65
Malaysia	Rs/CBM	***	13142	***	***	65-75
Sri Lanka	Rs/CBM	***	12616	***	***	55-65
China	Rs/CBM	***	12474	***	***	75-85
Total Subject Countries	Rs/CBM	***	12807	***	***	55-65

- 140 As a result of significant injury margins from all the subject countries during the POI, the domestic industry has suffered financial losses and has not able to achieve the projected level of profitability as per the project report.

Profits/Loss

- 141 Profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market were as follows:

	UOM	2009-10	April'10-June'11 (POI)
Cost of sales	Rs/CBM	***	***

Indexed	Trend	100	34
Selling Price	Rs/CBM	***	***
Indexed	Trend	100	90
Profit/ (Loss) per unit	Rs/CBM	***	***
Indexed	Trend	(100)	(8)
Profit/ (Loss)	Rs Lacs	***	***
Indexed	Trend	(100)	(519)

- 142 The Authority notes from the above that in the year 2009-10 since the domestic industry operated for only 2 months, due to start-up operations and low level of capacity utilization, its actual cost, profits / losses per unit and the profit / losses in absolute terms were very high. In view of the period 2009-10 being only a start-up period, no trend analysis / conclusions could be drawn by the Authority. However, subsequently in the period of investigation, the domestic industry has operated for the complete financial year. During this period also the financial performance of the domestic industry was noted to be negative. The Authority notes that the sales realization of the domestic industry declined during the period and the domestic industry suffered financial losses.

Analysis of operating parameters vis-à-vis projected estimates

- 143 The Authority notes that the unit commenced commercial production only in February 2010. In the absence of any trends on the past performance of the domestic industry and considering that the domestic industry has claimed material retardation on account of dumped imports, the Authority has undertaken a comparative analysis of the actual vis-à-vis projected performance. The comparative analysis in this regards is summarized below:

	UOM	Project Report 1st year	Actual	
			April'10- June'11 (POI)	Annualised (POI)
Capacity Utilisation	%	***%	***%	***%
Production	CBM	***	22,980	18,384

Cost of sales	Rs/CBM	***	***	***
Selling Price	Rs/CBM	***	***	***
Profit/ (Loss) per unit	Rs/CBM	***	***	***
Profit/ (Loss)	Rs Lacs	***	***	***

- 144 The Authority notes from the above that the domestic industry's performance during the first year of its commercial operations was significantly below the projected level of operations / profitability as per its project report. Both the production as well as the capacity utilization of the domestic industry was lower than that projected for the first year in the project report. The Authority further notes that there was substantial difference in the cost of production of the domestic industry as per actual *vis-à-vis* projections. The differences in the cost of production have been noted by the Authority to be on account of the changes in the prices of raw materials as well as on account of low level of capacity utilization. This trend is also reflected in the significantly higher selling price realized by the domestic industry than projected. The fact remains that the domestic industry suffered financial losses during POI whereas as per projections it was likely to make profits from the first year of operations.

Return on investment

- 145 Return on investment earned by the domestic industry from the sale of the subject goods in the domestic market were as follows:

	UOM	2009-10	April'10- June'11 (POI)	Annualized (POI)	As per Project Report
Profit before interest	Rs Lacs	***	***	***	***
Profit before interest (Indexed)	Rs Lacs	-100	-235	-235	***
Capital employed	Rs Lacs	***	***	***	***
Capital employed (Indexed)	Rs Lacs	100	90	90	***
Return on capital employed	%	***	***	***	***

	UOM	2009-10	April'10-June'11 (POI)	Annualized (POI)	As per Project Report
Profit before interest	Rs Lacs	***	***	***	***
Profit before interest (Indexed)	Rs Lacs	-100	-235	-235	***
Capital employed	Rs Lacs	***	***	***	***
Capital employed (Indexed)	Rs Lacs	100	90	90	***
Return on capital employed	%	***	***	***	***
Return on capital employed (Indexed)	%	-100	-44	-44	***

- 146 The Authority notes from the above that the capital employed by the domestic industry during the POI on an annualized basis was lower than the projections of the capital employed as per project report. Therefore, no cost overruns have been noted by the Authority in the commissioning of the plant for manufacture of subject goods. The Authority, however, notes that the domestic industry was not able to achieve the projected level of returns on capital employed as it suffered financial losses during the POI on account of dumped imports of the subject goods.

Cash flow

- 147 Impact of dumping on the cash flow of the domestic industry was determined by considering cash profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market were as follows:

Actual	UOM	2009-10	April'10-June'11 (POI)	Annualized (POI)	As per Project Report
Profit/ (Loss)	Rs.Lacs	-100	-416	-416	***
Depreciation	Rs.Lacs	100	203	203	***

Cash Profit	Rs.Lacs	100	-259	-259	***
-------------	---------	-----	------	------	-----

- 148 The Authority notes that due to price undercutting and price underselling on account of dumped imports, the company has suffered cash losses during the POI as against projections of making cash profit as per the project report.

Employment and wages

- 149 The trends in the employment and wages in the domestic industry are tabulated below:

	UOM	2009-10	April'10-June'11 (POI)
Employment	Nos.	90	113
Wages	Rs.Lacs	100	1399

Inventories

- 150 The trends in inventory holding of the domestic industry has been summarized below:

	UOM	2009-10	April'10-June'11 (POI)
Stocks	CBM	***	***
Stocks Indexed		100	119
Production	CBM	2,262	22,980
Average stock for POI	CBM	-	1318
Average stock equivalent no. of months production			0.86

- 151 The Authority notes from the above that during the POI, which was the first year of full operations of the domestic industry, the domestic industry was maintaining on an average stocks equivalent to 0.86 months production. Since, the domestic industry has claimed that it has not been able to sell the subject goods to the extent it was able to produce, the Authority has undertaken a month-wise analysis of the trends in the production, sales and stocks of the

inventories of the domestic industry during the POI. The analysis of the same is given in the table below:

Monthly	Opening Stock	Net Production excluding Captive	Capacity Utilisation %	Sales	Closing Stock	Closing stock as no of Days sales
Apr-10	***	***	***	***	***	***
May-10	***	***	***	***	***	***
Jun-10	***	***	***	***	***	***
Jul-10	***	***	***	***	***	***
Aug-10	***	***	***	***	***	***
Sep-10	***	***	***	***	***	***
Oct-10	***	***	***	***	***	***
Nov-10	***	***	***	***	***	***
Dec-10	***	***	***	***	***	***
Jan-11	***	***	***	***	***	***
Feb-11	***	***	***	***	***	***
Mar-11	***	***	***	***	***	***
Apr-11	***	***	***	***	***	***
May-11	***	***	***	***	***	***
Jun-11	***	***	***	***	***	***

- 152 The Authority notes from the above that in the first quarter of the POI the domestic industry gradually increased its capacity utilization. However, during the same period there was a significant buildup of the inventories. As a consequence, in the subsequent quarter the production and the capacity utilization of the domestic industry were noted to be significantly lower. During the third and fourth quarter, generally the production, sales and the closing stocks noted uniform trends. In the last quarter of the POI, when the domestic industry

increased its level of operations, once again significant levels of inventories were noted. The Authority, therefore, notes that due to significant buildup of inventories, the domestic industry was not able to operate at the optimum level of capacity utilization as projected in the project report.

Productivity

- 153 The productivity of the domestic industry has been examined with reference to production per day and per employee as follows:

	UOM	2009-10	April'10-June'11 (POI)
Productivity per day	CBM/day	37.70	67.81
Productivity per Employee	CBM/Nos	150.13	211.17

- 154 It is noted that productivity has improved over the period.

Growth

- 155 It may be noted that domestic industry commenced commercial production at a new production facility. Therefore, growth of the domestic industry should have been quite high. However, the domestic industry is faced with poor growth.

Ability to raise fresh Investment

- 156 It may be noted that the domestic industry has set up a new plant and the investments made by the domestic industry. However, should the performance of the domestic industry remain so dismal, fresh investments are likely to suffer.

Factors affecting prices

- 157 Consideration of factors such as the import prices from the subject countries and other countries, cost structures for the product, competition in the domestic market, factors other than the dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market shows that the landed value of imported material from subject countries are significantly below the selling price of the domestic industry, causing severe price undercutting in the Indian market. It is further noted that the benchmark for the Indian producers prices are the import prices from subject countries. There is no viable substitute for this product. Demand for the product was showing significant jump and could not have been a factor responsible for low prices. It is thus evident that the only factors responsible for the domestic industry prices are the subject import prices of the product and the cost of

production of the domestic industry. As the information and data shows, while the cost of production was higher, the import prices have been much lower than the domestic prices and have prevented the domestic industry from charging prices in line with the costs.

Conclusion on injury

- 158 Considering the various injury parameters, it may be concluded that the performance of the domestic industry has remained substantially below the expected level considering the commencement of the new plant. The imports from the subject country have substantially increased, whereas the imports should have declined, given that the domestic industry has set up new production facilities and supporting company has also commenced the production of the product under consideration. Level of price undercutting is very significant. Despite offering low prices, the domestic industry had to immediately reduce its prices in view of its inability to sell the product. The domestic industry is facing price depression effects due the significantly low priced dumped imports. The domestic industry has been forced to sell the product at significant financial losses, resulting in negative return on investments and cash flow. The performance of the domestic industry was much below the projected levels, despite sufficient demand for the product in the Country. Even after adjusting the cost of production of the domestic industry for the start up operations, the domestic industry was unable to recover its cost of production and earn reasonable profits.
- 159 It may, thus, be noted that the domestic industry has thus suffered injury. Imports are retarding establishment of the domestic industry in the market. Further, performance of the domestic industry much below the expected levels and shows that the domestic industry suffered material injury.

I. Causal Link

Submissions made by the Domestic Industry

- 160 The Domestic Industry has submitted that injury to the domestic industry is on account of dumped imports as significant price difference exists between imported and domestic product, which has prevented the domestic industry from selling its product to the extent of its production capacities. This led to reduction in price and low level of sales volumes, reduction in net sales realization. There is significant difference between non injurious price and landed price of imports on one hand and inability of the domestic industry to increase its production to the extent of target levels on the other hand. The domestic industry has suffered from significant loss of production man hours, increase in inventories with rising production, decline in production due to rising inventories, which collectively and cumulatively established that the domestic industry is suffering injury as a result of dumped imports.

Submissions made by other interested parties

Submissions made on behalf of M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd and M/s Merbok MDF Lanka (Private) Ltd, Sri Lanka

2679 4712-21

- 161 The petitioner has commenced their production recently. Therefore, it is quite known that the petitioner would suffer injury on account of various factors such as (i) Start up cost; (ii) Un-established sales and distribution channels; (iii) increased marketing expenses coupled with higher discounts. Further, we have already quantified as above the main reasons for higher cost of production of applicant industry caused by inherent inefficiencies. Therefore, the Authority is requested to kindly take into account the above facts which would clearly demonstrate that no injury has been caused to the domestic industry on account of the alleged dumped imports and if there is any injury to the domestic industry during POI which was on account of their inefficiencies. Further, while landed prices have gone up during POI, the selling prices of domestic industry have declined clearly showing inverse relationship not to speak of causal link.

Submissions made on behalf of Evergreen Fibreboard Berhad (EFB), Malaysia; Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Bhd. (EJB), Malaysia and Evergreen Fibreboard (Nilai) Sdn. Bhd. (EFN), Malaysia

- 162 There is no injury to the petitioner in terms of its capacity, production, capacity utilization, sales, market share, wages, number of employees, productivity, inventories etc. The injury with respect to profitability, return on investment, cash flow and price suppression, if any is not because of the alleged dumped imports from subject countries but because of its high cost due to high per unit cost on account of start-up cost, high raw material cost, high utility cost, high fixed cost, high labour cost, high interest cost and high depreciation cost. While making a causal link analysis in the petition, the petitioner has not made any analysis with respect to sales of the other Indian producer nor provided any details in the petition. It is submitted that injury, if any has been suffered by the petitioner on account of inter-se competition between the two domestic producers. Thus there is no causal link between the injury, if any to the domestic industry and alleged dumped imports.

Examination by the Authority

- 163 As per the AD Rules, the Authority, *inter alia*, is required to examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, so that the injury caused by these other factors may not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, *inter alia*, the volume and prices of imports not sold at dumped prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry. It was examined whether these other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It was found that:-

- a. **Volume and Price of imports from third countries:** The Authority notes that imports from third countries are either negligible or their volume is *de-minimis* during the POI. Thus, imports from third countries could not have caused injury to the domestic industry.

- b. **Contraction in Demand and Changes in pattern of consumption:** It is noted that the demand of the subject goods has increased over the injury period. There is also no indication of any change in the consumption pattern.
- c. **Trade Restrictive Practices of and Competition between the Foreign and Domestic producers:** The import of the subject goods is not restricted in any manner and the same are freely importable in the country. The domestic industry competes with the landed prices of the subject goods. The price of the domestic industry is influenced significantly by the landed price of the subject goods. Moreover, no evidence has been submitted by any interested party to suggest that the conditions of competition between the foreign and the domestic producers do not exist or have undergone any change.
- d. **Development of Technology:** None of the interested party has raised any issue with regard to developments in technology as being the cause of injury to the domestic industry. No information, in respect of any significant development in technology is on record that could be the principal cause of injury to the domestic industry.
- e. **Export Performance:** The Authority notes that the Applicant domestic industry has not exported the subject goods.

164 The Authority notes that while listed known other factors do not show injury to the domestic industry, the following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports.

- a) Imports of the product under consideration have increased significantly and the market share of the subject countries increased.
- b) Apparently, the domestic industry has lost its sales volumes due to the presence of the dumped subject goods in India.
- c) The imports, from the subject countries as a whole, are significantly undercutting the prices of the domestic industry.
- d) The imports are significantly underselling the domestic prices.
- e) The deterioration in the domestic industry's profits and return on capital employed are apparently as a result of the dumped imports.
- f) The domestic industry's performance has become negative in respect of a number of parameters as the Domestic industry has not been able to attain the projected levels of Physical and Financial performance on a number of parameters.

Magnitude of injury and injury margin

- 165** The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry on the basis of principles laid down in the AD Rules, as amended.

Co-operating Exporter

Name of the company	NIP	Landed Price	Injury Margin	In US\$/cbm
				Injury Margin range in %
Pt Sumatera Prima Fibreboard	***	***	***	60-70
PT. Masari Dwisepakat Fiber	***	***	***	55-65
M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd.	***	***	***	50-60
M/s Evergreen Fibreboard Berhad (EFB)/ M/s Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Berhad (EJB)	***	***	***	40-50
M/s Merbok MDF Lanka (Private) Limited	***	***	***	60-70

Non-Co-operating Exporter

Particulars	Unit	China PR	Indonesia	Malaysia	Sri Lanka
NIP	US\$/cbm	***	***	***	***
Landed Price	US\$/cbm	***	***	***	***

Injury Margin	US\$/cbm	***	***	***	***
Injury Margin(%) range	%	***	***	***	***

J. Conclusions: -

166 After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority provisionally concludes that:

- a. The product under consideration has been exported to India from the subject countries below the associated normal values, thus resulting in dumping of the subject goods from the subject countries.
- b. The domestic industry has suffered 'injury', viz. material retardation of the establishment of its industry and also material injury in respect of the subject goods.
- c. The 'injury' to the domestic industry has been caused by the dumped imports of the subject goods from the subject countries.

K. Indian industry's interest & other issues

167 The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate 'injury' caused to the domestic industry by the unfair trade practices of 'dumping' so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the subject goods to the consumers.

168 It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury caused to the domestic industry. On the contrary, imposition of the anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by the dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

L. Recommendations

169 The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having

initiated and conducted a preliminary investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having provisionally established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of provisional duty is required to offset dumping and 'injury' pending completion of the investigation. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends imposition of provisional anti-dumping duty on imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries in the form and manner described hereunder.

- 170 Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the provisional anti-dumping duty equal to the amount indicated in Col 8 of the table below is recommended to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject countries.

Duty table

Sl. No	Heading/ Sub-heading*	Description of goods	Country of Origin	Country of Exports	Producer	Exporter	Duty Amount in US \$ /cbm
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1.	4411*	'Resin or other organic substances bonded wood or ligneous fibre boards of thickness below 6mm, except insulation boards, laminated fibre boards and boards which are not bonded either by resin or	China PR	China PR	Any	Any	165.71

		other organic substances'					
2.	4411*	do	Any country other than the subject countries	China PR	Any	Any	165.71
3.	4411*	do	China PR	Any country other than the subject countries	Any	Any	165.71
4.	4411*	do	Indonesia	Indonesia	Pt Sumatera Prima Fibreboard	Pt Sumatera Prima Fibreboard	88.60
5.	4411*	do	Indonesia	Indonesia	PT. Masari Dwisepakat Fiber	PT. Masari Dwisepakat Fiber	85.99
6.	4411*	do	Indonesia	Indonesia	Any other than combination at Sr. Nos. 4& 5		168.97
7.	4411*	do	Any country other than the subject countries	Indonesia	Any	Any	168.97
8.	4411*	do	Indonesia	Any country other than the subject countries	Any	Any	168.97

9.	4411*	do	Malaysia	Malaysia	M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd.	M/s Segamat Panel Boards Sdn. Bhd.	26.11
10	4411*	do	Malaysia	Malaysia	M/s Evergreen Fibreboard Berhad (EFB) / M/s Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Berhad (EJB)	M/s Evergreen Fibreboard Berhad (EFB) / M/s Evergreen Fibreboard (JB) Sdn. Berhad (EJB)	83.69
11	4411*	do	Malaysia	Malaysia	Any other than combination at Sr. Nos. 9& 10		178.30
12	4411*	do	Any country other than the subject countries	Malaysia	Any	Any	178.30
13	4411*	do	Malaysia	Any country other than the subject countries	Any	Any	178.30
14	4411*	do	Sri Lanka	Sri Lanka	M/s Merbok MDF Lanka (Priyate) Limited	M/s Merbok MDF Lanka (Private) Limited	66.27
15	4411*	do	Sri Lanka	Sri Lanka	Any other than combination at Sr. No. 14		167.46
16	4411*	do	Sri Lanka	Any country other than the subject countries	Any	Any	167.46
17	4411*	do	Any country	Sri Lanka	Any	Any	167.46

			other than the subject countries			
--	--	--	---	--	--	--

Please Note: The product under consideration is classified under Chapter 44 of the Customs Tariff Act. However, the product under consideration does not have a dedicated customs classification code. Thus, Customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of this investigation.

M. Further Procedure

171 The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:

- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- (b) Exporters, importers, the applicant and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the dispatch of the these Preliminary findings. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
- (c) The Authority would hold a hearing to hear the views of various interested parties orally;
- (d) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
- (e) The Authority would disclose essential facts as per the AD Rules before announcing final findings.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority